विकासात्मक जनसंचार 1

पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम
(Master of Journalism & Mass Communication)

विकासात्मक जनसंचार

1

विकासात्मक जनसंचार : अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व
तीसरी दुनिया में विकासात्मक जनसंचार

पत्रकारिकता एवं जनसंचार
स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विकासात्मक जनसंचार

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय

एम. जे. एम. सी. -7

विकासात्मक जनसंचार

पाठ्यक्रम - सप्तम

खण्ड- 1

1

इकाई 1 विकासात्मक जनसंचार : अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व	7–23
इकाई 2 तीसरी दुनिया में विकासात्मक जनसंचार	24–36
इकाई 3 तीसरी दुनिया में विकास की प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन	37–52
इकाई 4 तीसरी दुनिया में विकासात्मक संचार : प्रकरण अध्ययन	53–67

पाठ लेखक

डॉ. रमेश जैन
अध्यक्ष जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय

राम कुमार
वरिष्ठ जनसंचारकर्मी
कोटा

डॉ. महेंद्र मधुप
संयुक्त निदेशक प्रशिक्षण एवं प्रचार
राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड, जयपुर

डॉ. विष्णु पंकज
वरिष्ठ जनसंचारकर्मी
जयपुर

डॉ. अनाम जेटली
अध्यक्ष राजनीति शास्त्र विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

गुलाब बत्रा
वरिष्ठ संवाददाता
यूनिवार्ता, समाचार समिति, जयपुर

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

* **प्रो. जी.एस.एल. देवड़ा**
  कुलपति
  कोटा खुला विश्वविद्यालय कोटा
  (अध्यक्ष समिति)

* **डॉ. अब्दुल वहीद खान**
  निदेशक (विकास एवं प्रशिक्षण)
  कॉमनवेल्थ सेण्टर ऑफ लर्निंग
  वैंकूवर (कनाडा)

* **राधेश्याम शर्मा**
  पूर्व-महानिदेशक
  माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता
  विश्वविद्यालय, भोपाल(म. प्र.)

* **डॉ. ओ.पी. केजरीवाल**
  निदेशक, नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी
  तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली

* **प्रो. ए.के. बनर्जी**
  पूर्व-अध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग
  बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
  वाराणसी

* **प्रो. जे.एस. यादव**
  भारतीय जनसंचार संस्थान
  नई दिल्ली

* **डॉ. भंवर सुराणा**
  ब्यूरो चीफ/ विशेष संवाददाता
  दैनिक हिंदुस्तान
  जयपुर

* **डॉ. रमेश जैन**
  अध्यक्ष-जनसंचार विभाग
  कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा
  (सचिव, समिति)

संयोजक

डॉ. रमेश जैन- अध्यक्ष, जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ-संपादक एवं भाषा-संपादक

पाठ-संपादक
डॉ. रमेश जैन
अध्यक्ष, जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

भाषा-संपादक
डॉ. विष्णु पंकज
वरिष्ठ साहित्यकार-पत्रकार
जयपुर

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

* डॉ. आर.वी. व्यास, कुलपति
* डॉ. एच.बी. नन्दवाना, विभागाध्यक्ष
* डॉ. पी.के. शर्मा, निदेशक, पा.सा.उ. एवं वि. विभाग

पाठ्यसामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग

* योगेन्द्र गोयल
  सहायक उत्पादन अधिकारी

सर्वाधिकार सुरक्षित ! इस पाठ्यक्रम का कोई भी अंश कोटा खुला विश्वविद्यालय/ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति प्राप्त किए बिना या मिम्योग्राफी(चक्रमुद) अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करना वर्जित है।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कुलसचिव, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, रावतभाता रोड, कोटा से प्राप्त की जा सकती हैं।

इकाई 1 विकासात्मक जनसंचार : अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व (Development Communication: meaning, Scope and Significance)

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 संचार, जनसंचार : परिभाषा एवं क्षेत्र

- 1.2.1 जनसंचार
- 1.2.2 जनसंचार की विशेषताएं
- 1.2.3 जनसंचार का क्षेत्र

1.3 संचार के प्रकार

- 1.3.1 व्यक्ति का स्वयं के साथ संचार
- 1.3.2 व्यक्ति का व्यक्ति के साथ संचार
- 1.3.3 समूह संचार
- 1.3.4 संगठनात्मक संचार
- 1.3.5 जनसंचार
- 1.3.6 अन्त: सांस्कृतिक संचार
- 1.3.7 एक तरफा संचार
- 1.3.8 दो तरफा संचार
- 1.3.9 विकासात्मक संचार

1.4 विकास की अवधारणा

1.5 विकासात्मक जनसंचार

- 1.5.1 विकासात्मक जनसंचार का अर्थ
- 1.5.2 विकासात्मक जनसंचार का क्षेत्र एवं महत्व
- 1.5.3 विकासात्मक जनसंचार की भूमिका
- 1.5.4 संचार और विकासात्मक संचार में अंतर

1.6 विकास के लिए संचार जरूरी

1.7 सारांश

1.8 निबंधात्मक प्रश्न

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.0 उद्देश्य

विकासात्मक जनसंचार (Development Communication)का प्रमुख उद्देश्य विकास की अवधारणा के मूल में समाज का कल्याण करने के लिए उसकी मौलिक जरूरतों की पूर्ति के प्रयत्न करने के साथ-साथ उसकी स्थितियों एवं दशा में परिवर्तन एवं सुधार लाना है।

- प्रस्तुत इकाई विकासात्मक जनसंचार : अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व की है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप बता सकेंगे कि संचार का अर्थ एवं उसकी अवधारणा क्या है तथा इसका क्षेत्र कितना अधिक व्यापक है।
- आप यह भी विश्लेषण कर सकेंगे कि संचार और जनसंचार में मूलभूत अन्तर क्या है?
- जनसंचार के विविध सिद्धान्तों की भी आप विवेचना करने में सक्षम होंगे।
- संचार के विविध प्रकारों एवं विकास को गति देने के संचार की भूमिका को भा आप अच्छी तरह प्रतिपादित कर सकेंगे।
- संचार की भारतीय अवधारणा से भी आप परिचित हो सकेंगे।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के साथ संचार के रिश्ते को भी आप परिभाषित कर सकेंगे।
- संचार प्रौद्योगिकी के कारण आए परिवर्तनों का सामाजिक बदलाव एवं विघटन के बारे में भी आप जान सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

संचार की विकास में अहम भूमिका रही है तथा 1950 एवं 1960 के दशक में विकास के लिए संचार की अवधारणा के कई परिवर्तन आए है। लेकिन विकास को निरन्तर गति प्रदान करने के लिए संचार का महत्व कभी कम करके नहीं आका गया। इसलिए विकास, संचार, जनसंचार, विकासात्मक संचार एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में संचार आदि विविध पक्षों के मौलिक अर्थो को स्पष्ट करना आवश्यक है।

विकास के संदर्भ में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अवलोकन करने से पूर्व प्रस्तुत इकाई में संचार के मौलिक स्वरूप, प्रकार तथा विकास के बारे में प्रकाश डाला गया है ताकि सामाजिक परिवर्तन की दिशा में संचार की भूमिका का विश्लेषण किया जा सके। संचार और जनसंचार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास में संचार एवं जनसंचार की अवधारणाओं में आए परिवर्तनों को परखा जा सके। साथ ही विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आए क्रान्तिकारी बदलावों को समाज परिवर्तन एवं बेहतर समाज के निर्माण के सन्दर्भ में उपयोग के लिए संचार के महत्व को समझा जा सके। इन्हीं प्रश्नों को लेकर इस इकाई की संरचना की गई है, जो इस इकाई के बाद इकाईयों (2 से 4 तक)में तीसरी दुनिया या विकासशील देशों में संचार प्रक्रिया के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों को समझने में सहायक होगी।

1.2 संचार, जनसंचार : परिभाषा एवं क्षेत्र

संसार के प्रारम्भ में भौतिक या शारीरिक या पशु शक्ति का वर्चस्व था। इसके बाद औद्योगिक युग में धन और सम्पत्ति ही शक्ति बन गए। लेकिन आज की दुनिया में वही शक्तिशाली है जिसके पास ज्ञान और ज्ञान का प्रसार एवं संचार करने की शक्ति अधिक है। इस प्रकार हम आज संचार (Communication)युग में जी रहे हैं जहां संचार की शक्ति है। संचार

वैज्ञानिक एवरेट एम. रोजर्स कहते हैं - जहां परिवर्तन होते हैं। वहां संचार का प्रवाह होता है। देश के विकास को गति देने वाला प्रमुख औजार संचार है। जहां संचार व्यवस्था कमजोर है, वहां द्वन्द्व है, संयोजन का अभाव और पिछड़ापन है। जहां संचार है, वहां तालमेल है, आपसी सुदृढ़, समझ है और प्रगति है। संचार के बारे में कई प्रकार के विचार और आलोचनाओं का सिलसिला चला है लेकिन राष्ट्रीय विकास एवं सामाजिक बदलाव में विकास की भूमिका सदैव अहम रही है।

संचार (Communication)लेटिन भाषा के कम्यूनिस (Communis)से लिया गया है जिसका अर्थ है समाज (Common)। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने विचारों, सूचनाओं एवं भावों का आदान-प्रदान या अभिव्यक्ति इसलिए करता है कि वह दूसरों के साथ एक समान धरातल की खोज करना चाहता है। यह एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति या समूह के बीच समझ का धरातल तैयार करने की प्रक्रिया ही संचार है।

जो बात एक व्यक्ति या कुछ व्यक्ति मिलकर अन्य व्यक्ति या समूह के पास किसी माध्यम से पहुंचाना चाहता है उसे संदेश कहते हैं। यह सन्देश और इसे भेजने के माध्यम या चैनल के द्वारा लोग एक दूसरे को समझने की चेष्टा करते हैं, अपनी खुशियां एक दूसरे में बांटते है, दुख-सुख और समस्याओं का आदान-प्रदान करते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि संचार एक प्रकार की प्रक्रिया है। इसमें एक संदेश का होना जरूरी है जिसका स्पष्ट अर्थ हो तथा संचार की यह प्रक्रिया तब पूर्ण होती है जबकि लक्ष्य (Target)तक या गन्तव्य तक यह संदेश ज्यों का त्यों न पहुंचे तो यह प्रक्रिया अपूर्ण रहती है। संदेश का कोई अर्थ होना चाहिए। इस प्रकार कुछ लोग 'अर्थो के मिलन' को ही संचार कहते हैं।

संचार की एक शैली होती है और इसमें कुछ शब्दों का आमतौर पर प्रयोग किया जाता हैं। अत: संचार को समझने के लिए इसके मौलिक तत्वों को समझना आवश्यक है। संचार के मौलिक तीन तत्व माने गये हैं - स्रोत (Source), संदेश (Message)एवं गन्तव्य (Destination)अर्थात् संचार प्रक्रिया के लिए इन तीन बातों का होना अनिवार्य हैं।

यहां स्रोत से तात्पर्य किसी व्यक्ति या माध्यम से है जहां संदेश की उत्पत्ति होती है। कोई व्यक्ति बोलकर, लिखकर, चित्र बनाकर या संकेतों के द्वारा दूसरे व्यक्ति को इंगित कर अपना संदेश दे सकता है। समाचारपत्र, रेडियो, फिल्म, टेलीविजन आदि के द्वारा उत्पादित एवं तैयार संदेश भी ध्वनि, चित्र या संकेतों से भेजा जा सकता है। संदेश, कागज पर स्याही, ध्वनि, तरंगों, गतिशील चित्रों, विद्युत तरंगों या हाथ या ध्वज के द्वारा संकेतक के रूप में भी हो सकती है। लेकिन इस संदेश का कोई अर्थ होना चाहिए। संकेत या संदेश का जहां उद्गम हो, वह उसका स्रोत (Source)है तथा जिस माध्यम से भेजा जाए वह चैनल से प्राप्तकर्ता तक पहुंचे, उस प्राप्तकर्ता को गन्तव्य (Destination)कहा गया है। अर्थात् जो लोग संदेश को पढ़ते, सुनते या देखते है उन्हें ऑडियन्स, दर्शक, श्रोता या गन्तव्य कहा जाता है।

इस प्रकार संचार की प्रक्रिया या प्रवाह एक निरन्तर कार्य है। हर व्यक्ति एक दूसरे तक अपनी बात पहुंचाता है अर्थात् 'संचार' करता है। यह विचारों के आदान-प्रदान एवं दूसरे की समस्याओं को बांटने या उसका निदान करने या आपसे में एक सम्बन्ध या सम्पर्क कायम करने की कला है। संचार की प्रक्रिया यों तो एक सरल प्रक्रिया है परन्तु आधुनिक युग की जटिलताओं के बीच यह एक त्वरित रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर प्रवाहित ऐसी प्रक्रिया है कि

इसे स्पष्टत: समझने के लिए विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने तरीके से इसे परिभाषित किया है। कोई भी परिभाषा किसी विषय को पूर्ण रूप से अपने में समेटने या पूरी तरह स्पष्ट करने में सफल नहीं हो पाई लेकिन हर परिभाषा किसी मौलिक तत्व का संकेत देती है तथा उस विषय को, जिसे परिभाषित किया गया है, ठीक से समझने में मदद करती है।

ऐसे में, परिभाषाओं को समझना एवं उनका विश्लेषण करना जरूरी है। संचार के शाब्दिक अर्थ अर्थात् 'Communication' के अर्थ को ऑक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी में इस प्रकार स्पष्ट किया गया है - 'संचार - विचारों, ज्ञान आदि को एक जगह या एक व्यक्ति से दूसरे को देने या पहुंचाने या उनके आदान-प्रदान आदि को कहते है जो भाषण, लेखन या संकेतों के द्वारा सम्पन्न होता है'। *(Communication is imparting, conveying or exchange of ideas, knowledge etc whether by speech, writing or signs)।* इस प्रकार संचार विचारों एवं अनुभवों को स्थानान्तरित करने की प्रक्रिया है। मौलिक रूप में संचार दृश्य एवं ध्वनि से होता है या संकेतों से किया जाता है।

शेन्नन एवं वेवर (1949)(Sharma & Waver)ने संचार की परिभाषा इस प्रकार की है - 'संचार में वे सब प्रक्रियाएं साम्मेलित है जिनके द्वारा एक मस्तिष्क से दूसरे मस्तिष्क को प्रभावित करती है।' (Communication is the mechanism by which power is extended)। इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि संचार एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जो समाज को प्रमाणित करने, समाज में नियन्त्रण एवं दूसरों को उत्प्रेरित करने का काम करती हैं। बेरेलसल एवं स्टीनर (Berels,n & Steiner 1964)ने संचार को परिभाषित करते हुए कहा है कि 'सूचनाओं, विचारों, भावनाओं, कुशलताओं आदि का प्रतीकों, शब्दों, चित्रों, आकृतियों, ग्राफिक्स या रेखाचित्रों आदि के उपयोग के द्वारा प्रसारित करना ही संचार है'। यह परिभाषा काफी विस्तृत अर्थ में है कि इसमें संचार के सभी पक्ष सम्मिलित है। इसमें प्रसारित शब्द यह रेखांकित करता है कि विचारों और भावों का प्रसार या आदान-प्रदान करना मनुष्य की आदिम युगों से प्रवृत्ति है। इस प्रक्रिया के अभाव में जीवन दूभर हो जाता है। एक अन्य विद्वान कोलिन चेरी (Colin chery)ने 1964 में संचार की व्याख्या इस प्रकार की हैं - 'भाषा या संकेतों के द्वारा व्यक्तियों ने एक 'सामाजिक इकाई' की स्थापना करना ही संचार हैं'। अन्य विद्वानों हार्नेक एवं फेस्ट (Harnacla & Fest - 1964)का मत है कि "यह एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति और व्यक्ति या व्यक्ति तथा व्यक्तियों के बीच आपसी एकता के लिए अन्त: क्रिया सम्पन्न होती है। "एडविन न्यूवेन ने 1948 में संचार के बारे में अपने विचार प्रगट करते हुए कहा कि - 'संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्यों के झुंड या मह को एक कार्यशील समूह में बदल देती है।'

इस प्रकार इन समस्त परिभाषाओं से एक बात उभरकर सामने आती है कि संचार एक जोड़ने वाली शक्ति है जो सामाजिक अन्त: क्रियाओं एवं गति की ओर उन्मुख है। फोथेरिंघम (Fotheringham - 1966)का कथन है कि संचार का खास मकसद है 'संदेश - प्राप्तकर्ता को मदद करना आदि वह संचारकर्ता के मस्तिष्क में जो अर्थ है, उसे वह वैसा का वैसा ग्रहण कर सके।' (To help a receiver percesive meaning similar to that in the mind of the communicaters)। संचार वैज्ञानिक गोडे (Gode)ने 1959 में संचार के बारे में लिखा कि (A process that makes common to two or several what was the

monopoly of one or someone is)अर्थात् यह प्रक्रिया सूचना के एकाधिकार को खत्म करती है। साथ ही संचार लोगों के ज्ञान, अनुभव एवं विशेषज्ञता आदि तक पहुंच बनाती है जो कि परिवर्तन के लिए अहम बातें है और आधुनिकीकरण एवं विकास को गति देने की दिशा में अनिवार्य हैं।

इस प्रकार संचार एक निरन्तरता के साथ प्रवाहित होने वाली प्रक्रिया है। यह कभी परिवर्तित नहीं होती। केवल संचार के बारे में हमारी समझ बदलती है। यह एक हर समय की जरूरत है। लेकिन समस्या यह है कि लोगों की प्रवृत्ति उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, आदर्श एवं व्यक्तिगत पृष्ठभूमि के आधार पर उसे देखने की होती है। संचार, समाज के जीवन का रक्त प्रवाह है। यह समाज को एक साथ आगे बढ़ने एवं विकास करने में योग देती हैं।

1.2.1 जनसंचार

जनसंचार (Mass)शब्द के नकारात्मक एवं सकारात्मक दो अर्थ है। नकारात्मक सन्दर्भ में भीड़ (Mob)या बहुत से लोगों (Multitude)के रूप में इन शब्द का आम प्रयोग होता हैं। इसका यह तात्पर्य भी लगाया जाता है कि भीड़ सदैव अज्ञानी एवं अनुशासनहीन होती है। भीड़ की कोई संस्कृति नहीं होती। उसमें विवेक एवं तर्कशक्ति का अभाव होता है। जबकि सकारात्मक रूप में देखें तो जन का अर्थ ऐसे लोगों में है जो एक साथ जुटकर काम करते हैं या एक सामाजिक परम्परा से बंधे हुए हैं। शब्दकोष में इसका अर्थ है कि एक ऐसे लोगों का समूह या योग जहां व्यक्ति के बजाय समूह की साझीदारी अहम है। यहां 'जन' से यह अभिप्राय है कि यह समूह (Group), भीड़ (Croud)जनता (public)आदि से बड़ा और विस्तृत समुदाय है। जन में एक समाज या विभिन्न प्रकार के लोगों का बड़ा समूह हो सकता है।

जनसंचार का अर्थ है विभिन्न माध्यमों का उपयोग करते हुए सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन को लोगों तक प्रसारित कर पहुंचाना। यह मूलत: सूचनाओं, विचारों एवं मनोरंजन सामग्री को एकत्रित करके आधुनिक संचार माध्यमों जैसे रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, समाचारपत्रों, प्रकाशनों, विज्ञापन या नृत्य, नाटक कठपुतली आदि परम्परागत माध्यमों से प्रसारित करने की प्रक्रिया है। बी. कुप्पुस्वामी (1976)ने इनकी परिभाषा देते हुए कहा कि - 'औद्योगिक समाजों में जन संदेशों का प्रौद्योगिकी एवं संस्थागत आधारित बहु-उत्पादन एवं बहु-वितरण ही जनसंचार है।' (Mass Communication is the technologically and institutionally based mass production and mass distribution of public messaged in industrial societies)।

दरअसल, जनसंचार में वे सब संस्थाऐं माध्यम, संदेश, निर्दिष्ट समूह आदि शामिल हैं जो इन प्रक्रिया के अंग हैं। लोगों की प्रवृत्तियों, संस्थाओं एवं राष्ट्रों में परिवर्तन के लिए जनसंचार का उपयोग किया जाता है। प्रगति के लिए शान्ति, आपसी सहयोग एवं समझ पैदा करने जैसे उद्देश्य है जिनकी पूर्ति में जनसंचार का उपयोग होता है। अर्थात् उत्प्रेरक संदेशों को आधुनिक जनसंचार माध्यमों या परम्परागत माध्यमों आदि का निश्चित लक्ष्य को लेकर प्रसारण करने की प्रक्रिया ही जनसंचार है।

1.2.2 जनसंचार की विशेषताएं

जनसंचार किसी एक समूह या समाज तक सीमित नहीं है। जनसंचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे असंख्य लोग विचार विमर्श, अनुभवों को आपस में बांटने, प्रतिक्रिया करने एवं भागीदारी आदि के द्वारा शामिल होते हैं। नई सूचना-प्रौद्योगिकी में आई क्रान्ति ने संचार के क्षेत्र की अत्यधिक व्यापक बनाया है लेकिन विभिन्न माध्यमों के नगरीय जीवन की ओर केन्द्रित होने के कारण वे वास्तव में जन (Mass)संस्कृति को अभिव्यक्ति नहीं दे पाए। विशेषकर यह स्थिति भारत सहित विकासशील देशों की भी है। 20वीं सदी में जन माध्यमों में क्रान्तिकारी बदलाव आया। प्रौद्योगिक विकास से सिनेमा, रेडियो, केबल टी.वी., विडियो, सेटैलाईट, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, इन्टरनेट आदि को गति मिली। दुनिया में संचार क्रान्ति ने दुनिया छोटी कर दी और एक विश्व गांव (Global village)की अवधारणा का जन्म हुआ। जनसंचार का विस्तार हुआ और कई विशेषताएं सामने आई।

जनसंचार की प्रथम विशेषता यह है कि यह सूचना, ज्ञान, विचारों और संस्कृति के वितरण की प्रणाली है। दूसरी विशेषता यह है कि इसके द्वारा कुछ लोग अन्य लोगों से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। इसमें संदेश भेजने वाले एवं प्राप्त करने वालों के बीच एक पुल का निर्माण होता हैं। इसमें न केवल भौतिक माध्यम या चैनल्स शामिल हैं बल्कि ये रीति रिवाजों एवं समझ का विस्तार करता है। तीसरे, इसमें माध्यम एक संस्थागत भूमिका निभाते है और वे संदेशवाहक एवं संदेश प्राप्त करने की भूमिका का निर्वाह करते हैं। इस प्रकार जनमत को तैयार करते हैं।

संदेश का स्रोत वस्तुपरक होता है जो श्रोता या दर्शक की ओर सम्बोधित करता है। ये श्रोता या दर्शक अज्ञात होते हैं। संदेश, किसी व्यक्ति विशेष को संबोधित नहीं करता बल्कि संदेश जन-जन के लिए या जिससे संबंधित हो, उसे संबोधित करता है। यह सुनियोजित एवं सुसंगठित गतिविधि है। जनसंचार सेवाएं व्यवस्थित रूप से तैयार करते इंगित समूह (Target group)की जरूरतों के मुताबिक होती है। जनसंचार का संचालन एक संयुक्त रूप से नियोजित ढंग से किया जाता है।

उसके बाद इसका क्रियान्ययन एवं मूल्यांकन किया जाता है। श्रोता एवं दर्शक पर पड़े प्रभाव को जानने के लिए शोध किया जाता है। शोध के परिणामों को परखा जाता है। शोध से प्राप्त निष्कर्षो या 'फीडबेक' का विश्लेषण किया जाता है। यह इन विभिन्न माध्यमों, संगठनों के लिए उपयोगी होता है जो समाज के प्रति दायित्व निभाते हैं। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे संयुक्त रूप से जन या जनता की शैक्षणिक विकासात्मक एवं मनोरंजन संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करें।

1.2.3 जनसंचार का क्षेत्र

जनसंचार एक महत्वपूर्ण मानवीय क्रिया है। इसका समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। जन माध्यम संगठन, सीखने तथा सुधार के केन्द्र है। जनसंचार से सामाजिक परिवर्तन करने, आर्थिक विकास करने, राजनैतिक सुधार लाने एवं सांस्कृतिक क्रान्ति लाने में महत्वपूर्ण मदद मिलती है।

हम सूचना क्रान्ति या संचार क्रान्ति के युग में रहते हैं। व्यक्ति, संस्थाएं एवं सरकारें जनमत को अपनी ओर आकर्षित करने, उनका संबंध प्राप्त करने तथा उनसे प्रोत्साहन पाने के लिए जनसंचार का उपयोग करते हैं। जनसंचार संगठनों या माध्यमों में सामाजिक बदलाव लाने की क्षमता होती है। वे लोगों की प्रवृत्तियों एवं व्यवहार को बदलने की क्षमता लिए होते हैं। जनसंचार का क्षेत्र अति व्यापक है। सही शिक्षण एवं मार्गदर्शन देकर वे एक इतिहास रच सकते हैं। वे जनमत को जनहित एवं जनकल्याण के लिए मोड़ सकते हैं। जनसंचार शान्ति, सामंजस्य एवं विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। यह दरअसल, एक संगठनात्मक या सामाजिक कार्य है। मानव समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान करना है। अनुभवों और कुशलता को आपस में बांटना है। मनुष्य, अन्य मनुष्य के साथ सुचार प्रक्रिया में संलग्न हो, यह उसकी मौलिक प्रवृत्ति है। इसलिए मनुष्य के अस्तित्व एवं समाज के विकास के लिए संचार की अहम भूमिका है और इसका व्यापक विस्तार संपूर्ण क्षेत्र में हैं।

1.3 संचार के प्रकार

आधुनिक समाज की प्रमुख विशेषता, उसके पास संचार माध्यमों का होना है। कुछ दशकों पूर्व संचार के अधिकांश माध्यम मात्र सम्पन्न या विशिष्ट लोगों को ही उपलब्ध थे। लेकिन 21वीं सदी में पर दृष्टि डालें तो संचार के विभिन्न माध्यम, आसानी से आम आदमी की पहुंच में आ गए है। संचार माध्यमों की सामाजिक परिवर्तन को दिशा देने की क्षमता में भी व्यापक प्रसार हुआ है। सूचनाओं एवं विचारों के आदान-प्रदान का दायरा भी बहुत बढ़ गया है। संचार के प्रकार और कार्यो में भी अत्यधिक बदलाव आया है। मोटे तौर पर संचार के प्रकारों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है -

1. व्यक्ति का स्वयं के साथ संचार
2. व्यक्ति एवं व्यक्ति या छोटे समूह के साथ संचार
3. समूह संचार
4. संगठनात्मक संचार
5. जनसंचार
6. अन्त: सांस्कृतिक संचार
7. एक तरफा संचार
8. दो तरफा संचार
9. विकासात्मक संचार

1.3.1 व्यक्ति का स्वयं के साथ संचार

(Intra-personal communication)

जब एक व्यक्ति स्वयं अपने आप कोई सपना देखता है, आत्म चिन्तन करता है, ध्यान करता है, अपनी डायरी लिखता है या अपने आप विचार करता है, अपनी जरूरतों या समस्याओं के बारे में चिन्तन करता है जो ऐसे में जो संचार प्रक्रिया होती है, उसे स्वमेव संचार या व्यक्ति के अपने जीवन का संचार करते हैं। उसके स्वयं के बीच एक तर्क, वितर्क चलता है। व्यक्ति के अपने-अपने संवाद होता है। इस व्यक्ति का स्वयं के साथ संचार कहा जाता है।

1.3.2 व्यक्ति व्यक्ति के साथ संचार

(Inter personal communication)

कई बार दो व्यक्ति आपस में या एक छोटे समूह में लोग अपने विचारों, अनुभवों, सुख-दुख आदि को बांटने के लिए संचार प्रक्रिया में संलग्न होते हैं। इसमें तीन तरह की संचार प्रक्रिया शामिल है - 1. एक व्यक्ति का दूसरे के आमने-सामने संवाद, 2. एक व्यक्ति द्वारा छोटे समूह के संवाद, 3. एक छोटे समूह में विभिन्न लोगों द्वारा संवाद। यहां कोई विशेष व्यक्ति स्रोत नहीं होता और न ही कोई विशेष व्यक्ति श्रोता या दर्शक होता है। यह एक सामाजिक संचार है जो किसी भी परिवार, संगठन या समुदाय में होता है।

1.3.3 समूह संचार

(Group communication)

यह संचार प्रक्रिया व्यक्तियों के बीच (Interpersonal)संचार से मिलती-जुलती है। किसी भी समूह के सदस्य चाहे वह विद्यार्थियों का समूह हो या गोष्ठी में लोग हो, इसमें सभी की भागीदारी होती है। समूह संचार के स्त्रोत एवं प्राप्तकर्ता के बीच दूरी घट जाती है। प्राप्तकर्ता ही कभी स्त्रोत बन जाता है तो स्त्रोत ही कभी प्राप्तकर्ता बन जाता है। इसमें व्यक्ति की नेतृत्व क्षमता, अनुभव, विशेषज्ञता, व्यक्तित्व, गुण आदि की प्रभाव के स्वर पर विशेष उपयोगिता एवं अहम भूमिका होती है।

1.3.4 संगठनात्मक संचार

(Organization communication)

आधुनिक समाज में विभिन्न संगठन होते हैं। इन्हें समाज के वातावरण में सामंजस्य रखना पड़ता है। इसलिए संगठनात्मक संचार समाज और संगठन के बीच संचार के द्वारा दूरी कम करता है। वातावरण के परिवर्तन एवं विकास की अनदेखी करके कोई भी संगठन सुदृढ़ नहीं बन सकता है। हर संगठन को अपनी नीतियां एवं कार्यक्रम समाज के वातावरण के अनुरूप बनाने के लिए आज के जटिल सामाजिक वातावरण से तालमेल रखना पड़ता है। एक संगठन और उसके लोगों (Public)एवं समाज के लोगों (दूसरी Public)के बीच के सम्बन्धों के पुल का निर्माण संचार के द्वारा होता है।

1.3.5 जनसंचार

(Mass communication)

व्यापक स्तर पर सूचनाओं के एकाधिकरण एवं वितरण के द्वारा विभिन्न प्रकार के अधिक लोगों तक संदेश पहुंचाने की प्रक्रिया को जनसंचार की संज्ञा दी जाती है। इसमें संचार प्रक्रिया में संस्थाएं, माध्यम, संदेश, प्रौद्योगिकी, निर्दिष्ट समूह एवं संचार के प्रभाव आदि सम्मिलित है।

1.3.6 अन्त: सांस्कृतिक संचार

(Inter cultural communication)

संचार प्रौद्योगिकी में नई क्रान्ति ने संचार के दायरे को सम्पूर्ण विश्व में फैला दिया है। सम्पूर्ण विश्व, को एक सूत्र में बांधने एवं दूरियां घटाने में संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने आश्चर्यजनक कार्य किया है। अब संस्कृति द्वारा दूसरी संस्कृति के बीच कोई सीमा नहीं रह गई है। विभिन्न संस्कृतियों के आपसी संचार को अन्त: सांस्कृतिक संचार या विश्व संचार (Global communication)कहते हैं। इसमें एक संस्कृति स्त्रोत (Source)होता है और दूसरी प्राप्तकर्ता (Receiver)बन जाता है।

1.3.7 एक तरफा संचार

(Oneway communication or Downward communication)

संचार के स्त्रोत से श्रोता तक के प्रवाह को एक तरफा संचार कहते हैं। अधिनायकवादी शासन में जिस प्रकार आदेश या निर्देश, सरकार द्वारा जनता के लिए जारी किए जाते है ओर उनकी पालना जनता को करनी ही पड़ती है और स्त्रोत को इस बात की कभी परवाह नहीं होती कि श्रोता (Receiver)की जरूरतें क्या हैं, और उनका मत क्या है, विचार क्या है? इस प्रकार के संचार की विशेषता यह है कि इसमें सत्य का गला घोटने और सूचनाओं को थोपने का सदैव खतरा रहता है। सूचनाएं स्रोत के स्वार्थ पूर्ति का साधन बन जाती है। यह एक तरह का सरकारी प्रोपेगेन्डा कहलाता है। इसमें 'फीडबैक' के लिए कोई स्थान नहीं होता। क्योंकि ऐसे एक तरफा संचार में प्रभाव एवं 'फीडबैक' नहीं होता है, अत: इस प्रकार की संचार प्रक्रिया को अपूर्ण माना जाता है।

1.3.8 दो तरफा संचार

(Twoway communication or upward communication)

संचार का स्रोत से प्राप्तकर्ता तक एवं प्राप्तकर्ता से स्रोत की ओर से संचार के दो तरफा संचार कहा जाता हैं। इस प्रकार के संचार प्रवाह के विचारों एवं भावनाओं का स्रोत से प्राप्तकर्ता तक पहुंचाकर प्रभाव की सृष्टि करने का प्रयास किया जाता है और प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया या विचारों को 'फीडबैक' के द्वारा प्राप्त किया जाता है। यह एक प्रकार के स्रोत एवं प्राप्तकर्ता के बीच संदेशों का आदान-प्रदान ही प्राप्तकर्ता की जरूरतों एवं मांग का ध्यान रखा जाता है। संचार सेवाएं सदैव प्राप्तकर्ता की जरूरतों पर अपनी व्यूह रचना करती हैं।

1.3.9 विकासात्मक संचार

(Development communication)

संचार का विकास एवं विकास संचार या विकासात्मक संचार में भेद है। संचार के विकास से हमारा तात्पर्य संचार नेटवर्क, समाचारपत्रों, टेलीविजन, रेडियो एवं अन्य संचार माध्यमों के विकास से है जबकि विकासात्मक संचार का अर्थ है कि किसानों, महिलाओं, कामगारों एवं कमजोर

और पद्दलित लोगों का जीवन स्तर बेहतर बनाने के लिए विकास को विस्तार देने एवं सुदृढ़ बनाने के लिए संचार को उन्मुख करना या संचार का सहारा देना। संचार, विकास के लिए किए जाने वाले प्रयत्नों एवं साधनों में से एक प्रमुख अंग (Input)है। लोगों को विकास कार्यक्रमों के प्रति सचेत करना और उनकी भागीदारी को उत्पेरित करना, विकासात्मक संचार का लक्ष्य है। विकास प्रक्रिया तभी यथार्थ रूप लेती है जबकि उसमें लोगों की भागीदारी हो। दूसरे विश्व युद्ध के बाद विकासात्मक संचार, जनसंचार की एक प्रमुख शाखा के रूप में उभरी। सामाजिक राजनैतिक एवं आर्थिक खुशहाली के लिए संचार की महत्ता को समझकर अनेक संचार विशेषज्ञों एवं शोधकर्ताओं ने विकासात्मक संचार के बारे में अनेक शोध किए है। राष्ट्रीय जीवन को परिवर्तित कर बेहतर समाज देने की दिशा में जनसंचार ने विकास को गति देने तथा विकास के लिए अनुकूल वातावरण एवं स्थितियों के निर्माण में गहरी भूमिका निभाई है। विकास के प्रति लोगों का ध्यान खींचने, उनकी आकांक्षा बढ़ाने एवं प्रेरित करने में संचार एक उत्प्रेरक शक्ति साबित हुआ है।

21वीं सदी के प्रारम्भ में तो विकासात्मक संचार एक प्रबल शक्ति के रूप में माना जाता है। इसका उद्देश्य पिछड़ापन दूर करना, नए विचारों, नई प्रौद्योगिकी आदि को स्वीकार करने के लिए लोगों को तैयार करने की भाव भूमि बनाना एवं सब प्रकार के विकास कार्यक्रमों के क्रियान्यवन को सफल बनाने की दिशा में जनसंचार का महत्व सभी लोगों ने स्वीकार किया है।

विकास संचार का क्षेत्र अति व्यापक है। इसमें शैक्षणिक संचार जनसंख्या एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी संचार, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी संचार, कृषि संचार, पर्यावरण संचार, ग्रामीण संचार आदि शामिल है। विकास सम्बन्धी प्रतिवेदनों, स्पष्टीकरण में, विचार विमर्श, विश्लेषणों, मूल्यांकनों, आकड़ों आदि सभी पक्षों पर ध्यान देकर विकास कार्यो को ऊर्जा देने का प्रयास किया जाता है। विकासात्मक संचार के विशेषज्ञों का मत है कि भाग्य कभी ऊपर से नहीं टपकता है। व्यक्ति के प्रयत्न एवं परीक्षण से भाग्य का उदय होता है। जनसंचार के क्षेत्र में यह दृढ़ धारणा है कि व्यक्ति स्वयं अपनी स्थितियों में परिवर्तन ला सकता है। विकास के विभिन्न प्रकारों में ग्रामीण संचार पर भी बल दिया जाता है जहां विकास की सर्वाधिक जरूरत होती है एवं विकासात्मक संचार का भी अधिक महत्व है। विकासात्मक संचार, एक व्यापक अर्थ लिए हुए है जिसमें सभी प्रकार' के वर्गीकरण समाहित हैं।

1.4 विकास की अवधारणा

विकास की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए समय-समय पर इसके अर्थ, परिभाषा और मूल्यांकन में आए परिवर्तनों को समझना आवश्यक है। विकास को लेकर जो, परिभाषाएं और विश्लेषण किया गया है, वह अधिकांशत: अर्थशास्त्रियों द्वारा हुआ है। इसलिए इसको परिभाषित करने के लिए आर्थिक विकास संबंधी धारणाओं को पहले समझना होगा। विकास का अर्थ समझने के लिए विकास के बारे में अर्थशास्त्रीय अर्थ हमारे लिए प्रारम्भिक बिन्दु है।

आर्थिक विकास से तात्पर्य - 'किसी भी देश में लम्बे समय तक वास्तविक प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि तथा उसक ढांचे एवं संस्थाओं के बढ़ने की प्रक्रिया ही विकास है।' उदाहरण के लिए भारत सरकार चाहती है कि विदेशी व्यावसायिक संस्थान भारत में पूंजी नियोजन करें। यदि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विदेशी संस्थान भारत आते है और पूंजी नियोजन करते हैं तो उनसे लोगों को रोजगार मिलेगा। उनकी आमदनी बढेगी और आय के स्थायी स्त्रोत कायम होंगे। अर्थात् उनकी

आय में वृद्धि होगी। जब आय बढ़ती है तो लोग अपने खाने, कपड़ों एवं आवास की जरूरतों को उससे पूरा करते हैं। प्रति व्यक्ति आय बढ़ती है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था का द्वार बाहर के लोगों के लिए खुलता है। आय की वृद्धि के साथ आवास बनते है, यातायात सुविधाएं बढ़ती है। साक्षरता में इजाफा होता है। ये विकास के लक्षण है। इस प्रकार के कारण कई परिवर्तन आते हैं। विकास प्रक्रिया के केवल आर्थिक बदलाव ही नहीं आता बल्कि इसका सम्बन्ध सम्पूर्ण सामाजिक, राजनैतिक एवं समाज के सांस्कृतिक धागों से जुड़ा हुआ है। (The process of development involves not only changes in economic structure but is interlinked with the entire social, political and cultural fabrics of society)। इससे स्पष्ट है कि विकास का अर्थ प्रतिव्यक्ति आय में बढ़ोतरी के अतिरिक्त और औद्योगीकरण से भी अधिक विस्तार लिए हुए है। दरअसल, जीवन में गुणात्मक बदलाव लाने की यह एक प्रक्रिया है। पूर्वी सामाजिक प्रणाली का जीवन स्तर एक ऊंचाई की ओर निर्देशित होने लगता है।

कुछ लोगों की एक भिन्न धारणा भी है। वे मानते है कि उत्पादकता में वृद्धि, सामाजिक एवं आर्थिक समानता, आधुनिक ज्ञान तक पहुंच संस्थाओं एवं प्रवृत्तियों में सुधार आदि आधुनिक आदर्शो का प्राप्त करने की प्रक्रिया ही सही मायने में विकास है। लेकिन साथ ही उन्हें उनकी जड़ों, संस्कृति एवं पर्यावरण से नहीं हटाती। वे आत्मनिर्भर बनते हैं। आत्म संतुष्टि पाते हैं।

इसलिए विकास को समझने के लिए हम आर्थिक परिप्रेक्ष्य को लेते हैं। परम्परागत सोच के अनुसार अर्थशास्त्री आर्थिक विकास से प्रतिव्यक्ति ग्रोस नेशनल प्रोडक्ट (जी.एन.पी.)से लगाते हैं जिसका सरल अर्थ है कुल राष्ट्रीय आय में देश की कुल आबादी का भाग देना है जिससे प्रतिव्यक्ति आय निकलती है। राष्ट्रीय आय जानने के लिए यह तरीका 1950 में राष्ट्रसंघ ने अपनाया। लेकिन इसकी अपनी सीमाऐं है। यह राष्ट्रीय आय के आकड़ों पर निर्भर है जिसमें वास्तविक आय का बढ़ा हिस्सा शामिल नहीं होता जैसे कि घर में किये गये कार्यो से आय। भारत जैसे देश में जहां सेवाओं एवं माल का बहुत हिस्सा प्राप्त होता है, उसको शामिल किये बिना प्रतिव्यक्ति आय को आंकना उचित नहीं है। यह औसत पर आधारित है और उत्पादन एवं वितरण के ढांचे को प्रस्तुत नहीं करता। इसमें प्राकृतिक स्त्रोतों से आय को भी नहीं गिना जाता। इन कमियों के बावजूद 'आर्थिक विकास' को प्रतिव्यक्ति आय से मापने का यह आम तरीका है। विश्व बैंक भी इस आधार को लेकर विकसित देशों में अलग- अलग देशों का वर्गीकरण करता है। विकास की इस अवधारणा की आलोचना के कारण विकास की अन्य धारणाओं के विकास सामने आए है।

विकास की अन्य धारणा के अनुसार विकास का अर्थ है - 'बेरोजगारी को कम करना, असमानता को दूर कर गरीबी समाप्त करना।' इस धारणा में किसी देश को विकसित नहीं माना जाता है यदि उसमें गरीबी है, उस तक बेरोजगारी है और असमानता है। विकास की तीसरी अवधारणा में जीवन की मौलिक गुणवत्ता (फिजीकल क्यालिटी ऑफ लाईफ इन्हेक्स-पी.क्यू.एल.आई.)को आधार माना गया है। इसमें साक्षरता की स्थिति, औसत आयु बालमृत्यु आदि को जीवन स्तर मानकर देखा जाता है। एक अन्य विचार में स्वतन्त्रता, क्षमताओं एवं बेहतर जीवन की स्थितियों को लेकर विकास को मापा जाता है। इसी तरह टिकाऊ विकास की धारणा में आय के स्त्रोतों के संरक्षण को भी बिन्दु बनाया गया है जहां स्त्रोतों को खतरा पहुंचाये बिना उन्हें

भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखते हुए विकास प्रक्रिया जारी रखी जा सके तथा इसी आधार पर उनका दोहन किया जा सके उसे टिकाऊ विकास माना गया है।

इस प्रकार प्रतिव्यक्ति आय मे संकुचित दायरे से हटकर विकास की अवधारणा को विस्तार देने के लिए विभिन्न प्रयास हुए है। इसलिए कुछ समान बिन्दुओं को लेकर विकासशील या तीसरी दुनिया की विशेषताओं की चर्चा की गई है जिसमें जीवन स्तर नीचा हो, उत्पादकता का स्तर भी कम हो, जनसंख्या वृद्धि का स्तर उच्च हो, एवं वृद्धिगत बेरोजगारी हो तथा जहां कृषि या प्राथमिक उत्पादन पर निर्भरता हो। इन मापदण्डों के आधार पर पर विकसित, अविकसित या विकासशील देशों का वर्गीकरण किया गया है। लेकिन इसमें यह नहीं बताया गया है कि क्यों और कैसे कुछ देश कम विकसित है तथा किस प्रकार उनके विकास को गति दी जा सकती है।

विकास के इन सभी सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए यह बात स्पष्ट है कि विकास का लक्ष्य एक नहीं है। किसी देश के लिए पूर्ण साक्षरता ही विकास का लक्ष्य हो सकता है तो किसी के लिए पेयजल और किसी के लिए जनविकास हो सकता है। इस प्रकार किसी देश के विकास के लक्ष्य पर विकास प्रक्रिया का स्वरूप तय होता है। विकास के सिद्धान्त में विकास से संबन्धित एक से अधिक प्रक्रियाएं भी हो सकती है। लेकिन विकास का यह मूल दर्शन है कि विकास का सिद्धान्त चाहे कोई भी हो, इसका मूल कार्य यह स्पष्ट करना कि कोई देश कम विकसित क्यों है और उसे विकसित किस प्रकार किया जाए। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद कई देश आजाद हुए लेकिन सदियों की गुलामी और उपनिवेशवादी शोषण ने उन्हें अविकसित छोड़ा। इसलिए विकास ऐसे देशों की प्राथमिकता बन गया।

यद्यपि, इसके बाद की कई अवधारणाएं उत्पन्न हुई जो कई विकास प्रस्तुत करती है। लेकिन, विश्व परिदृश्य में एक बात स्पष्ट हुई कि पश्चिम के देशों में जो विकसित देश माने गए उन्होंने विकास की कुछ प्रक्रियाओं को अपनाया है और एक स्तरीय जीवन का मानक प्राप्त किया। उन्होंने कई ऐसी उपयोग की अपने लिए वस्तुएं प्राप्त की जो दुनिया के अन्य देशों के लोगों को उपलब्ध नहीं हैं या अधिकांश देशों की उन वस्तुओं को खरीदने की क्षमता नहीं है। ऐसे पश्चिमी देशों का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं पर भारी प्रभाव रहा और वे अविकसित या विकासशील देशों के लिए विकास के आदर्श या मॉडल बन गये। इस प्रकार विकास का अर्थ यह हो गया कि पश्चिम के विकसित देशों के समान बनना। इसे विकास का सीधा 'यूनिलियर' विचार माना गया है। इसके विपरित एक 'नॉन-यूनिलियर' विचार है जिसमें विकास का अर्थ पश्चिम के देशों की तरह बनना नहीं हैं। बदले हुए ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कम विकसित या तीसरी दुनिया के देशों के लिए यह सम्भव नहीं है कि वे पहले से पूर्ण विकसित देशों के समान बनने का मार्ग अपनाएं। इन्हें अपनी परिस्थितियों के अनुरूप एक वैकल्पिक विकास का मार्ग अपनाना होगा।

इस प्रकार इन विचारों के अलावा विकास की कई सैद्धान्तिक धारणाएं है लेकिन अधिकांश तीसरी दुनिया के देशों ने 'यूनिलियर' सिद्धान्त को लेकर तर्कसंगत ढंग से एक के बाद एक कदम उठाकर विकास की ओर बढ़ने के प्रयास किए हैं।

महात्मा गांधी ने भारतीय परिदृश्य में पश्चिमी विकास की अवधारणा को नकारा है। उनके अमुसार पश्चिमी औद्योगिकीकरण के साथ अनैतिक अपराध और सांस्कृतिक अपराध और सांस्कृतिक हास जुड़े हुए है। वे मानते थे कि भारत को चाहिए कि वह गांवों को केन्द्र मानकर कॉटेज एवं ग्रामीण उद्योगों के विकास के द्वारा लोगों को

रोजगार एवं जीविका उपलब्ध कराने का रास्ता पकड़े। औद्योगिकीकरण की बुराइयों से बचने तथा नगरीकरण के खतरों से मुक्त होने के लिए उन्होंने 'ग्राम स्वराज' की कल्पना की थी।

सारांश में कहा जा सकता है विकास संबंधी विचारों ने विकास की अवधारणा को एक बड़ा दायरा माना है जिसमें आर्थिक विकास के साथ गरीबी, असमानता, बेरोजगारी, एवं असाक्षरता जैसे मुद्दे भी शामिल हैं।

1.5 विकासात्मक जनसंचार

संचार की विकास को दिशा में एक महत्वपूर्ण तथ्य माना गया है। संचार विशेषज्ञों, समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों एवं अर्थशास्त्रियों ने एकमत होकर इस तथ्य को स्वीकार किया है कि संचार का संकुचित उपयोग करके विकास प्रक्रिया का पोषण करना एवं इसे गति प्रदान करना सम्भव है। संचार प्रक्रिया का अर्थ स्पष्ट किया जा चुका है। जहाँ तक विकासात्मक जनसंचार का प्रश्न है, यह एक ऐसी प्रक्रिया मानी गई है जिसमें कुछ वांछित उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लोगों या समूहों के व्यवहार एवं प्रवृत्तियों को बदला जा सकें उन्हे प्रसारित किया जा सके। जिससे पूरे समाज का हित सम्भव हो सके।

विकासात्मक जनसंचार अपेक्षाकृत संचार के क्षेत्र में अध्ययन का एक आधुनिक क्षेत्र है। संचार के विज्ञान के महत्व की तरह विकासात्मक जनसंचार जो एक उपयोगी नियम बन गया है। लेकिन यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि तीव्र गति से प्रगति एवं विकास करने की दिशा में उपयोगी विभिन्न तत्वों या 'इनपुट्स' में यह एक तत्व है। विकासात्मक संचार का प्रमुख संबंध देश, समाज और व्यक्ति के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में सूचना एवं संचार की भूमिका से है। इसका सरोकार नगरों या ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए जनसंचार माध्यमों (मास मीडिया)प्रत्यक्ष या परोक्ष भूमिका की पहचान करना है।

1.5.1 विकासात्मक जनसंचार का अर्थ

विकासात्मक जनसंचार का अर्थ है - 'विकासात्मक जनसंचार, मनुष्य के सम्प्रेषण या संचार की एक कला एवं विज्ञापन है। इसका उपयोग देश के विकास को गति देने एवं बदलने में किया जाता है। यहां लोगों को गरीबी से मुक्त करके गतिशील आर्थिक उन्नति की ओर प्रेरित किया जाता है तथा उन्हें अधिक सामाजिक समानता एवं अपनी क्षमता का सम्पूर्ण उपयोग करने की दिशा में उत्पेरित किया जाता है'। इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि विकासात्मक जनसंचार एक कला और एक विज्ञान है। कई बार यह सोचा जाता है कि कला ओर विज्ञान, दोनों अलग-अलग विचार हैं। लेकिन इस परिभाषा में विकासात्मक संचार को एक कला और विज्ञान, दोनों के रूप में देखा गया है। यह कला इसलिए है कि इसमें एक निर्दिष्ट समूह का समुदाय तक संचार प्रक्रिया करने के लिए कुछ कार्यक्रम तैयार किए जाते है। इसे विज्ञान इसलिए माना गया है क्योंकि विकासात्मक जनसंचार में एक व्यवस्थित प्रक्रिया या पद्धति को अपनाया जाता है। इस प्रकार विकासात्मक जनसंचार एक कला भी है और विज्ञान भी है। मनुष्यों की संवेदना एवं हृदय तक पहुंचने के लिए कार्यक्रम तैयार करना एक कला है और विकासात्मक जनसंचार के माध्यम से परिणामों को मापने की विधि एक विज्ञान है। एवरेट एम. रोजर्स के अनुसार 'विकासात्मक

जनसंचार उन माध्यमों के उपयोग की ओर संकेत देता है जिनसे विकास के काम को गति दी जाती है। उसके द्वारा और अधिक विकास या नागरिकों का विभिन्न संचार माध्यमों से परिचित कराया जाता है ताकि विकास के लिए अनुकूल वातावरण की सृष्टि की जा सके। साथ ही किसी विकास कार्यक्रम या परियोजना को सफल बनाने में जनसमर्थन दिया जा सके। आमतौर से इसीलिए विकासात्मक जनसंचार को 'विकास मे समगामी या सहयोगी संचार' (डेवलपमेन्ट - स्पोर्ट क्यूनिकेशन - डी.एस.सी.)की संज्ञा दी जाती है।'

इस प्रकार रोजर्स का यह मत है कि विकास के लिए जनसंचार के एक वातावरण या माहौल तैयार होता है। यह माहौल दो तरह का हो सकता है 1. भौतिक 2. मनोवैज्ञानिक। अब किसी विषय या वस्तु के बारे में किसी समुदाय या समूह को सूचना या ज्ञान दिया जाता है तो उन्हें उपयोगी में लाई जाने वाली वस्तु के बारे में ज्ञान उसकी प्रासंगिकता एवं उपयोगिता की प्रतीति होती है। जैसे किसी उर्वरक की किस्म के बारे में टेलीविजन या अन्य जनसंचार माध्यम से जानकारी देना। इससे मौलिक वातावरण बनता है। इस प्रकार की बातों का आम आदमी के मानस पर होने वाले प्रभाव से मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया होती है। यदि प्रभाव अनुकूल हो तो भविष्य में ऐसी बातों को व्यवहार में लाया जा सकता है या लोगों की हिचकिचाहट इस दिशा में कम, की जा सकती है।

1.5.2 विकासात्मक जनसंचार का क्षेत्र एवं महत्व

विकासात्मक जनसंचार का क्षेत्र अति व्यापक है एवं इसके महत्व को सामाजिक एवं आर्थिक विकास को गतिमय बनाने की दिशा में स्वीकार किया जा चुका है। विकास के लिए जरूरी साधनों में विकासात्मक जनसंचार की भूमिका को अहम माना गया है। इसके उपयोग पर बल दिया गया है।

एक रोजेरिय ब्रेह ने विकासात्मक जनसंचार के क्षेत्र के बारे में कहा कि - 'विकास कार्यक्रमों के सम्पूर्ण आयोजन (प्लानिंग)एवं क्रियान्यवन की प्रबंधकीय प्रक्रिया में विकासात्मक जनसंचार एक महत्वपूर्ण तत्व है। "विस्तृत अर्थो में, "विकास प्रक्रिया में उचित विशेषज्ञता एवं उसका समुचित उपयोग करना जिसके निर्दिष्ट नीचे से नीचे स्तर के लोगों को लाभावन्ति करने के उद्देश्य की सफलता के लिए उनकी भागीदारी एवं सहायता में वृद्धि करना सम्भव हो सके।' अर्थात जिन लोगों के हित के लिए योजनाएं बनती हैं, उनकी भागीदारी एवं सहयोग से जनसंचार की विशेषता का उपयोग करके बढ़ाना, यह विकासात्मक जनसंचार के दायरे में आता है। इस प्रकार विकासात्मक जनसंचार का लक्ष्य सामाजिक चेतना को उत्प्रेरित करना है।

1.5.3 विकासात्मक जनसंचार की भूमिका

विकासात्मक जनसंचार की भूमिका परिवर्तन लाती है। इसके द्वारा बेहतर एवं गुणात्मक जीवन के निर्माण की दिशा में समाज को बदलने के प्रयास किए जाते हैं। इसे उच्चतर जीवन स्तर या जीवन की गुणवत्ता को कई तरीकों से प्राप्त किया जा सकता है। इसमें समाज के हर परिवार के बच्चों के टीकाकरण की व्यवस्था को स्वीकार्य बनाना, कुछ देशों द्वारा अपने नागरिकों के लिए आवश्यकतानुसार अन्न उत्पादन करने हेतु विभिन्न कृषि तकनीकों को अपना, कुछ देशों द्वारा आर्थिक एवं अन्य विचारों से लोगों को मुक्त करके उनमें वैज्ञानिक दृष्टि के प्रति रुझान

पैदा करना आदि कई मुद्दे हो सकते हैं। इन उद्देश्यों की पूर्ति से विकासात्मक जनसंचार एक बड़ा उपकरण या साधन सिद्ध हो सकता है। विकासात्मक जनसंचार की दूसरी प्रमुख भूमिका समाजीकरण की हो सकती हैं। समाज के स्थापित मूल्यों को बनाये रखने की दिशा में इसका योग हो सकता है।

इन भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए विकासात्मक जनसंचार की यह कोशिश होती है कि यह समाज में एक परिवर्तनकारी वातावरण या पर्यावरण की सृष्टि करें ताकि समाज नवीन विचारों को ग्रहण करके अपने विकास को गति दे सके। हर समाज के अपने कुछ परम्परागत मूल्य होते हैं। ये मूल्य हर समाज की पहचान होते हैं एवं इनमें उनका अपनापन झलकता है। समाज की अपनी इच्छाएं और आकांक्षाएं इनमें प्रकट होती है। यदि अन्य समाजों के मूल्य, विश्वास और रीति रिवाज, किसी समाज में अपना असर दिखाने लगते हैं ओर यह समाज सावधान नहीं है तो नए मूल्य और रीति रिवाज उस समाज के बने बनाये ढांचे में जड़ें जमाए लगते हैं। संचार की शक्ति या भूमिका इस दिशा में कारगर हो सकती है और उस समाज की चेतना को जागृत करके ऐसी स्थितियों से बचा सकती है। संचार के द्वारा किसी भी समाज का ध्यान उसके अपने मूल्यों, रीति रिवाजों, विश्वासों और आकांक्षाओं की समृद्धि की ओर आकृष्ट करना सम्भव है।

1.5.4 संचार और विकासात्मक संचार में अंतर

संचार और जनसंचार में क्या अन्तर है, इसे जानना जरूरी है। संचार की प्रक्रिया संदेश, चैनल और गन्तव्य की साधारण प्रक्रिया से सम्बन्धित है। संचार का लक्ष्य इस प्रक्रिया को पूर्णता देता है। लेकिन विकासात्मक जनसंचार का एक लक्ष्य होता है। यह सकारात्मक एवं व्यावहारिक पक्षों को लेकर चलता है।

1. लक्ष्य - कई लोग मानते है कि विकासात्मक जनसंचार को किसी खास लक्ष्य को लेकर नहीं चलना चाहिए। इसमें श्रोता या दर्शक को संदेश के द्वारा किसी विषय पर प्रभावित करने का विचार शामिल नहीं होना चाहिए। लेकिन विकासात्मक जनसंचार में किसी खास व्यवहार में परिवर्तन लाने का उद्देश्य सम्मिलित होता है। जैसे किसानों को विभिन्न फसलों के लिए बने बनाए तरीकों में परिवर्तन लाने की ओर प्रेरित करना। उन्हें अधिक फसल प्राप्त करने के लिए आधुनिक जानकारी प्रदान करना।

2. विकासात्मक जनसंचार में सकारात्मकता - विकासात्मक जनसंचार में किसी खास लक्ष्य को लेकर उसके सकारात्मक पक्षों की ओर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया जाता है। अर्थात् किसी व्यवहार को बदलकर नया विचार अपनाने से होने वाले फायदों का उल्लेख किया जाता है।

3. विकासात्मक जनसंचार का व्यावहारिक पक्ष - विकासात्मक जनसंचार में उद्देश्य ही प्रमुख होता है। इसमें सम्प्रेषण या जनसंचार कर्ता पहले लक्ष्य को समक्ष रखता है और उसकी पूर्ति के लिए इच्छित परिणाम प्राप्त करने के लिए अपने कार्यक्रमों की संरचना करता है। इसमें भाषा, शैली, व्याकरण आदि के द्वारा संदेश को प्रभावी बनाने एवं इच्छित परिणाम प्राप्त करने के प्रयास किए जाते हैं। यह एक उपकरण है। यह उत्पाद नहीं है और लक्ष्य जनित है।

1.6 विकास के लिए संचार जरूरी

भारत हो या अन्य विकासशील देश, यह तो सच है कि एक आर्थिक एवं सामाजिक बने बनाए ढ़ाचे में इच्छित परिणाम पाने के लिए विकास को गति देना सम्भव नहीं है। इसके लिए जरूरी है कि समाज एवं संस्थागत ढ़ाचे में परिवर्तन किया जाए। उसे इस प्रकार में मोड़ा जाए कि विस्तृत परिप्रेक्ष्य में तय लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को पूरा करना सम्भव हो सकें। इसके लिए एक विशेष तरीका एवं सोचा समझा मार्ग अपनाना जरूरी है। इस दिशा में जनसंचार की विकास को गति देने में अहम भूमिका हो सकती है। विकासात्मक जनसंचार एक सहयोगी की तरह जनता की आकांक्षाएं बढ़ाने, उन्हें पूरा करने और विकास के मार्ग में निरन्तर अग्रसर करने में योग दे सकता है।

विकासात्मक जनसंचार का अर्थ है कि विकास कार्यो से संबंधित विभिन्न मुद्दों को लेकर, स्वास्थ्य, साक्षरता, शिक्षा, परिवार कल्याण, जनसंचार नियंत्रण आदि के सन्दर्भ में जनशिक्षण के द्वारा विकास के यथार्थ और इसके फायदों को उजागर करे। उत्पेरित एवं शैक्षणिक आधार लेकर समाज एवं समुदाय के लिए परिवर्तन का गतिशील वातावरण बनाने में योग दे। अज्ञानता एक ऐसा कारण है जो विभिन्न गम्भीर समस्याओं के समाधान एवं विकास के मार्ग में बाधा पहुंचाती है। सूचना एवं जनसंचार के द्वारा ऐसी बाधाओं पर चोट करके विकास को सही दिशा देने सफलता प्राप्त की जा सकती है। जनचेतना, जनमत, प्रवृत्तियों एवं व्यवहार में बदलाव आदि मौलिक बातें हैं एवं इनको इच्छित दिशा देकर विकासात्मक जनसंचार, विकास के लक्ष्य की पूर्ति से भागीदारी निभाता है।

1.7 सारांश

जनंसचार की अवधारणा और इसका महत्व तो सर्वविदित है लेकिन सामाजिक विकास में जनसंचार की भूमिका के सन्दर्भ में विकासात्मक जनसंचार के महत्व पर बल दिया जाता है। इसलिए विकासात्मक जनसंचार को समझने से पूर्व जनसंचार एवं विकास के अर्थ एवं विचार को स्पष्ट करने का अलग-अलग प्रयास किया गया है। साथ ही यह स्पष्ट करने की भी कोशिश की गई है कि आखिर विकासात्मक जनसंचार एवं जनसंचार में क्या अन्तर है। विकासात्मक जनसंचार की अवधारणा को समझने के लिए यह जरूरी है कि विकास को गति देते वाली जनसंचार प्रक्रिया ही विकासात्मक जनसंचार है।

आज भी जनसंचार विशेषज्ञता का पूर्ण उपयोग किए बिना परम्परागत जनसंचार माध्यमों के द्वारा विकास को गति देने के प्रयास किये जा रहे हैं। जनसंचार नियन्त्रण या परिवार कल्याण जैसे अभियानों की सफलता पर प्रश्नचिन्ह लगने का कारण परम्परागत सोच है। यह जानना भी जरूरी है कि विकासात्मक जनसंचार के लक्ष्य को प्रमुख मानकर जनसंचार की व्यूह रचना की जाती है और इच्छित परिणाम प्राप्त करना ही लक्ष्य की पूर्ति माना जाता है।

इस प्रकार के अनुभवों ने विकासात्मक जनसंचार को नया आयाम दिया है एवं इसके महत्व को स्वीकार किया है। यह विकास में सहयोगी की भूमिका अदा करता है एवं समस्या के मूल में जाकर परिवर्तन को स्वाभाविक बनाता है। विकास के लिए जरूरी परिवर्तनकारी माहौल रचता है समाज की परम्पराओं मूल्यों संस्कृति आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक विश्वासों एवं धारणाओं को परखकर अपने लक्ष्य की ओर बढता है।

इन्हीं बातों को मद्देनजर रखते हुए विकासात्मक जनसंचार के सिद्धान्तों एवं दर्शन को स्वीकार्य माना गया है। शिक्षा, परिवार कल्याण, आर्थिक विकास जनसंख्या नियन्त्रण, साक्षरता आदि विभिन्न लक्ष्यों की पूर्ति में विकासात्मक जनसंचार की अहम भूमिका ने लोकप्रियता प्राप्त की है।

1.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. जनसंचार की परिभाषा देते हुए इसका अर्थ स्पष्ट करें। साथ जनसंचार की विशेषताओं पर भी प्रकाश डालें।
2. संचार के विभिन्न प्रकारों का विश्लेषण कीजिए?
3. विकास से आप क्या समझते हैं? विकास के सन्दर्भ में विभिन्न सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए।
4. विकासात्मक जनसंचार के सिद्धान्त से आप क्या समझते हैं? साथ ही विकासात्मक जनसंचार के महत्व को प्रतिपादित करते हुए इसकी भूमिका का विश्लेषण कीजिए।
5. विकासात्मक जनसंचार और जनसंचार के विकास में क्या अन्तर है? अपने मत की पुष्टि के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।
6. समूह संचार एवं संगठनात्मक संचार में क्या भेद है? स्पष्ट करें।
7. विकास की भारतीय अवधारणा एवं विकसित देशों की विकास अवधारणा के बीच क्या अन्तर है? विश्लेषण कीजिए।

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. Jan R. Hakamulter, Fay AC De Jonge & P.P.Singh, Principles and Tarutions of mass communication, (1988)Anmol Publications Pvt. Ltd., New Delhi.
2. Baldev Raj Gupta (1977), Mass Communication, & Development Vishwavidyalaya Prakashan, Varanasi.
3. B. N. Ahuja & S.S. Chabra (1922), Development Communication, Surjeet Publications, Delhi.
4. Ascraft, Joseph (1985), A curriculam for Development Support Communication : University of Punjab (Lahore).
5. Balbase, Subhadra (1987), Development Communication, A Nepali experience As son Mass Communication Research and Information Center, Singpore.
6. राधेश्याम शर्मा - विकास पत्रकारिता, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़
7. विदुरा, सितम्बर - अक्टूबर 1988, प्रेस इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, दिल्ली

इकाई 2 तीसरी दुनिया में विकासात्मक जनसंचार (Communication in Developing Countries Third World)

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 विकासशील देशों की अवधारणा (तीसरी दुनिया)

2.3 संचार का महत्व

2.4 विकास एवं इसका क्षेत्र

2.5 विकासात्मक संचार

2.6 ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

2.7 द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद का परिदृश्य

2.8 विकास के मार्ग में अवरोध

2.9 इक्कीसवीं सदी की विकासात्मक चुनौतियां

2.10 सारांश

2.11 निबंधात्म्क प्रश्न

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई 'तीसरी दुनिया में विकासात्मक जनसंचार' की है। इससे पूर्व की इकाई में आप विकासात्मक जनसंचार किसे हैं? उसकी परिभाषा, महत्व और भूमिका के बारे में व्यापक रूप से जान चुके हैं।

- इस इकाई के अध्ययन के आप जानेंगे कि विकास प्रक्रिया किन-किन अवधारणों से गुजरी है?
- आप विकासात्मक संचार के महत्व से भी परिचित हो सकेंगे।
- आप यह भी जान सकेंगे कि विकासात्मक संचार ने विकास प्रक्रिया को गति देने एवं सामाजिक आर्थिक परिवर्तन लाने की दिशा में क्या भूमिका निभाई है।
- विश्व परिदृश्य में तीसरी दुनिया (विकासशील राष्ट्रों)के भौगोलिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य से भी आप परिचित हो सकेंगे।
- विकासात्मक संचार के विविध सिद्धान्तों एवं उनके व्यावहारिक पक्षों की भी जानकारी हो सकेगी।
- आप इस बात का भी विश्लेषण का सकेंगे कि ऐतिहासिक दृष्टि से विकास प्रक्रिया के मार्ग में सामाजिक आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर किस प्रकार अवरोध आते हैं।

- इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपको जानकारी होगी कि 21वीं सदी में विकासात्मक संचार के समक्ष चुनौतियां क्या हैं?

2.1 प्रस्तावना

बीसवीं सदी के अन्तिम अर्द्धशतक में संचार के क्षेत्र में कार्यरत लोगों का ध्यान विकासात्मक संचार की ओर आकर्षित हुआ। विकास के लिए प्रयत्नशील उन तमाम देशों की ओर विशेष सोच से किया जाने लगा जिन्हें तीसरी दुनिया की संज्ञा दी गई। यह तथ्य भी सामने आया कि दुनिया के भौगोलिक रूप को देखा जाए तो विभिन्न देशों की आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियां भिन्न-भिन्न हैं। ऐसे में कोई विकास का एक मॉडल तैयार करना सम्भव नहीं था। यह अनुभव किया गया कि विकास की प्रक्रिया को लागू करने का कोई एक प्रकार का रास्ता नहीं हो सकता अर्थात् विकास का एक विश्वव्यापी मार्ग नहीं अपनाया जा सकता है। हर देश या समाज की परिस्थितियों के यथार्थ को सामने रखकर हर देश या समाज को अपने लिए कोई अनुकूल विकास व्यूह रचना तैयार करनी होगी।

इस विचार को सामने रखते हुए 1960 के उस पहले दशक में जिसे विकास दशक माना जाता है शोध एवं विकासात्मक संचार प्रक्रिया को एक दिशा दी गई। पश्चिमी सहायता एवं संचार के दृष्टिकोण का विश्लेषण शुरू हुआ। यह प्रक्रिया 1970 से प्रारम्भ हुई। इस अवधि में अर्थात् 1970 के दशक में दुनिया के कई देशों में बड़ी-बड़ी परियोजनाऐं आरम्भ की गई। इसके पीछे सामाजिक परिवर्तन लाने का मौलिक विचार था लेकिन ये योजनाऐं अपेक्षित परिवर्तन लाने में कामयाब नहीं हुई। विकास का प्रमुख दृष्टिकोण आर्थिक विकास की ओर था और यही वजह रही कि मनुष्य के अभौतिक मुद्दों की अवहेलना की गई। इसके अलावा आर्थिक विकास के लिए तीसरी दुनिया को दी जाने वाली सहायता ने भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं कमजोर वर्गो के बीच की खाई और अधिक बढ़ गई। इस प्रकार विकास के प्रारम्भिक दौर में विकासात्मक प्रक्रिया को लेकर विकासात्मक संचार के मूल्यों, उद्देश्यों एवं अर्थ के सन्दर्भ में एक विवाद छिड़ा।

प्रस्तुत इकाई में विकासात्मक संचार के विभिन्न पहलुओं का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आकलन करने, विकास, संचार एवं विकासात्मक संचार की अवधारणाओं को समझने एवं विकासशील या तीसरी दुनिया के देशों में इन अवधारणाओं के अर्थ एवं महत्व के विभिन्न मापदंडों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। साथ ही विकासात्मक संचार के विभिन्न सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों के विश्लेषण की भीं चेष्टा की गई है।

2.2 विकासशील देशों की अवधारणा (तीसरी दुनिया)

18वीं सदी में फ्रांस में लोगों की तीन वर्गो में चर्चा की जाती थी। पहले एवं दूसरे वर्ग के पास राजनैतिक सत्ता थी। 1789 में यह नारा दिया गया कि इन दो वर्गो से राजसत्ता को तीसरे वर्ग को स्थानान्तरित करवाने के प्रयास किये जाएं। इसके बाद में जीनपाल सात्रे जैसे क्रान्तिकारी विचारों ने भूखे एवं पीड़ित लोगों को तीसरा वर्ग माना। राजनैतिक अर्थो में जो राजनीतिज्ञ, पत्रकार एवं वैज्ञानिक तटस्थ धारणा रखते थे उनके लिए यह शब्द काम में लिया गया।

1950 में वे राष्ट्र जो पूर्व या पश्चिम के साथ होने के बजाय तटस्थ (नॉन एलायन)थे, उन्हें 'तीसरी दुनिया' शब्द ठीक लगा। इसमें वे उपनिवेश शामिल थे जो 1950 से 1960 के दशकों में आजाद हुए थे। इसके बाद इसं शब्द का प्रयोग 'कम विकसित' या गरीब देशों के लिए किया जाने लगा। दुनिया को लोग सम्पन्न वर्ग या आधुनिक वर्ग एवं परम्परागत या गरीब वर्ग, इन दो रूपों में देखने लगे। विकासशील या तीसरी दुनिया के देशों में उन देशों की गिनती होने लगी जिनमें आर्थिक समानताएं हैं। औद्योगिक दृष्टि से उन्नत देशों को पहली दुनिया, जो विकसित हो गई वह दूसरी दुनिया और जो विकास की ओर प्रयत्नशील है - वह विकासशील या तीसरी दुनिया कहलाने लगी। इसका तात्पर्य यह हुआ कि जो देश विकसित है, वे पहली दुनिया के देशों में शामिल है। दूसरी दुनिया में वे देश है जो विकास की रफ्तार में आगे बढ़ते हुए विकसित राष्ट्रों के बराबर आ गए हैं। उनके विकास की प्रक्रिया पूर्ण हो गई है और कुछ देश आज भी विकास के लिए संघर्षरत हैं जो तीसरी दुनिया के राष्ट्र या विकासशील राष्ट्र कहलाते हैं। वैसे कम विकसित या अविकसित देश भी हैं। लेकिन जहां विकास यात्रा का दौर जारी है उन्हें हम विकास की ओर उन्मुख या तीसरी दुनिया के देशों की श्रेणी में रख सकते हैं। इस वर्ग में दुनिया के दो तिहाई देश शामिल हैं।

आर्थिक विकास के संघर्ष में जुटे सभी देशों को एक वर्ग अर्थात् विकासशील या तीसरी दुनिया के देश मान लेने के बाद भी हर देश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक परम्पराओं, भौगोलिक स्थितियों, भाषाई स्थितियों आदि में जो अन्तर है, उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती है।

इसलिए विभिन्न देशों को अलग-अलग समूह के रूप, में जानने के बाद ही इन देशों में संचार की भूमिका को रेखांकित करना सम्भव हो सकता है। जहां तक भौगोलिक रूप में विभिन्न देशों के बीच भी अविकसित या विकासशील भाग है। भारत का ही उदाहरण लें तो यह पहली और तीसरी दुनिया का मिश्रण है। इसे तीन प्रकार के विभिन्न समूहों में बांटा जा सकता है। भारत में कृषि करने वाली या अर्द्ध नगरीय 350 मिलियन आबादी है, विकासशील 100 मिलियन औद्योगिक आबादी है, जो भारत को दुनिया के 10 पूर्ण विकसित औद्योगिक देशों की श्रेणी में रखी जा सकती है। 400 मिलियन विकसित मध्य वर्ग है जो दुनियां का सबसे बड़ा मध्यम वर्ग है। इसी प्रकार अमेरिका जैसे विकसित देश में भी सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित वर्ग है।

कई विद्वान विकसित एवं विकासशील वर्गो के विभाजन को उपयुक्त नहीं मानते। भौगोलिक आधार को न लेकर, दुनिया में एक खास प्रकार के आर्थिक विकास एवं सामाजिक रूप से पिछड़े देशों को एक वर्ग में रखकर उन्हें विकासशील राष्ट्रों की श्रेणी में रखा गया है ताकि इस विकास के परिप्रेक्ष्य में संचार या विकासात्मक संचार को समझा जा सके।

यह तो स्पष्ट है कि आज की दुनिया में परंपरागत समाज भी आधुनिकता की ओर उन्मुख है और उनकी दशा सुधारने के प्रयत्न जारी है। वैसे पीड़ित हुए राष्ट्र, जाति भेद, वर्ग आदि विभिन्न वर्गीकरणों में दुनिया को बांटकर लोग देखते हैं। इस इकाई में विकास एवं विकासात्मक संचार कस संबंध लम्बे समय से अपनी दशा में सुधार के लिए जारी विकासात्म्क प्रक्रिया से है। यह भी देखा गया है की बहुत अधिक एवं बहुत विस्तार से गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, भूख, बीमारी आदि अधिकांशतः उन देशों में हैं, जिन्हें

परंपरागत रूप से विकासशील या तीसरी दुनिया के देशों की श्रेणी में रखा गया है। इसलिए औद्योगिक दृष्टि को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। इसलिए कई बार विकासशील देश, दक्षिण या तीसरी दुनिया को बात करते समय आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से उन देशों की भी बात करते हैं जहां विकास की प्रक्रिया किसी न किसी रूप में जारी हैं। आमतौर से अफ्रीकी देशों, लेटिन अमेरिका के अधिकांश भाग एशिया एवं पेसिफिक के देशों को आर्थिक दृष्टि से गरीब माना जाता है।

2.3 संचार का महत्व

संचार एक प्रक्रिया है जहां कोई व्यक्ति, किसी व्यक्ति को संदेश भेजता है और जिस माध्यम से संदेश प्रसारित करता है, उसे चैनल कहा जाता है। इस प्रक्रिया के द्वारा संदेश भेजने वाला व्यक्ति, संदेश से उत्पन्न प्रतिक्रिया (फीडबैक)प्राप्त करता है। इस प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिक या पर्यावरणीय बाधा को बहुधा शोरगुल (नोईज)कहते हैं। इस प्रकार संदेश की यह अदला-बदली (एक्सचेंज)प्रक्रिया समान धरातल पर ही सम्भव हो सकती है। लेकिन उस अवस्था में जबकि पहल एवं योग्यता संदेश भेजने वाले के पास अधिक होती हैं, तो इसका परिणाम यह होता है कि यहां अव्यक्तिगत एकतरफा संदेशों का प्रवाह बन जाता है। यद्यपि जनसंचार (Mass communication)के मामले में ऐसा आमतौर स होता है। जनसंचार के माध्यमों द्वारा संदेश की रचना की जाती है और उन्हें भेजा जाता है। जहां संदेश प्राप्त करना या ऑडियन्स के द्वारा व्यक्त प्रतिक्रिया (फीडबैक)के द्वारा भी दर्शाया जा सकता है। इस प्रकार संचार सूचना, संदेश, विचार या प्रवृति को एक समूह, व्यक्तियों या ऑडियन्स तक पहुंचने की प्रक्रिया है।

जिन समाजों में बाजार अर्थव्यवस्था है, जहां प्रारम्भिक सिद्धान्तों के अनुसार यह माना गया है कि जन माध्यमों (मास मिडिया)में सूचना प्रदान करने तथा प्रभावित करने की बड़ी शक्ति है। लेकिन 1950 एवं 1960 के दशकों के बाद बहुत कुछ बदला है। उस समय संचार के जो मॉडल और सिद्धान्त तय किए गए थे, उनमें भारी बदलाव आया है। इस विषय पर गत दशकों में हुए शोध ने प्रारम्भिक सिद्धान्तों में कई त्रुटियां या कमियां पाई हैं।

इसके अलावा संचार प्रौद्योगिकी में इस प्रकार से परिवर्तन आया है कि सूचना प्रवाह में विश्वभर में तीव्र गति पैदा हुई है। रेडियो एवं टेलीविजन स्टेशन्स में कई गुणा वृद्धि हुई है। इन्टरनेट में हमारे घर और काम में एक क्रान्ति पैदा कर दी है। सैलूलर फोन हो या फैक्स मशीन, एक बदलाव से भरी क्रान्ति में हम जी रहे हैं। यह सब तीन नए आविष्कारों के परिणामस्वरूप सम्भव हुआ है। इस नई संचार प्रौद्योगिकी ने सूचना तन्त्र में भारी परिवर्तन किए है। इनमें प्रमुख है - पहला कम्प्यूटर, जो की सूचनाऐं देता है, उनको संग्रह करता है, एवं डेटा स्थानान्तरित करता हैं। यह डेटा ट्रांसफर या सूचनाओं का स्थानान्तरण, इस प्रकार पहले सम्भव नहीं था। दूसरा - सैटेलाईट है। यह तीवग्रति से विस्तार में दूर-दूर तक सूचना को प्रसारित (रिले)करता है। तीसरा अनुसंधान डिजिटाईजेशन है। यह किसी भी प्रकार के डेटा, तस्वीरों, ध्वनि आदि संचार साम्रगी को संकेतों में बदलता है जिसे त्वरित रूप से, ट्रांसमिट करना सम्भव है। इन संकेतों (कोड्स)को डिकोड करके संदेश को इच्छित व्यक्ति या ऑडियन्स तक पहुंचा दिया जाता है।

वे सामाजिक वैज्ञानिक जिनकी रुचि संदेश को स्थानान्तरित करने एवं उसके प्रभाव सम्बन्धी प्रश्नों में रुचि रखते हैं, उन्होंने धीरे- धीरे ऐसे संवेदनात्मक या आधुनिकतम सिद्धान्त विकसित किए जो प्रारम्भिक सिद्धान्तों की समस्याओं का हल खोज सके। साथ ही संचार वातावरण में उत्पन्न उलझनों का समाधान ढूंढ सके। इन नए सिद्धान्तों पर आधारित अध्ययनों ने जनसंचार माध्यमों की भूमिका एवं शक्ति का समर्थन किया है।

मानव समाज की अनादिकाल से यह विशेषता रही है कि समाज में मनुष्य एक दूसरे से विचारों एवं भावनाओं का आदान- प्रदान करता आया है। इसी आदान- प्रदान की प्रक्रिया को सम्प्रेषण या संचार (कम्यूनिकेशन)की संज्ञा दी गई है। यह मानव प्रवृति रही है कि वह सम्प्रेषण के द्वारा समाज से संलग्न रहे। आधुनिक जीवन में संचार का महत्व और अधिक बढ़ गया है। मनुष्य के अस्तित्व एवं विकास का यह एक अभिन्न अंग बन गया है। संचार (कम्यूनिकेशन)इस प्रकार सूचनाओं, विचारों, प्रवृत्तियों के आदान-प्रदान की एक प्रक्रिया है लेकिन यह प्रक्रिया को सम्पूर्णता के साथ सम्पन्न करने के लिए यह जरूरी है कि व्यक्ति इस कला को सीखे और समझे।

दूसरे शब्दों में अर्थों का मिलन ही संचार है। यह एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति, या एक व्यक्ति को समूह से जोड़ने या समाज को समूह से जोड़ने की कला है। इस प्रकार यह एक सम्बन्ध स्थापित करने की कला है। यह जरूरी नहीं कि यह सम्बन्ध व्यक्ति या आमने-सामने या प्रत्यक्ष में हो। यह सम्बन्ध अप्रत्यक्ष रूप में भी स्थापित हो सकता है। चार्ल्स कुले के शब्दों में संचार की परिभाषा इस प्रकार है - 'The Mechanism through which human relations exist and develop all the symbols of mind, together with the means of conveying them through space and preserving them in time.' कहा जा सकता है संचार एक ऐसी प्रक्रिया या प्रणाली है जो मानव संबंधो का अस्तित्व बनाए रखने के साथ-साथ मानव मस्तिष्क के संकेतों को विभिन्न माध्यमों से दूर दराज और विस्तार तक प्रसारित करती है।

आधुनिक मानव ने अपने निरन्तर प्रयासों से विविधतापूर्ण एक ऐसी मशीनरी का निर्माण किया है जिसके माध्यम से संदेशों को एक स्थान से दूसरे तक भेजने की गति आश्चर्य में डाल देती हैं। इन जनसंचार माध्यमों में समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, डिजिटलाईजेशन आदि की अहम भूमिका है। अपनी बात को गति और प्रवाह देने के लिए मानव ने समय एवं दूरी को अपनी इच्छा के सामने झुकने को विवश कर दिया।

यह तो स्पष्ट है कि संचार एक प्रक्रिया है और यह उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। इसके दो महत्वपूर्ण पहलू है - मैकेनिकल या मशीनों सम्बन्धी साधन तथा दूसरा पहलू है - सूचना देने, प्रसारित करने, प्रेरित करने, संतुष्ट करने, मनोरंजन करने आदि उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए उपाय में लाये जाने वाले तरीके। यह हम 'सब जानते ही है कि हम अपनी ज्ञानेन्द्रियों अर्थात् दृष्टि, ध्वनि एवं सूंघने की शक्ति (Slight, sound, and smell -3 S)तथा स्पर्श एवं स्वाद (Touch & Taste 2T)का अपने विचारों या भावों की अभिव्यक्ति करने या संचार करने में उपयोग करते है। बहरहाल Wilbur Schramn ने संचार प्रक्रिया के तीन प्रमुख तत्व बताए हैं -

स्त्रोत (Source), संदेश (Message)एवं गंतव्य (Destination)। स्त्रोत में व्यक्ति का बोलना, लिखना, चित्रांकन करना या मुद्रा या संकेत देना आदि शामिल किए जात सकते हैं। संदेश स्याही या कागज, ध्वनि तरंगों, विद्युत तरंगों, झंडे या किसी संकेत के द्वारा अर्थपूर्ण बात को प्रेषित करना है। गन्तव्य से तात्पर्य या समूह से है जो पढ़ रहा है, सुन रहा है या देख रहा है।

वर्तमान समाज एक जटिल (Complex)समाज है। भारत को ही देखें। यह एक प्रजातांत्रिक गणतन्त्र एवं स्वतन्त्र समाज है। महत्वपूर्ण सूचनाऐं या संदेश लोगों तक सही रूप मे, तीव्र गति से एवं प्रभावपूर्ण तरीके से पहुंचाना इस समाज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

श्रैम (Schramm)ने संचार के प्रमुख तीन तत्वों को विस्तार से समझाने के लिए यह बताया है कि संचार प्रक्रिया में पांच महत्वपूर्ण तत्व या बिन्दु हैं। यहां स्त्रोत एवं इनकोडर एक व्यक्ति है तथा रिकॉर्डर एवं डेस्टीनेशन दूसरा व्यक्ति है तथा सिगनल- भाषा है। यह सब होने पर मानवीय संचार की स्थिति उत्पन्न होती है। इस प्रक्रिया की सर्वाधिक महत्वपूर्ण शर्त यह है कि संदेश भेजने वाले (स्त्रोत)एवं प्राप्त करने वाले (गन्तव्य या ऑडियन्स)के बीच अर्थों का सामंजस्य आवश्यक है। संचार प्रक्रिया को एक अन्य तरीके से भी दर्शाया गया है। क्योंकि जनसंचार में व्यक्ति एक-दूसरे से जब दूर हो और संदेश किसी माध्यम से प्रसारित हो तो अर्थ का स्पष्ट होना जरूरी है अन्यथा इस प्रक्रिया का लक्ष्य पूरा नहीं होगा। इसलिए इस प्रक्रिया को अन्य शब्दों में यों सरलता से व्यक्त कर सकते हैं - संचार कर्ता, संदेश, माध्यम और श्रोता।

इसमें संचारकर्ता या संदेश प्रसारित करने वाले व्यक्ति को जो सूचना, विचार या संदेश तैयार करता है, उसकी कुशलता, ज्ञान एवं अनुभव लोगों तक जाता है। अतः मनोविज्ञान, लोगों की संस्कृति, परम्पराओं, मान्यताओं एवं भाषा आदि की संचार कर्ता को जानकारी एवं अनुभव होना चाहिए। उसे पूरी तरह और स्पष्ट जन होना चाहिए कि उसका संदेश क्या है और उसकी 'ऑडियन्स' कौन है। यह जरूरी नहीं है कि प्रसारित संदेश से ऑडियन्स सहमत हो लेकिन यह तो अनिवार्यता है ही कि वह पूरी तरह संदेश को समझे और संदेश प्रभावकारी हो। इसके लिए संदेश में, सरलता, स्पष्टता एवं विश्वसनीयता का होना अनिवार्य है।

माध्यम में रेडियो, समाचारपत्र, चित्र, नृत्य, संगीत, टेलीविजन, कम्प्यूटर अर्थात् परम्परागत या आधुनिक ये सब माध्यम हो सकते है जो कोई बात करने, सुनने और देखने वालों को छूने या उनके हृदय या मन तक पहुंचने की क्षमता रखता है। संदेश को पाने वाले का भी स्तर ऐसा हो कि जो संदेश को ग्रहण कर सके। वे सक्रियता से भागीदारी निभाए न कि इनका रुख निष्क्रिय हो। इस प्रक्रिया के माध्यम में व्यवधान को चैनल नोईज कहा जाता है और आडियन्स की प्रतिक्रिया के संचारकर्ता तक पहुंचने को 'फीडबैक' कहा जाता है।

संचार प्रक्रिया कई प्रक्रिया से सम्पन्न होती है - जैसे व्यक्ति और व्यक्ति के बीच, व्यक्ति और समूह के बीच या समूह और दूसरे समूह के बीच। यह एक तरफा भी हो सकती है और दो तरफा भी। इसे डॉऊनवार्ड एवं अपवार्ड कम्यूनिकेशन भी कहते हैं स्त्रोत से श्रोता तक और श्रोता से स्त्रोत तक। इन विविध प्रकारों के अलावा समाज को विकास की ओर उन्मूख करने वाली संचार प्रक्रिया या संचार, विकासात्मक संचार एवं विकास संचार में मौलिक अन्तर है। संचार विकास से तात्पर्य है - संचार प्रणाली या संचार नेटवर्क का विस्तार एवं विकास करना जैसे समाचारपत्रों, रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, कम्प्युटर, इन्टरनेट, डिजिटेलाईनेशन आदि को विकसित करना। विकास संचार या विकासात्मक संचार का अर्थ है, किसानों, कामगारों, महिलाओं, गरीब

और कमजोर, पिछड़े या पददलित लोगों के जीवन स्तर को बेहतर दिशा देने या बेहतर बनाने के लिए जो विकास के कार्य किए जाते हैं, उनको सहयोग और समर्थन देने के लिए संचार की जो प्रक्रिया या तरीका अपनाया जाता है।

यह सर्वविदित है कि विकास में संचार की अहम भूमिका होती है। यह एक अत्यन्त आवश्यक तत्व या उपयोगी चीज है। संचार के द्वारा लोगों को विकास के प्रति जागृत किया जाता है। संचार के द्वारा ही विकास को एक यथार्थ रूप मिल सकता है क्योंकि संचार लोगों को विकास की ओर उत्प्रेरित करता है। यह उत्प्रेरित की भूमिका निभाता है। संचार समाज के निर्माण की प्रक्रिया है। यह सूचना के प्रसार एवं विस्तार की प्रक्रिया है। एक ऐसी प्रक्रिया है जो लोगों के ज्ञान, प्रवृत्तियों एवं व्यवहार को बदलने की भूमिका निभाने वाला शक्तिशाली औजार है। संस्कृति, आर्थिक व्यवस्था, राजनीति, सैद्धान्तिक एवं अन्य सामाजिक ढांचों एवं प्रक्रियाओं के बदलाव को गति प्रदान करता है।

2.4 विकास एवं इसका क्षेत्र

विकास के बारे में अलग-अलग भावनाऐं हैं। इसलिए विकास संचार या विकासात्मक संचार को ठीक ढंग से स्पष्ट करने एवं समझने के लिए यह आवश्यक है कि इसे पूरी तरह स्पष्ट किया जाए या परिभाषित किया जाए। आमतौर से विकासात्मक संचार का अध्ययन करने या शोध करने वालों ने विकास के बारे में अधिक ध्यान देने के बजाय विकास संचार (विकासात्मक संचार)पर बल दिया है। अधिकांश विचारक इस बात से सहमत हैं कि विकास से तात्पर्य लोगों की स्थितियों में सुधार लाना है। लेकिन इस बारे में भिन्न-भिन्न मत हैं कि समाज की जीवन स्थितियों का क्या अर्थ है? जीवन स्थितियों में क्या सुधार हो एवं ये सुधार किस प्रकार किये जायें कि इच्छित परिणाम प्राप्त किये जा सकें?

1. पूंजीवादी आर्थिक विकास को प्रोत्साहन - विभिन्न विचारधाराओं में एक विचार यह है कि पुराने आर्थिक विकास के चिन्तन के आधार पर पूंजीवादी आर्थिक विकास को प्रोत्साहन देना एवं उसको पुष्ट करना। यह धारणा इस बात को मानकर चलती है कि पश्चिम का आर्थिक विकास मॉडल सब जगह लागू किया जा सकता है। इसलिए संचार प्रौद्योगिकी को शुरू करके विकास करना सम्भव है। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि पश्चिमी अवधारणा यह मानकर चलती है कि औद्योगिक विकास से आम लोगों के जीवन को उन्नत किया जा सकता है। इसलिए स्थानीय स्तर पर संचार प्रौद्योगिकी का विकास करना, आधुनिकीकरण करना एवं सामाजिक बदलाव लाना है। इसका अर्थ हुआ कि तीसरी दुनिया के देश शिक्षा एवं मानवीय सेवाओं का आर्थिक विकास हेतु परित्याग करें।

2. सांस्कृतिक विस्तारवाद का विरोध - विकास के बारे में दूसरा विचार आर्थिक एवं सांस्कृतिक विस्तारवाद के खिलाफ है। यह विचार आधुनिकीकरण का मतलब आर्थिक साम्राज्यवाद मानते हैं। इस विचारधारा के लोग आर्थिक एवं राजनैतिक पुनर्निर्माण की हिमायत करते हैं तथा समाज में जो कुछ बेहतर किया जाए उसका समान वितरण चाहते हैं। आधुनिकीकरण की कमियों को तो इस विचार के पोषक उद्घाटित करते हैं लेकिन विकास योजनाओं के लिए धनराशि की सहायता या अन्य विकल्प सुझाने में ये असमर्थ रहे हैं।

3. आत्मनिर्भर बनाना - तीसरी विचारधारा के लोगों का मत है कि व्यक्तिगत एवं सामुदायिक रूप में लोगों को शोषण मुक्त करके स्वतन्त्रता देना, उनको आत्मनिर्भर बनाना एवं उनका विकास करना है यही विकास का लक्ष्य होना चाहिए। यह स्वतन्त्रता के सिद्धान्त पर आधारित विचार मानता है कि लोग पूरी तरह मानव बनना चाहते हैं, जिसका मतलब है स्वतन्त्र एवं आत्म निर्भर होना। यदि ऐसा कर दिया जाए तो उनमें यह आन्तरिक क्षमता है कि वे स्वयं अपना विकास कर सकते हैं। बाहरी एवं आन्तरिक दबाव, उनकी इस योजना या क्षमता को पल्लवित एवं पोषित होने में बाधक है। इसलिए विकास का अर्थ यह है कि शोषण एवं दबाव से लोग मुक्त किये जाएं।

इस विचार के अनुसार पश्चिमी सरकारें एवं निगमें ही इस शोषण एवं दबाव की स्त्रोत हैं। उनकी उत्प्रेरणा अधिक लाभ कमाने से जुड़ी हुई है जिसका सीधा अर्थ है, श्रमिक, उपभोक्ता एवं अन्य का इस प्रक्रिया में शोषण होना। इसमें यह भी माना गया हैं कि शोषणकर्ता इस तथ्य से सजग नहीं है कि उनका कृत्य गैर मानवीय है, जब तक शोषण एवं शोषित दोनों है कोई भी स्वतन्त्र नहीं है। इस प्रकार आधुनिकीकरण एवं आलोचनात्मकता से हटकर स्वतन्त्रता की अवधारणा वाले लोग भौतिक एवं अभौतिक या आर्थिक एवं आध्यात्मिक दोनों के विकास की बात करते हैं। इन तीनों विचारों आधुनिकीकरण, आलोचनतात्मक एवं स्वतन्त्रता पर आधारित शोषण मुक्त समाज की संरचना से हटकर 1970 के दशक की विकास अवधारणा को देखेंगे तो इसमें लोगों की मूल आवश्यकताओं को पूरा करने के उपाय विकास माने जाते थे। यह विकास दीर्घकालीन हो, महिलाओं को विकास से जोड़ा जाए। इस प्रकार विकास की चर्चा की जाती थी। दुनिया में गरीबों की मौलिक जरूरतें पूरी करना एवं पर्यावरण की परिस्थितियों को उनके अनुसार डालना आदि विकास के मुद्दे थे। यह भी माना गया कि विकास प्रक्रिया में महिलाओं को अवहेलना विभिन्न विकास योजनाओं की सफलता पर प्रश्नचिन्ह लगाती है।

2.5 विकासात्मक संचार

विकासात्मक या विकास संचार के बारे में भी भिन्न-भिन्न धारणाऐं हैं। कुछ विद्वान मानते है कि एक संगठित सूचना प्रवाह या प्रणाली ही विकास संचार है। कुछ लोग इससे विस्तृत परिदृश्य को सामने रखकर बात करते हैं। ऐसे लोग मानते है कि विकास संचार को संस्कृति एवं सामाजिक परिवर्तनों के विविध पक्षों से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। जो लोग विकास संचार का अर्थ संदेश प्रसारण या संदेश देने की प्रक्रिया तक सीमित मानते है, वे इसे आधुनिकीकरण की एक प्रक्रिया समझते हैं। जिसे दूसरे शब्दों में प्रौद्योगिकी का प्रसार एवं उसे अपनाया जाना, लोगों में कुछ मूल्यों, पद्धतियों एवं व्यवहारों का समावेश करना है। संचार या सूचना लोगों को उत्प्रेरित करने वाले औजार हैं, जो कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में सहायक हो सकते हैं। यह उत्प्रेरक संचार, लोगों तक विकास सम्बन्धी विचारों एवं प्रौद्योगिकी को लक्षित 'ऑडियन्स' या लोगों तक पहुंचाती है। इस प्रकार आधुनिकीकरण प्रारूप में विकास संचार प्रेरित करने वाली 'मार्केटिंग' या विक्रय प्रक्रिया है।

लेकिन इस विकास संचार के मार्केटिंग मॉडल्स के आलोचक इसे पश्चिमी प्रौद्योगिकी, वाली विचारधारा मानते हैं। उनका मत है कि लोगों का इस मॉडल के प्रति प्रेरित करने वाले अभियान लोगों का इस ओर ध्यान नहीं दिलाते जिस सांस्कृतिक संदर्भ में वे जाते हैं। इनका यह

भी मानना है कि विशाल विकास परियोजनाओं में भारी धनराशि नियोजित की जाती है। इसलिए ये परियोजनायें जिनको लक्षित कर तैयार की जाती है, उनका अधिक हित नहीं करती है। उनका कहना है कि जिन विकासशील देशों में यूरोपीय लोग कार्य करते हैं, उसके लिए इन देशों में विशेषज्ञता उपलब्ध है। इसके अलावा इन विकासशील देशों के भ्रष्ट नेता एवं सरकारी कर्मचारी, विदेशी सहायता के नाम पर धन कमाते हैं। इसलिए गरीबी एवं अमीरी के बीच का फासला बढ़ता है। इसलिए इन आलोचकों का मत है कि विकास संचार एक मत निर्माण की प्रक्रिया है। यह किसी भी देश के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित होनी चाहिए तथा किसी देश की संस्कृति के प्रति संवदेनशील होनी चाहिए। यह मात्र सूचनाऐं देने एवं नवीनता को समाहित करने मात्र तक की प्रक्रिया नहीं है। विकास संचार प्रक्रिया में समाज के उन गरीब, कमजोर, महिलाओं एवं अन्य सब की भागीदारी होनी चाहिए जो सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में एक कोने में ढकेल दिए जाते हैं। इस प्रकार विकास संचार का कार्य मात्र सूचना प्रसारित करना ही नहीं बल्कि संचार के संगठनात्मक मूल्यों को ध्यान में रखना भी है। विकास संचार को सामाजिक कार्यों, सामुदायिक मनोविज्ञान, सामुदायिक संगठन एवं अन्य क्षेत्रों से जो लोगों को शक्तिशाली बनाते हैं, उनसे अवधारणाऐं एवं उनके क्रियान्वयन करने की प्रेरणा लेने की जरूरत है।

स्वतन्त्रता की विचारधारा वाले लोग विकास संचार को अन्य रूप में परिभाषित करते हैं। इनका मत है कि शोषण एवं दबाव से मुक्ति या स्वतन्त्रता, समुदाय एवं व्यक्ति को शक्तिशाली बनाना ही विकास संचार का लक्ष्य होना चाहिए। इसलिए विकास संचार, संदेशों का आदान-प्रदान नहीं बिल्क यह व्यक्ति एवं समाज को ऊंचा उठाने की प्रक्रिया है। इस प्रकार समाज का उत्थान होने से यह अपने भविष्य के निर्माण करने की दिशा में स्वतन्त्र होगा। इसमें हर व्यक्ति की भागीदारी होनी चाहिए। यह माना गया है कि जब लोगों को शोषण के स्त्रोत एवं अपनी शक्ति के स्त्रोत का ज्ञान हो जाएगा तो वे अपनी समस्याओं का निदान स्वयं करने लगेंगे। लोगों के बीच या छोटे समूहों के बीच जब संवाद कायम होगा तो लोगों में अपनी शक्ति के प्रति जागृति आएगी। यह संचार प्रक्रिया, विकास में भागीदारी निभाने वाले लोगों के सामने उन मुद्दों को उद्घाटित करेगी, जो उनके लिए अहम है।

कुल मिलाकर इन विचारधाराओं पर ध्यान दें तो यह स्पष्ट होगा कि विकास संचार प्रक्रिया में आमतौर से किसी एक स्तर पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है और कई बड़े मुद्दों की अवहेलना कर दी जाती है। जबकि होना यह चाहिए कि विकास के सभी प्रासंगिक पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाए। हमें इन स्थानीय एवं वंचित लोगों पर भी ध्यान देना होगा जो आधुनिकीकरण की हवा से अछूते है और वे इस आधुनिकीकरण की विचारधारा में संशोधन चाहते हैं।

2.6 ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

सम्पूर्ण इतिहास पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट होता है कि कोई भी एक देश एवं संस्कृति कभी सम्पूर्ण ज्ञान का भंडार नहीं रही, बल्कि दुनिया के विभिन्न देशों एवं संस्कृतियों ने विविध प्रकार के विचारों को जन्म दिया एवं समय के साथ में विचार एकत्रित होते गये तथा एक क्षेत्र से ज्ञान दूसरे क्षेत्र की ओर प्रवाहित होता रहा। एक देश में लोगों से दूसरे देश के लोगों तक फैलता रहा। लेकिन यह भी सही है कि कुछ राष्ट्रों ने दूसरों की तुलना में तेजी से प्रौद्योगिकी का ज्ञान

हासिल किया एवं तेज गति से विकास किया। उन्होंने आमतौर से शक्ति अधिक प्राप्त की और अन्य देशों के धन एवं विकास पर अपने ज्ञान के बल पर नियन्त्रण करने की चेष्टाऐं की।

प्राचीन इतिहास की समीक्षा की जाए तो यह तथ्य सामने आता है कि 16वीं सदी से 19वीं सदी तक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन लोगों ने दुनिया में अपना वर्चस्व जमाया, जो पहले अग्रणी नहीं थे। ईसा से लगभग 3500 वर्ष एवं 1500 वर्ष पूर्व मेसोपोटेमिया (पश्चिम एशिया)की नदी घाटी सभ्यता, मिस्त्र (उत्तरी अफ्रीका), सिन्धु घाटी (भारत)एवं चीन, प्रौद्योगिकी, वास्तुकला एवं कलाओं में अपना वर्चस्व बनाए हुए थे। रोमन सभ्यता (500 ईसा पूर्व), जिसके बाद यूनान एवं फिर यूरोप का प्रादुर्भाव हुआ।

यूरोप में व्यापारी (मर्चेन्ट)वर्ग एवं इस वर्ग का समुद्र के द्वारा व्यवसाय, प्रौद्योगिकी ज्ञान एवं शक्ति का सन् 1500 इसवीं के आसपास उदय हुआ। 16वीं सदी से 20वी सदी के आरम्भ तक इन्होंने अपनी शक्ति से विस्तारवाद एवं शोषण को बढ़ाया दुनिया के दक्षिण के दो तिहाई, या तीसरी दुनिया के करोड़ों लोगों का दमन किया। यूरोपीय विस्तारवाद की पहली अवधि 19वीं सदी के प्रारम्भ में खत्म हुई। अमेरिका आदि का उपनिवेशवाद समाप्त हुआ। लेकिन इनका साम्राज्यवाद बिना रुकावट के अफ्रीकी एवं एशियाई देशों में जारी रहा। उपनिवेशों में पनपता असंतोष एकत्रित होकर फूटने के कगार पर आ गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद 1960 के दशक तक एशियाई एवं अफ्रीकी उपनिवेशों ने स्वतन्त्रता प्राप्त की।

2.7 द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का परिदृश्य

विकास प्रक्रिया तो संसार की संरचना के साथ ही शुरू हो गई थी लेकिन विकास के जिस दृष्टिकोण को आधुनिक अर्थ में लिया जाता है, यह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शुरू हुआ। यह वह समय था, जबकि दुनिया में कभी भविष्य में युद्ध न हो इसके लिए सब चिन्तित होने लगे। इसके बाद तीसरी दुनिया के देशों में राजनैतिक जागृति आरम्भ हुई। आज हम जिन्हें विकासशील देश कहते हैं, उनमें अधिकांश को साम्राज्यवादियों या उपनिवेशवाद से स्वतन्त्रता मिली। ये नव स्वतन्त्र राष्ट्र ही तीसरी दुनिया है राष्ट्र संघ की स्थापना हुई। यही से सदियों की गुलामी से ग्रस्त हुए इन देशों को आर्थिक सहायता देकर विकास की ओ उन्मुख करने के प्रयास जारी हुए। उसके बाद तथा अन्य गैर सरकारी संस्थाओं का भी निर्माण हुआ। 1941 में विंस्टन चर्चिल एवं फ्रेंकलिन रूजवेल्ट ने अटलांटिक चार्टर पर हस्ताक्षर किए। एक बेहतर दुनिया जिसमें आर्थिक सहयोग के द्वारा व्यापार, श्रम- स्थितियों एवं विश्व शान्ति के लिए प्रयास करने की बात कही गई। 1943 में युद्ध शरणार्थियों को सहायता देने के लिए 47 राष्ट्र ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ बना। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद बने लीग ऑफ नेशन्स के स्थान पर संयुक्त राष्ट्र संघ बनाया गया। यू.एन.ओ. में इकोनोमिक एवं सोसियल कौंसिल बनी। इन्टरनेशनल बैंक फॉर रिक्न्स्ट्रक्शन डेवलपमेन्ट की स्थापना की गई जो अब विश्व बैंक के नाम से जाना जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (यूनेस्को), यूनिसेफ (यूनाइटेड नेशन्स चिल्ड्रन्स फण्ड)आदि कई संस्थाओं ने विकास संचार की परियोजनाऐ बनाई। फूड एण्ड एग्रीकल्चरल ऑर्गेनाईजेशन (FAO)युनाइटईड नेशन्स डेवलपमेन्ट प्रोग्राम, युनाईटेड नेशन्स एण्ड डेवलपमेन्ट प्रोग्राम यूनाइटईड नेशन्स एज्यूकेशनल एण्ड कल्चरल आर्गेनाईजेशन।

इस प्रकार तीसरी दुनिया के देशों की स्थितियों में सुधार एवं उनके विकास को गीत देने के प्रयत्नों के अलावा तत्कालीन अमेरिकी प्रेजिडेन्ट ट्रूमेन ने 1949 में चार सूत्री कार्यक्रम का प्रस्ताव रखा। यह तीसरी दुनिया के विकास का दृष्टिकोण लेकर बनाया गया कार्यक्रम था। प्रस्ताव में कहा गया कि 'दुनिया के आधे लोग अत्यन्त दुर्दशा की स्थितियों में जी रहे हैं। उनको जरूरत के अनुसार भोजन उपलब्ध नहीं है। वे बीमारियों के शिकार है। उनका आर्थिक जीवन आदिमकालीन एवं रूका हुआ है। उनकी गरीबी उनके लिए एवं समृद्ध क्षेत्रों के लिए एक चेतावनी है। इतिहास में पहली बार, मनुष्यों को ज्ञान एवं कुशलता उपलब्ध हुई है जो इन लोगों के कष्ट निवारण कर सकती है। उसमें पहला सूत्र था कि अमेरिका, संयुक्त राष्ट्र को समर्थन देगा एवं इसके निर्णयों को शक्ति प्रदान करने के लिए मदद करेगा। दूसरा, अमेरिका, विश्व अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए निरन्तर प्रयास करता रहेगा। तीसरा, स्वतन्त्रता प्रेमी राष्ट्रों को आक्रमणों के खिलाफ शक्ति प्रदान करता होगा। चौथा, अमेरिका नया आधुनिकीकरण कार्यक्रम बनायेगा तथा पूंजी नियोजन करेगा।'

इस परिप्रेक्ष्य में, 195 एवं 1960 के दशक में आर्थिक विकास सहायता क लिए तीसरा दुनिया की ओर ध्यान दिया गया। इससे पूर्व, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सहायता का रुख यूरोप की तरफ रहा। 1980 के दशक में ढांचागत संयोजन, योजना एवं विकास की बात की गई। 1990 में मानव संसाधन विकास को प्रमुखता दी गई। इस प्रकार का दौर चला।

2.8 विकास के मार्ग में अवरोध

विकास के मार्ग में छह कारक अवरोधक थे। ये हैं ज्ञान एवं कुशलता का अभाव, विकास योजना प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी का नहीं होना, आवश्यक वित्तीय एवं अन्य सामग्री की कमी, तैयार उत्पादों को बेचने के लिए बाजार का विकास नहीं होना, ढांचागत वितरण एवं सूचनाओं का अभाव, कृषि मौसम की जानकारी का अभाव तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार अवसरों का न होना। ये विकास के मार्ग के अवरोधक रहे हैं। इस सन्दर्भ में विश्व बैंक ने विकास के लिए रची गई व्यूह रचना की पुन: समीक्षा की आवश्यकता प्रतिपादित की। इन अवरोधकों को दूर करने के प्रयास तो किए गये लेकिन वे टुकड़ों में थे। इसलिए 'इन्टीग्रेटेड रूरल डेवलपमेन्ट' अर्थात् समग्र ग्रामीण विकास का प्रश्न पैदा हुआ। साथ ही साथ आवास, शिक्षा एवं रोजगार जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को प्राथमिकता देते हुए विकास कार्यक्रम बनाने की बात सामने आई।

विकास संचार को समर्पित विद्वानों ने कमजोर लोगों की जरूरतों के अनुरूप विकास परियोजनाओं को प्रासंगिक बनाने की हिमायत की। इसलिए विकास को सुदृढ़ करने की ओर केन्द्रित संचार का विचार उत्पन्न हुआ। आम आदमी के ज्ञान में वृद्धि, साक्षरता आदि के साथ तकनीकी ज्ञान तथा भाषा के विकास में संलग्न लोगों के लिए सरल एवं ग्रहण करने योग्य बनाने के प्रयास शुरू किए गए।

2.9 21वीं सदी की विकासात्मक चुनौतियां

वैश्वीकरण की प्रवृत्ति के विकास के लिए संचार एवं राजनैतिक, आर्थिक तथा वैचारिक प्रक्रियाओं के बीच एक सम्बन्ध जोड़ दिया है। इससे विकासात्मक संचार के लिए नई व्यूह रचना किये जाने की स्थितियां बन गई है। साथ ही वैश्वीकरण से उत्पन्न विश्व समाज या नेटवर्क से सन्दर्भो को भी ध्यान में रखना जरूरी हो गया है। इस सूचनातन्त्र से जुड़े समाज में भी गरीबों

और अमीरों के बीच की खाई चौड़ी होगी। इसमें जिन लोगों की 'साईबर स्पेश' या आधुनिकतम सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुंच वाले लोगों एवं दूसरे पहुंच से दूर लोगों के बीच फासला बढ़ता जाएगा। इस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से दुनिया के देशों की सीमाऐं भले ही अप्रासंगिक हो जाए लेकिन गरीब और अमीर के बीच का विभाजन कम नहीं होगा।

अफ्रीका का बड़ा हिस्सा, दक्षिण अमेरिका एवं एशिया पूरी तरह विश्व के अर्थव्यवस्था नेटवर्क से अलग- अलग पड़ जाएंगे। इसे लोग 'डिजिटेल डिवाईड' की संज्ञा देते हैं जो इस प्रकार एक विभाजन रेखा खींचता है जिसमें सूचना के इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क तक पहुंच वाले लोगों तथा उससे दूर लोगों को अलग- अलग खेमों में बांट देता है। ऐसे में 21 वीं सदी में विकास के लिए संचार का परिवेश भी बदला है और नई चुनौतियां बदले परिवेश के साथ आना स्वाभाविक है।

2.10 सारांश

जैसे कि चर्चा की जा चुकी है, विकास की आधुनिक अवधारणा दूसरे विश्वयुद्ध के बाद की देन है। इस विश्वयुद्ध ने राजनैतिक चेतना को गति दी और तीसरी दुनिया के देश, जिन्हें विकासशील देश कहा जाता है उनको उपनिवेशवादी शासन से मुक्ति मिली। प्रयुक्त राष्ट्र संघ का निर्माण हुआ और इसके साथ ही तीसरी दुनिया के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। तीसरी दुनिया की खराब हालत देखकर संयुक्त राज्य अमेरिका के तत्कालीन प्रेजीडेंट ट्रूमैन ने चार सूत्री कार्यक्रम का प्रस्ताव रखा। इसका लक्ष्य पूंजी नियोजन ने द्वारा तीसरी दुनिया की तकलीफों को दूर करना था जो गैर साम्यवादी या स्वतन्त्रता प्रेमी राष्ट्र थे उन्हें विकास के लिए सहायता क़ा सिलसिला शुरू हुआ

उपनिवेशवाद की समाप्ति के बाद तीसरी दुनिया में विशेषज्ञता या विकास के लिए जरूरी ढांचे के लिए आधारभूत संरचना अभाव था। ऐसे में लोगों की जिन्दगी में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने की आवश्यकता थी इसलिए 7960 के दशक में प्रौद्योगिकी स्थानान्तरण पर बल दिया गया। लेकिन यह काफी न था। यह भी आवश्यक था कि नई प्रौद्योगिकी को सफलतापूर्वक क्रियान्ययन में लाने के लिए विचारों का संचार एवं कुशलता का प्रसार भी किया जाये। इस दिशा में प्रसार प्रणाली (Extension system)ने यह कोशिश की कि लोगों के लिए कौन-सा नवीनीकरण बेहतर है और उसका चयन करना ही बुद्धिमत्ता है। इस प्रकार विकास को गति देने वाली एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए गतिशील एजेन्सियों ने एक तरफा प्रभावित करने वाले संदेशों का प्रवाह शुरू किया। इसके बाद 1960 से सदी के अन्त तक विकासात्मक संचार के क्षेत्र में कई शोध किए गए एवं नई-नई अवधारणाएँ पैदा हुई। 21वीं सदी के आरम्भ में वैश्वीकरण एवं सूचना टेक्नोलॉजी के क्रान्तिकारी परिवर्तनों ने विकासात्मक संचार के लिए नई उलझनें एवं चुनौतियां प्रस्तुत की है। इस दिशा में विकास के लिए संचार की दिशा में नया सोच और नई शोध के लिए नई चुनौती है जिस पर मंथन जारी है।

2.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. तीसरी दुनिया के देश या विकासशील देशों की अवधारणा को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
2. संचार के अर्थ एवं विकास में महत्व पर प्रकाश डालिए।

3. क्या आप इस विचार से सहमत है कि 'विकास की अवधारणा कोई नया विचार नहीं है तथा इसके लिए कोई विश्वव्यापी एक मार्ग नहीं है बल्कि हर समाज की अपनी परिस्थितियों के अनुकूल विकास की व्यूह रचना करना ही मार्ग है।' रेखांकित कीजिए।
4. 1960 के बाद की विकास अवधारणा या आधुनिक सन्दर्भो में 'विकास' के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
5. द्वितीय विश्वयुद्ध को राजनैतिक एवं विकासात्मक प्रयासों का विवेचन कीजिए।
6. विकास के मार्ग में आए अवरोधों की विस्तार से विवेचना कीजिए।
7. इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में सूचना प्रौद्योगिकी के कारण विकास संचार के क्षेत्र में क्या परिवर्तन आए हैं?
8. 21वीं सदी की विकासात्मक संचार चुनौतियों को रेखांकित कीजिए?
9. विकास संचार की विविध विचारधाराओं का विश्लेषण कीजिए।

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. Shrinivas R. Mellocate & H.Leslie Steeves (2001), Communication for Development in the Third World : Theory & Practice of Empowerment : Stage Publications, New Delhi.
2. Dr. Baldev Raj Gupta (1977): Mass Communication & Development, Vishvavidyalaya Prakashan Varanasi.
3. Agunga R.A. (1977), Developing the Third World: A communication Approach : Nova Science Publications, Commack, NY.
4. Furtado, Celso (1946): Development and under development : Berkeley University, California Press.

इकाई 3 तीसरी दुनिया में विकास की प्रक्रिया एवं सामाजिक परिवर्तन

(Development Process in the Third World and Social Change)

(ईकाई की रूपरेखा)

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 विकास की प्रक्रिया

3.3 विकासात्मक जनसंचार की भूमिका

3.4 विकास और सामाजिक परिवर्तन

3.5 विकास की प्राथमिकताएँ एवं भारतीय संदर्भ

3.6 विकास प्रक्रिया की नई अवधारणाएँ

3.6.1 भारतीय परिप्रेक्ष्य

3.7 विकास प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन की पृष्ठभूमि

3.8 विकास के प्रमुख मुद्दे

3.9 विकास के मापदण्ड

3.10 सारांश

3.11 निबंधात्मक प्रश्न

3.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई 'तीसरी दुनिया में विकास की प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन' की है। विकास की प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन एक महत्वपूर्ण पहलू है।

- इस इकाई के अध्ययन के बाद आप यह जान सकेंगे कि विकासात्मक जनसंचार' की धारणा ने सामाजिक विकास में क्या भूमिका निभाई है?
- आप यह भी बता सकेंगे कि तीसरी दुनिया की विकास जरूरतें क्या रही हैं? और उनकी इन जरूरतों को पूरा करने में विकासाताक जनसंचार का क्या योगदान रहा है।
- विकासात्मक जनसंचार के सन्दर्भ में किये गए प्रयत्न कहां तक सफल रहे, इसका विश्लेषण भी कर सकेंगे।
- विकासात्मक जनसंचार के उपयोग ने तीसरी दुनिया के देशों को किस प्रकार के अनुभव प्रदान किये है। इसे रेखांकित कर सकेंगे।

- भारतीय विकास प्रयासों में विकासात्मक जनसंचार की भूमिका को भी आप स्पष्ट कर सकेंगे।
- तीसरी दुनिया में अब तक हुए परिवर्तनों में विकासात्मक जनसंचार की अवधारणा कहां तक सफल रही है और इसका उपयोग किस प्रकार हुआ है? इसकी विवेचना कर सकेंगे।
- विकासात्मक जनसंचार का भविष्य क्या है? इस तथ्य से परिचित हो सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

जनसंचार और विकास की विभिन्न अवधारणाओं का पिछली इकाईयों में विवेचन किया जा चुका है। यह भी बताने की चेष्टा की जा चुकी है कि विभिन्न विकास और जनसंचार विशेषज्ञों ने इन दोनों पहलुओं को किस प्रकार जोड़ने की चेष्टा की है। दूसरे महायुद्ध के पश्चात् विभिन्न उपनिवेशवाद से मुक्त देशों को आर्थिक एवं सामाजिक स्थितियां किस प्रकार रही, इस तथ्य से भी आप परिचित हो चुके हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने इन देशों की स्थितियों का आकलन करके किस प्रकार विभिन्न संस्थाओं के द्वारा इन 'तीसरी दुनिया' के देशों की काया पलटने की दिशा में कदम उठाए? विकास के कार्यक्रमों के सन्दर्भ में विकासात्मक जनसंचार को प्राथमिकता दिए जाने का कारण यह था कि इसके बिना वांछित परिणाम प्राप्त करना सम्भव नहीं था। यह विश्व स्तर पर अनुभव किया गया कि आर्थिक और सामाजिक विकास के लक्ष्यों को पाने एवं विकास को एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य में गति देने के लिए हर तीसरी दुनिया के देशों में लोगों की भागीदारी जरूरी है और इसमें विकासात्मक जनसंचार एक अहम भूमिका निभा सकता है।

समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया को पुष्ट करने के लिए कुछ संस्थागत कदम उठाये गये। एक ओर जहां विभिन्न परियोजनाओं के द्वारा आर्थिक विकास एवं सामाजिक विकास के कार्यक्रम बने वही जनसंचार को पुष्ट करने के लिए यूनेस्को, एशियन मास कम्यूनिकेशन रिसर्च एण्ड इन्फोर्मेशन सेन्टर (ए.एम.आई.सी.), प्रेस फाउन्डेशन ऑफ एशिया (फिलीपीन्स), कम्यूनिकेशन एसीसटेन्स फाउंडेशन एण्ड ग्राफिक मीडिया डेवलपमेन्ट सेन्टर (नीदरलैण्ड), इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन तथा नेशनल कौंसिल फोर डेवलपमेन्ट कम्यूनिकेशन (भारत)जैसी संस्थाओं को स्थापित किया गया।

इन संस्थाओं की स्थापना करते समय यह स्पष्ट रूप से एहसास किया गया कि तीसरी दुनिया में विकास के द्वारा परिवर्तन की प्रक्रिया को सुदृढ़ आधार देना है तो जनसंचार की व्यवस्था को बेहतर बनाना आवश्यक होगा क्योंकि यह माना गया कि विकासात्मक जनसंचार को एक कला या विज्ञान के रूप में विकसित किए बिना विकास के लिए जरूरी जनसंचार की संरचना सम्भव नहीं होगी। आर्थिक समृद्धि, सामाजिक समानता एवं बेहतर समाजों के निर्माण के साथ-साथ गरीबी और समस्याओं से ग्रस्त तीसरी दुनिया के लोगों की क्षमताओं का उपयोग सम्भव नहीं था। इसलिए विकास को गति देने और तीसरी दुनिया में सामाजिक परिवर्तन के बड़े लक्ष्य को पाने के लिए विकासात्मक जनसंचार की धारणा को मजबूत आधार प्रदान करने की चेष्टाऐं निरन्तर की गई।

3.2 विकास की प्रक्रिया

मानव-समाज के क्रमिक विकास की सम्पूर्ण मात्रा में विभिन्न विकासात्मक प्रक्रियाऐं अनवरत चली आ रही हैं। समाज के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में जारी इन प्रक्रियाओं का आधार संचार को माना जाता है क्योंकि यह समाज को जोड़ने, उसकी क्षमताओं को गति देने एवं बेहतर रूप प्रदान करने में सदैव सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। गत सदी में अनेक वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय परिवर्तन हुए है। सदी के अन्तिम दशकों में इन परिवर्तनों और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास की गति में तेजी आई। इन परिवर्तनों ने सामाजिक ढांचों एवं समाज की विभिन्न प्रक्रियाओं को एक नई जमीन और नया आयाम दिया है। सामाजिक प्रक्रिया बदली हैं। संचार प्रौद्योगिकी की क्रान्ति ने दुनिया भर के देशों को एक-दूसरे के बहुत करीब पहुंचा दिया है। हर देश की सीमाऐं सिकुड़ी है और पूरी दुनिया के लोगों एवं शक्तियों का आदान-प्रदान बढ़ा है। विचारों में परिवर्तन आया है।

विकास के पूरे दौर पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट है कि विकासात्मक जनसंचार के प्रयत्नों ने तीसरी दुनिया के समाजों की प्रवृत्तियों एवं व्यवहार में हलचल मचाने और परिवर्तन करने की प्रक्रिया को बल दिया है। विकास-प्रक्रिया तो एक प्रवाह है। कोई देश चाहे विकसित हो या विकासशील, उसकी समस्याऐं एवं चिंतायें भिन्न हो सकती है, लेकिन विकास प्रवाह निरंतर जारी रहता है। यह रुकता नहीं। इसकी धीमी या तेज हो सकती है। पश्चिम के देश हो या पूर्व के या या विकासशील तीसरी दुनिया के राष्ट्र हों, राष्ट्रीय विकास को गतिमान बनाने के लिए उनकी विकासात्मक धारणाओं को लक्षित विकास की ओर मोड़कर उसमें भागीदारी को प्रोत्साहित करना अनिवार्य माना गया है।

विकास प्रक्रिया की पहली शर्त है लोगों की धारणाओं या जनमत को किसी विकास प्रक्रिया के अनुकूल दिशा देना। आधुनिकीकरण या विकास योजनाओं की सफलता इसी जनाधार पर टिकी रहती है। ज्ञान को स्थानान्तरित करना, प्रौद्योगिकीय अनुभव देना, किसी भी नई योजना या विकास कार्य या प्रक्रिया के लिए अनुकूल वातावरण या जमीन तैयार करना और परिवर्तन की किसी भी प्रक्रिया को स्थायित्व देने का प्रयत्न करना आदि ऐसे कार्य या प्रक्रियाऐं है जो विकास प्रक्रिया की अंग हैं।

3.3 विकासात्मक जनसंचार की भूमिका

जैसा कि बताया जा चुका है कि तीसरी दुनिया के अविकसित या विकास की ओर अग्रसर देशों में आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास को गति देने के लिए पूरे समाज को सक्रिय बनाने और इच्छित परिवर्तन लाने के लिए तैयार करना आवश्यक समझा गया। विकास प्रक्रिया या योजना का एक दृष्टिकोण और पहलू होता है जबकि इस प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए दूसरा दृष्टिकोण और प्रयास चाहिए। जनसंचार की भूमिका एक ऐसे ही दृष्टिकोण पर आधारित हो जो किसी भी योजना या विकास कार्य के लिए जमीन तैयार करता है। विकासात्मक जनसंचार इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन में एक उत्प्रेरक (केटेलिस्ट)या एजेन्ट की भूमिका का निर्वाह करता है। जनसंचार का यह कार्य भी होता है कि वह विकास की क्रमिक यात्रा में उससे जुड़े पक्षों का

निरीक्षण करे और उन्हें 'रिकार्ड' करे ताकि विकास-प्रक्रिया को ऊर्जा प्रदान करने एवं आगे बढ़ाने में वह अपनी भूमिका निभा सके।

जनसंचार का कार्य कहीं शून्य में सम्पन्न नहीं होता। आर्थिक अवसर और विकास हो या राजनैतिक व्यवस्था, इनसे जुड़े विकास के विस्तृत फलक पर जनभागीदार को विस्तार देना, नए लक्ष्यों एवं नए विचारों को गतिशील बनाना आदि जनसंचार के उद्देश्य है जो कि विकास के लिए जरूरी मानवीय क्षमताओं को विकास की ओर उन्मुख करने एवं प्रेरित करने के कार्यो को सम्पन्न करता है।

3.4 विकास और सामाजिक परिवर्तन

सामाजिक गतिशीलता (मोबिलिटी), भौगोलिक गतिशीलता एवं मनोवैज्ञानिक गतिशीलता को सामाजिक परिवर्तन से सम्बद्ध माना गया है। लर्नर नामक विद्वान् ने अपनी पुस्तक 'पासिंग ऑफ ट्रेडिशनल सोसायटी' (1958)में लिखा है कि सामाजिक परिवर्तन लोग में छह संस्थाओं की प्रमुख भूमिका होती है - (1)आर्थिक व्यवस्था (2)पुलिस (3)परिवार (4)समुदाय (5)विद्यालय और (6)जनसंचार। विकास प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन, एक ही सिक्के के दो पहलू है। विकास प्रक्रिया से समाज बदलता है और बिना सामाजिक परिवर्तन के विकास का मार्ग प्रशस्त नहीं होता। एवरेट के रोजर्स ने अपनी पुस्तक 'डिफ्यूजन ऑफ इनोवेशन्स' (1962)में बताया है कि 'नवीनीकरण' (इनोवेशन्स)का प्रसार करना या नवीनीकरण को विस्तार देना (डिक्यूजन), एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे अन्ततत्तोगत्वा नवीनीकरण का समाज में विस्तार होता है। जब समाज में अधिकांश लोग नये विचार या व्यवहार (प्रेक्टिस)को अपना लेते है तो नवीनीकरण समाज का अंग बन जाता है।

इस नवीनीकरण को स्वीकार या अस्वीकार करने वाले चार प्रकार के लोग होते हैं - (1)सक्रिय रूप से अपनाने वाले व्यक्ति, (2)निष्क्रिय रूप से मानने वाले व्यक्ति, (3)किसी विचार को सक्रिय रूप से नकारने वाले व्यक्ति तथा (4)किसी विचार का असक्रिय रूप में अस्वीकार करने वाले व्यक्ति। रोजर्स का तर्क है कि जनसंचार का सबसे बड़ा काम किसी विचार के प्रति अपनाये जाने के स्तर पर चेतना जागृत करना है और जनसंचार के द्वारा प्रसारित सूचनाओं के प्रभाव की भूमिका मूल्यांकन स्तर पर होती है।

परिवर्तन या विकास का दायरा व्यापक है। सामाजिक परिवर्तन और विकास का विश्लेषण आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न पक्षों के सन्दर्भ में करना सम्भव है। जनसंचार की भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। राजनैतिक सन्दर्भ को लेकर चलें तो एक विद्वान ने यह मत प्रकट किया है कि राजनैतिक समाजीकरण एवं जनभागीदारी, किसी भी जनतन्त्र या राष्ट्र निर्माण की दिशा में विकास की पहली जरूरतें हैं। जनसंचार का जहां तक प्रश्न है यह राजनैतिक यथार्थ को उद्घाटित करता है एवं राष्ट्रीय हितों को राजनैतिक-निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी के साथ दृढ़ता प्रदान करता है। राष्ट्र का निर्माण करना किसी एक व्यक्ति के द्वारा मुमकिन नहीं होता। इसमें समाज और सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता होती है। जनसंचार लोगों को जोड़ता है और उनकी एकजुटता का पोषण करता है। राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तन का सुधार में जनशक्ति के द्वारा सहयोग करता है।

विकास प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में तीसरी दुनिया के किसी एक ग्रामीण क्षेत्र या गांव का उदाहरण ले तो यह व्यक्त होगा कि विकसित राष्ट्र जहां विकास-संस्कृति बहुत आगे बढ़ गई है, उनकी तुलना में तीसरी दुनिया का अधिकांश ग्रामीण इलाका परम्परागत सोच और बने बनाए एक ढांचे में ढले हुए हैं। ऐसे में जहां विकास प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन को गतिशील बनाना है तो उस क्षेत्र-विशेष में विस्तार से लोगों को उनकी आम जरूरतों एवं उनके समक्ष उपलब्ध अवसरों के बारे में उन्हें जागत करना होगा। इससे आम लोगों में निर्णय लेने की प्रक्रिया सहज बनेगी। वे नए विचारों और कार्यो को स्वीकार कर व्यवहार में ढालने का प्रयास करेंगे। विकास प्रक्रिया की प्रारम्भिक धाराणऐं आर्थिक विकास पर केन्द्रित रही है। आर्थिक विकास के प्रयासों के दौरान यह अनुभव किया गया है कि एक सक्रिय राष्ट्रीय प्रणाली विकसित किए बिना इच्छित परिणाम पाना मुमकिन नहीं है।

इसलिए यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि यह राष्ट्रीय प्रणाली किस प्रकार से तैयार की जाए तथा इसके लिए व्यूह रचना क्या हो? यहां विकास प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन के लिए जनसंचार की एक प्रणाली तैयार करने का विचार प्रबल हुआ। एक सूचना का निर्माण करके राष्ट्रीय स्तर पर विकास प्रयासों तथा विदेशी आर्थिक प्रयासों और राष्ट्रीय प्रयासों के बीच जनसंचार एक पुल का निर्माण करने के समान सिद्ध हो सकता है। जनसंचार या विकासात्मक जनसंचार की सम्भावनाओं को इस प्रकार मान्यता देकर विकास को व्यापक फलक देने, लोगों का ध्यान इस ओर केन्द्रित करने, लोगों की आकांक्षाओ में वृद्धि करने तथा विकास के लिए अनुकूल वातावरण की सृष्टि की जा सकती है।

इस प्रकार विकास- प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन ये दो पहलू ऐसे हैं जो एक दूसरे के पूरक हैं। बिना विकास प्रक्रिया के सामाजिक परिवर्तन नहीं होता और बिना सामाजिक जीवन में विचारों और प्रवृत्तियों को बदले विकास-प्रक्रिया को प्रवाह नहीं मिलता। इस परिप्रेक्ष्य में विकास को समय-समय पर परिभाषित करने के प्रयास किए गए हैं।

गरीबी, असमानता और बेरोजगारी को दूर करना विकास-प्रक्रिया के मूल कार्यो में शामिल किया गया और यह माना गया है कि विकास की अवधारणा एक बहुआयामी (मल्टीडायमेंशनल)प्रक्रिया है जिसमें सामाजिक ढांचे में बड़े परिवर्तन लाने की भावना छिपी है। लोगों की आम प्रवृत्तियां एवं राष्ट्रीय संस्थाओं के लक्ष्यों में परिवर्तन लाने के साथ-साथ आर्थिक गतिविधियों को सुदृढ़ बनाना विकास प्रक्रिया में सम्मिलित प्रमुख बातें है। गरीबी एवं असमानता को जड़मूल से समाप्त किए बिना विकास की कई प्रक्रियाऐं सफल नहीं होती। शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण आदि की दिशा में परिवर्तन लाने के लिए आर्थिक विकास जरूरी माना जाता है। दरअसल, विकास को किसी समाज की मौलिक जरूरतों एवं इच्छाओं को नजरन्दाज करके नहीं देखा जा सकता।

कुछ विद्वानों का मत है कि विकास के लिए तीन शर्तो का पूरा होना जरूरी है (1)अस्तित्व को बनाये रखने, (2)आत्म सम्मान को बढाना और (3)स्वतन्त्रता का होना ये तीन बातें है जो विकास प्रक्रिया एवं सामाजिक परिवर्तन में सहायक होती है। अस्तित्व के लिए भोजन, आवास, शिक्षा और रोजगार प्राथमिक आवश्यकताऐ हैं। दूसरी शर्त - आत्मसम्मान है। कोई गरीब अपने आत्म सम्मान की रक्षा करने में तब तक समर्थ नहीं होता जब तक उसकी प्राथमिक

आवश्यकताऐ पूरी न ही। इन दोनों के अभाव में स्वतन्त्रता निरर्थर होने लगती है। इसलिए विकास प्रक्रिया का अन्तिम उद्देश्य व्यक्ति की प्राथमिकताओं को पूरा करने में योग देना है। ऐसा करने के लिए समाज को पुनर्गठित करना और वे सेवाऐं या चीजें उत्पादित करना या तैयार करना आवश्यक हो जाता है जो समाज की इन मांगों को पूर्ण कर सकें। विकास के इस लक्ष्य को पाने की प्रक्रिया के सामाजिक ढांचे एवं प्रशासनिक एवं प्रबन्धकीय व्यवस्था में परिवर्तन लाना अनिवार्य बन जाता है। ऐसा नहीं करने से आम आदमी के जीवन को गुणात्मक बनाने के बजाय विकास से समाज के कुछ ऐसे तबकों को ही लाभ मिलेगा जो पहले से ही सम्पन्न और विकसित है।

3.5 विकास की प्राथमिकताएँ एवं भारतीय संदर्भ

तीसरी दुनिया के देशों में कई बार विकास की प्राथमिकताऐं उनकी अपनी समस्याओं के यथार्थ पर आधारित होने के बजाय विकसित राष्ट्रो की चमक-दमक उन्हें अपने देश के सत्य को पढ़ने में असमर्थ बना देती है और वे उनके जीवन स्तर या शैली का अनुसरण करने को ओर प्रवृत्त होने लगते हैं। विकसित देशों की बराबरी में आने का एक नकारात्मक पहलू भी है। अधिक समृद्धि वाले देशों के पास ऐसे घातक हथियारों और सामग्री का जखीरा भी है जो मानवता के विनाश का कारण बन सकता है। कई विकसित देशों का वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय एवं आर्थिक विकास आदि सैन्य-सामग्री के विकास पर आधारित है। गरीब और तीसरी दुनिया के देशों के लिए विकास का यह मार्ग अनुचित है। गत सदी में कई देशों ने इस दिशा में विकास करके अन्तर्राष्ट्रीय उपनिवेशवादी प्रवृत्तियों को बढ़ाया। 21 वीं सदी में विश्वस्तर पर नई आर्थिक-नीतियों के द्वारा इस प्रवृत्ति का प्रसार होने लगा है। दरअसल, विकास यों शक्ति-सम्पन्न होने के बजाय कभी समाप्त न होने वाली अनवरत क्रिया (नेवर एंडिंग प्रोसेस)है।

ऐसे विकास की निरन्तर जारी इस प्रक्रिया के प्रसंग में तीसरी दुनिया के गरीब और विकासोन्मुख देशों की विकास-प्राथमिकताऐं उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों के यथार्थ पर टिकी हुई होनी चाहिए। पहली प्राथमिकता गरीबी के खिलाफ संघर्ष छेड़ना है। किसी भी देश के लोगों की मौलिक जरूरतें पूर्ण करना, इस संघर्ष का पहला लक्ष्य होना चाहिए। बिना किसी जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, विश्वास, महिलाओं, बच्चों आदि की आम आवश्यकताऐं ध्यान में रखकर उन्हें सबल बनाने के प्रयत्नों को विकास- प्रक्रिया की पहली प्राथमिकता माना जाना चाहिए। जो लोग कार्य करने में सक्षम है, उनको रोजगार उपलब्ध कराना भी एक बड़ी प्राथमिकता है।

भारत के सन्दर्भ को देखें तो देश में बेरोजगारी की भारी समस्या जनसंख्या विस्तार तीव्र गति, गांवों से नगरों की ओर पलायन करने की विषम स्थिति आदि कई विकट समस्याऐं हैं। भारत में विकास का वे नगर रहे और भारी उद्योग या मध्यम दर्जे के उद्योगों के साथ लघु उद्योग भी नगरों की ओर उन्मुख रहे जबकि यथार्थ में भारत की 70 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है। इससे ग्रामीण आबादी का सामान रोजगार के लिए गांवों से शहरों की ओर बड़ा। विकास के लिए नगरों में सुविधाऐं अधिक तैयार की गई, जबकि भारतीय यथार्थ में प्रौद्योगिकी का विकास आयातित एवं स्वदेशी प्रौद्योगिकी के इन दो स्तरों पर होना चाहिए था। ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आत्मनिर्भरता समाप्त हुई और लघु एवं काटेज उद्योग चौपट हो गए। भारत जैसे देश में जहां जनसंख्या अधिक है रोजगारोन्मुख उद्योगों में निरन्तर कमी आती गई और उच्च तकनीकों पर आधारित औद्योगिक विकास के कारण बेकारी की समस्या निरन्तर विकट

होती गई। यह सच है कि भारत ने औद्योगिक एवं सामाजिक विकास की ओर निरन्तर प्रयास जारी रखे और उसके कारण सामाजिक परिवर्तन को नए आयाम भी मिले। लेकिन यह परिवर्तन असंतुलित रहा है। कई अर्थो में समृद्ध लोग अधिक सम्पन्न बनते रहे और गरीब लोग और अधिक गरीब होते चले गए।

अंग्रेजों के शासन में शोषित और अविकसित ग्रामीण जनता के हालात बहुत नहीं बदले। विकास का पूरा लाभ लेने में भी अशिक्षा और गरीबी की मार से दबे हुए लोग असमर्थ रहे। भ्रष्टाचार के दानव ने इस शोषण में वृद्धि की। विकास कागजों पर अधिक नजर आया और यथार्थ में कम हुआ। नगर महानगर बन गए और कस्बे नगरों में बदल गए लेकिन गांवों का जीवन-स्तर अपेक्षा के अनुसार नहीं बदला। ग्रामीण आबादी के पलायन से नगरों की कानून व्यवस्था, शिक्षण, आवास एवं स्वास्थ्य सेवाऐं भी समस्या बन गई। वन एवं पर्यावरण विनाश की प्रक्रिया भी विकास के दौर में तेज गति से बड़ी।

आजादी के समय भारत में खाद्य समस्या विकट थी। भारत की विकास सम्बन्धी कोशिशें हरित क्रान्ति के द्वारा खाद्य समस्या मे निपटने में जरूर कामयाब रही। भारत ने पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा जिस गति से विकास कार्य शुरू किए और देश की काया पलट के प्रयत्न किए, उस स्तर की सफलता नहीं मिली क्योंकि अनेक कारणों से यह प्रभाव भले ही नजर आए कि भारत विकास की ओर काफी आगे बढ़ा है लेकिन देश की एक बड़ी आबादी का गरीबी रेखा से नीचे रहना, इन विकास कार्यो की सफलता पर प्रश्न-चिन्ह लगाता है।

यह सच है कि भोजन, आवास, वस्त्र, रोजगार आदि कई स्तरों पर भारत की विकास प्राथमिकताऐं रही लेकिन यह भी सच है कि समाज परिवर्तन की जिस गुणात्मक वृद्धि की अपेक्षा की गई थी, वह प्राप्त नहीं हो सकी। देश में भूमि सुधारों, बंजर भूमि के विकास, बंधुआ मजदूरी, शिक्षा, आदि कई क्षेत्रों में विकास प्रक्रिया बहुत अधिक गतिमय नहीं हो सकी। शिक्षा का जनतंत्रीकरण एक सपना बन गया। देश में उच्चस्तर के भ्रष्टाचार का बोल-बाला हो गया और शिक्षा का भारी प्रसार के प्रयत्नों के बावजूद इसका जिताना विस्तार होना चाहिए था वह नहीं हुआ। यही हाल स्वास्थ्य एवं अन्य क्षेत्रों में हुआ। दरअसल, भारतीय परिप्रेक्ष्य में विकास प्रक्रिया एक निरन्तर प्रक्रिया रही है लेकिन इसकी प्राथमिकताऐं कहीं स्थिर नहीं रही। राजनैतिक स्तर पर जनतान्त्रिक प्रक्रिया आम आदमी तक पहुंची है लेकिन शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि अनेक क्षेत्रों में भारत आज भी पिछड़ा हुआ है। सामाजिक यथार्थ का राजनीति के स्तर पर अध्ययन किया गया है लेकिन भारतीय राजनैतिक परिवेश स्वयं अस्वस्थ एवं बिखराव का शिकार होने के कारण सामाजिक परिवर्तन की दिशा में बहुत आगे नहीं बढ़ पाया है।

ऐसे में प्राथमिकताओं की समीक्षा करके विकास की प्राथमिकताओं को फिर से तय करना, विकास के मार्ग की बाधाओं को नियन्त्रित करना, विकास-प्रक्रिया को सन्तुलित दिशा की ओर ले जाना तथा सामाजिक परिवर्तन को गति देने के लिए विकासात्मक जनसंचार की नई व्यूह-रचना करना एक अनिवार्यता है। भारत ने विश्वास प्रयत्नों के द्वारा जो सामाजिक परिवर्तनों के संन्दर्भ में उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, वे बहुत भले ही हो, लेकिन सन्तोषजनक नहीं हैं। यहां बढ़त ही बहुत कम है। नई दिशाएं और नये आयाम स्थापित करना शेष है। इस प्रकार भारत में विकास-प्रक्रिया एवं सामाजिक परिवर्तन की दिशा और द्वार पश्चिम की तरफ खुल गये और पश्चिमी राष्ट्रों की तर्ज पर प्रारम्भ यह विकास भौतिक स्तर पर कुछ सफलताऐं पाने में समर्थ भी

हुआ लेकिन यह विकास-प्रक्रिया आर्थिक-विकास पर केन्द्रित रही। सामाजिक परिवर्तन, पोषण एवं गुणवत्ता के लिए विकास के मार्ग में आगे बढ़ने की दिशा में जिस नैतिक एवं आध्यात्मिक परिवेश और परम्पराओं के विकास एवं संरक्षण का प्रश्न है। विकास-प्रक्रिया इन पक्षों के प्रति उदासीन ही रही और यह विकास की सीमित एवं संकुचित धारणा एक धुन बन गई जिसने पूरे विकास के परिदृश्य को खोखला बना दिया। यदि विकास-प्रक्रिया एवं सामाजिक-परिवर्तन का आधार मानव-शक्ति के पोषण एवं नैतिक सुदृढ़ता पर आधारित होता तो भौतिक विकास एवं विकास की प्राथमिकताओं के लक्ष्यों को प्राप्त करने एवं देश की सम्पूर्ण चेतना को उच्च स्तर प्रदान करने में समर्थ होता। भारत की जनता की सम्पूर्ण क्षमताओं को प्रवाहमय एवं गतिशील बनाकर भारत तीसरी दुनिया के देशों की श्रेणी या विकासशील देशों के वर्ग से कही आगे बढ़कर दुनिया का एक महान जनतान्त्रिक एवं विकसित देश बन सकता था। भारत में विकास के साथ-साथ अनेक विकृतियां भी बड़ी है, जो नहीं बढ़ती। बहरहाल भारत में गत सदी की त्रुटियों से सबक लेकर 21 वीं सदी के प्रथम दशक में विकास एवं सामाजिक परिवर्तन का एक बेहतर एवं उज्ज्वल इतिहास बनाने की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। गत अर्द्धसदी का पूरा हिसाब लगाकर नई अर्द्धसदी का अध्याय लिखने के लिए नीतिगत एवं क्रियान्वयन के स्तर पर कोई पहल हो तो लक्ष्यों को पाना अधिक सम्भव है।

महात्मा गांधी के ग्रमीण-आधार को लेकर विकास की संरचना करने के विचार के बजाय पश्चिमी विकास अवधारणा को लेकर भारत में विकास-प्रक्रिया शुरू की गई। इस विकसित पश्चिमी देशों की तर्ज पर किये गए विकास प्रयासों के परिणाम स्वरूप दो विकट समस्याऐं उत्पन्न हुई। देश में भारी स्तर (मास स्केल)पर ग्रामीण क्षेत्रों से जनसंख्या का शहरों की ओर पलायन हुआ और बड़े स्तर पर देश में बेरोजगारी फैली। पश्चिमी अनुकरण से किए गए औद्योगिकीकरण के अंशत: नगरीय आबादी की सहायता की लेकिन इस विकास-प्रक्रिया से ग्रामीण-जनता की अवहेलना हुई। इस कारण कम विकसित तीसरी दुनिया के देशों में दो-प्रकार की अर्थव्यवस्था (ड्यू आल इकोनोमी)उभरकर सामने आई। एक ही देश में दो अलग-अलग खेमों में देश के लोग आर्थिक स्तर पर बट गए। नई परिस्थितियों ने विकास-प्रक्रिया के अन्य विकल्पों की खोज के विचार को जन्म दिया। यह अनुभव किया गया कि तीसरी दुनिया के नव-स्वतन्त्र राष्ट्रों में आजादी के तुरन्त बाद जिस पश्चिमी अवधारणा पर आधारित विकास प्रक्रिया ने पश्चिम की तरह खुशहाली विकास प्राप्त करने का आभास दिया। लेकिन यह एक झूठी आशा बंधाई गई। ऐसे में गांधी की विकास-अवधारणा और व्यूह-रचना को लोगों ने पुराना विचार मानकर नकार दिया।

3.6 विकास प्रक्रिया की नई अवधारणाएँ

भारत सहित तीसरी दुनिया के देशों में विकास-प्रक्रिया की पश्चिमी अवधारणा के परिणामों ने इस दिशा में नए सोच एवं नई व्यूह-रचना तैयार करने की आवश्यकता अनुभव की गई। यह विचार भी सामने आया कि अविकसित या कम विकसित देशों को विकास प्रक्रिया परम्परागत एवं आधुनिक सोच में समन्वय के साथ चलाई जाए।

पॉल बारन नामक विद्वान ने कहा कि दुनिया के अधिकांश देशों के अविकसित रहने का कारण पूंजीवादी एकाधिकार है। उनका कहना है कि "जो लोग पश्चिमी पूंजीवादी विस्तारवाद के साए में आए उनके ऊपर मध्ययुगीन यूरोपीय जागीरदारी प्रणाली और पूंजीवाद का असर पड़ा।

उनका शोषण इन दो प्रणालियों के अनुसार बढ़ा।" यह बात स्पष्ट है कि इस विचार के साथ जो विस्तारवादी ताकतें थी उनका साम्राज्यवादी ध्येय विभिन्न देशों की उत्पादकीय सम्पदा का बढ़ाना नहीं था। पूंजीवादी देशों ने गुलाम देशों की पूंजी को कभी बढ़ाने का प्रयास नहीं किया। इन देशों के लोग शोषण के शिकार होकर गरीबी की ओर बढ़ते रहे। उनके लिए एक बेहतर भविष्य था सम्भावनाओं की कोई कल्पना तक नहीं की गई।

भारत सहित तीसरी दुनिया के लोगों के अपने रोजगार के साधन समाप्त हुए। उनकी हस्तकलाऐं एवं धन्धे चौपट हो गए। कोई बेहतर उद्योग खोलने का प्रयास नहीं हुआ। उनका पश्चिम में विकसित वैज्ञानिक प्रकाश से सम्पर्क तो हुआ लेकिन वे स्वयं अंधेरे में रहे। इस पृष्ठभूमि को समझे बिना तीसरी दुनिया के स्वतन्त्र राष्ट्रों के विकास की जो प्रक्रिया प्रारम्भ की गई, वह अधिक असरदार साबित नहीं हुई।

बारन ने इस विगत की पृष्ठभूमि की चर्चा करते हुए भारतीय विकास प्रक्रिया की दिशा के बारे में यह विचार रखा, यदि भारत को आजादी के बाद अलग- अलग छोड़ दिया जाता तो यह समय के साथ विकास की मंजिल तय करने का कोई सीधा उपाय अपनाकर एक बेहतर और समृद्ध समाज की संरचना करने में सफल होता और पश्चिमी तर्ज के मार्ग को अपनाने से अनुभव की गई कई समस्याओं एवं यातनाओं से बच जाता। ऐसे में आज भारत जो कुछ है, उससे बिल्कुल अलग एक भारत होता। यहां एक अलग दुनिया होती यदि भारत अपने विकास की रूपरेखा अपने यहां उपलब्ध स्रोतों पर आधारित विकास संरचना को लेकर अपने भाग्य का निर्माण करने की ओर बढ़ता। अपने साधनों का अपने देशाहित में उपयोग करता, देश की ऊर्जा और क्षमता का अपने देश के लोगों को आगे बढ़ने में उपयोग करता तो भारत के विकास का मंजर ही कुछ निराला होता।

3.7 विकास प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन की पृष्ठभूमि

विकास प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन की दिशाऐं राजनैतिक परिवर्तनों एवं सोच से सम्बद्ध है। दूसरे विश्व महायुद्ध के भयानक परिणामों ने दुनिया को झकझोर दिया। जहां एक ओर इस विश्वयुद्ध की काली परछाइयों ने दुनिया के समक्ष युद्धों के विभत्स अन्त से साक्षात्कार करवाया, वहां साम्राज्यवादी, पूंजीवादी एवं विस्तारवादी शक्तियों को भी आत्म-विश्लेषण और दुनिया में उभरते यथार्थ को समझने के लिए विवश किया। इस युद्ध के बाद उपनिवेशवादी शक्तियां भी कमजोर पड़ने लगी और उन्होंने कई उपनिवेशो से अपने बिस्तर गोल करने का सिलसिला चालू कर दिया। कई उपनिवेश स्वतन्त्र हो गए। क्षत-विक्षत रूप में उपनिवेशवाद के घावों और विरासत को ढोते रहे, इन नव स्वतन्त्र राष्ट्रों ने अपने-अपने देशों का पुन: निर्माण करने का काम शुरू किया। भारत को दूसरे विश्वयुद्ध के बाद 1947 में आजादी मिली जो कि अधूरी ही नहीं थी बल्कि खून-खराबे और देश के बटवारे की त्रासदी से भी ग्रस्त थी। अंग्रेजी उपनिवेशवादी जाते-जाते बटवारे की घिनौनी चाल को सफल कर गए। एक तरफ विश्वयुद्ध से तथा दूसरी तरफ भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष में फंसे ब्रिटिश उपनिवेशवाद अपने बिस्तर गोल करने को विवश थे और उन्हें भविष्य नजर आ गया था, लेकिन कुंठित उपनिवेशवादी भारत को तहस-नहस करके आजादी की ओर बढ़ने दिया। बाकी आर्थिक और सामाजिक स्थितियां तो वो ही थी जो

अन्य नव-उपनिवेशवाद से मुक्त देशों में थी। देश के बटवारे ने भारत के समक्ष और अधिक समस्याऐं और चुनौतियों पैदा कर दी थी।

इन नव-स्वतन्त्र देशों के नेता इन परिस्थितियों में दिग्भ्रमित थे। निराशा और खुशी का मिश्रित भाव था - स्वतंत्र देशों एवं उनके नेताओं में। भारत में भी यही हाल था। नव स्वतन्त्र तीसरी दुनिया या अविकसित और शोषित राष्ट्रों के सामने अपने-अपने देशों को गरीबी के जाल, अशिक्षा, बीमारियों, भूख आदि की भयावह स्थितियों से बचाने की बड़ी चुनौतियां थी। इसलिए इन स्थितियों से उबारने के लिए जिस शब्द पर बल दिया गया - वह था देश का विकास। यों विकास, एक अहम प्रश्न था। लेकिन विकास का अर्थ, विभिन्न देशों ने अलग-अलग लगाया। लेकिन जिन-जिन देशों में यह गरीबी अशिक्षा, बीमारी आदि अनेक समस्याओं का सामना करना था, उनके लिए एक शब्द काम में लिया गया - विकासशील या तीसरी दुनिया के देश। पश्चिमी अवधारणा में पश्चिमी राष्ट्रों ने आर्थिक-समृद्धि को विकसित माना और अपने को पहली श्रेणी में रख दिया क्योंकि अविकसित, विकसित और विकासशील देश इन तीन वर्गो में दुनिया को बांटने की धारणा को पश्चिमी राष्ट्रों ने ही जन्म दिया था।

बहरहाल, इस शब्द का उपयोग विकास की ओर उन्मुख गरीबी की मार से त्रस्त उन देशों के लिए करें जो दूसरे विश्वयुद्ध के बाद स्वतन्त्र हुए या करवट लेने लगे तो अर्थ स्पष्ट हो जायेगा लेकिन विकास की अवधारणाओं में भिन्नता रही है।

यह एक आश्चर्य जनक तथ्य है कि दुनिया की तीन चौथाई आबादी एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमेरिकी देशों में बसती है जो कि तीसरी दुनिया या विकासशील राष्ट्रों की दुनिया है। यह तीन चौथाई आबादी दुनिया के दो तिहाई हिस्से में रहती है। यह तीसरी दुनिया न तो पूंजीवादी राष्ट्रों की दुनिया है और न ही साम्यवादी विचारकों की दुनिया है। इस तीसरी दुनिया के देशों में भी देशों के आकार, प्राकृतिक स्रोतों, उनकी अर्थव्यवस्था के ढांचे, उनकी अर्थव्यवस्था के स्तर, सामाजिक एवं प्रौद्योगिकीय विकास की स्थितियां भिन्न-भिन्न हैं। इन पक्षों के प्रसंग में इन देशों में समानता का आधार नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि इनमें बहुत सारी असमानता है। केवल तीसरी दुनिया को एक समान आधार प्रदान करके एकजुट, एक वर्ग में रखने का आधार इन देशों में गरीबी को मिटाना और अपने-अपने देश की जनता का बेहतर जीवन स्तर देना है। इस प्राथमिकता को इन देशों को जोड़ने वाला सूत्र माना गया है।

यह एक बड़ा विरोधाभास है कि तीसरी दुनिया के देश द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद निरन्तर अपने-अपने देशों की गरीबी मिटाकर विकास की दिशा में प्रयत्नशील रहने के बावजूद इनका दर्जा (स्टेटस)विश्व के उन्नत देशों की अर्थव्यवस्था के निकट नहीं पहुंच पाया है। और ये तीसरी दुनिया की अवधारणा के अनुरूप ही बने हुए हैं। इनके स्वरूप, आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन की दिशा किसी गन्तव्य तक नहीं पहुंच पाई है। ये देश आज भी गरीब हैं। शान्तिहीन और अर्थथ्यवस्था के स्तर पर दूसरों के अधीन हैं। दूसरे शब्दों में उनकी राष्ट्रीय-आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में बहुत अधिक इजाफा नहीं हुआ है। कुछ देशों में तो आधुनिकता के प्रयासों के बावजूद और विकास-प्रक्रिया के जारी रहने के बाद भी दूसरों पर उनकी निर्भरता बड़ी है। गरीबी में कमी नहीं आई है। विकसित और विकासशील देशों के बीच आर्थिक खाई बड़ी है।

तीसरी दुनिया के देशों के ढाँचों में ढांचागत असमानताऐं दूर होने के उदाहरण दुर्लभ हैं। गरीब और अमीर के बीच आमदनी का फासला और अधिक बढ़ा है। इससे स्पष्ट है कि

असमानताओं की समस्या बड़ी है। इससे विघटन एवं अस्थिरता पैदा हुई है। महिलाओं का दर्जा, आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर बहुत परिवर्तित नहीं हुआ है। विकसित राष्ट्रों पर तीसरी दुनिया के अनेक देश आज भी निर्भर हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय या व्यापार के मुद्दे पर 1950 से 1980 तक के आकड़ों पर दृष्टि डालें तो यह आश्चर्यजनक है कि तीसरी दुनिया का विश्वव्यापार में हिस्सा 30 प्रतिशत से घटकर 15 प्रतिशत पर आ गया था। इस प्रकार की स्थिति विश्व व्यापार की शर्तो ने उत्पन्न की। यह आश्चर्य की बात है कि कई विकासशील राष्ट्रों में गत अर्द्धसदी से विकास-प्रक्रिया जारी रहने के बावजूद कई देशों में दूसरों पर निर्भरता में वृद्धि जारी है और उनका विदेशी पूंजी और विदेशी सहायता प्राप्त करने का क्रम वृद्धिगत है। इन विकासशील राष्ट्रों में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की भागीदारी भी बढ़ रही है तथा इन देशों की आर्थिक नीतियों को ये संस्थान प्रभावित करने में संलग्न है।

तीसरी दुनिया के देशों में विभिन्न क्षेत्रों में शोध पर मुश्किल से 2-3 प्रतिशत का पूंजी नियोजन होता है। इससे प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी ये देश पिछड़ रहे हैं। इनमें यहां भी निर्भरता है। यह देखा गया है कि आयातित प्रौद्योगिकी इन देशों के लिए उपयुक्त नहीं होती क्योंकि रोजगारी में जरूरतों के अनुसार वृद्धि के लिए आयात प्रौद्योगिकी में सम्भावनाऐं कम होती हैं।

इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक असमानताओं में वृद्धि की प्रवृत्ति ने तीसरी दुनिया के देशों को इस ओर एक जुट प्रयास करने की दिशा में प्रेरित किया। परिणामस्वरूप राष्ट्र संघ न्यू इन्टरनेशनल इकोनोमिक आर्डर के लिए एक प्रस्ताव राष्ट्रसंघ ने स्वीकार किया एवं एक समानता पर आधारित विश्व की संरचना में सहयोग करने के लिए कार्यक्रम तैयार किया। इसके अन्तर्गत विकासशील देशों को दिए गए ऋण के बारे में विचार करना, व्यापार की शर्तो को पुन: परिभाषित करना, अन्तर्राष्ट्रीय मोनेटरी फंड (आई.एम.एफ.)एवं इसके निर्णयों की प्रक्रिया में सुधार लाना तथा राष्ट्रसंघ द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को उपलब्ध करना आदि शामिल थे। राष्ट्रसंघ ने कुछ प्रयत्न किए लेकिन इन प्रस्तावों या कार्यक्रम को सफल नहीं बनाया जा सका। इसका कारण विकसित देशों का स्वार्थ था। उनकी प्रवृत्ति असमानता कम करने की ओर नहीं थी। विकास के लक्ष्य विकसित देशों के हितों से टकराने लगे।

जैसाकि स्पष्ट है विकास का लक्ष्य आर्थिक-असमानता दूर करना था। इसलिए आर्थिक गतिविधियों पर बल दिया गया। लेकिन परम्परागत सोच ऐसा था जहां यह माना गया कि आय का असमान वितरण तेजगति से विकास के लिए जरूरी है। यह तर्क दिया गया कि आय के वितरण में असमानता की वृद्धि से अमीर लोग ओर अमीर बनेंगे और उनकी बचत से और अधिक विकास में योग मिलेगा। यदि विकास के साथ आय का समान वितरण होगा तो गरीबों की आय भी बढ़ेगी लेकिन वे अधिक बचत नहीं कर पाऐंगे और विकास के लिए उनके पास बचत नहीं होगी। इससे विकास की गति धीमी पड़ जाऐगी। इस परम्परागत सोच के कारण विकास और न्यायपूर्ण वितरण के बीच टकराव पैदा हुआ। भारत में समृद्ध लोगों की आय बड़ी लेकिन क्या उनकी आय बढ़ने के बाद अर्थव्यवस्था या विकास में कोई अन्तर आया? इस प्रश्न के सन्दर्भ में विकास को लेकर अर्थशास्त्रियों ने एक भिन्न बात प्रतिपादित की। उनका मत है कि दरअसल आय का समान वितरण ही बेहतर विकास सम्भावनाऐं उत्पन्न कर सकता है, विकास को गति देने में समर्थ हो सकता है। अपने विचार को पुष्ट करने के लिए उन्होंने कुछ कारण दिए हैं - 1 समृद्ध लोग विकासशील देशों में अपने साधनों का उपयोग अधिकांशत गैर उत्पादक कार्यो पर खर्च

करते है। आयाक्ति या ऐसी ही सुख-सुविधाओं पर व्यय करते हैं जिससे अधिक बचत की सम्भावना नहीं रहती है। 2 आय के असमान वितरण से गरीबों की वस्तुऐं खरीदने की शक्ति बहुत कम हो जाती है जो उनकी उत्पादकता क्षमता एवं स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है। इससे अर्थव्यवस्था में वृद्धि भी प्रभावित होती है। 3 गरीबों की आय बढ़ेगी तो स्वदेशी वस्तुओं की मांग भी बढ़ेगी। इससे विकास में तेजी आयेगी। इसलिए न्यायपूर्ण आय वितरण के द्वारा ही विकास सम्भव है। विकास और आय के समान वितरण के बीच कोई विरोधाभास नहीं होता।

भारतीय सन्दर्भ में जिस सिद्धान्त का अनुसरण किया जाता है, उसे 'यूनिलिनियर' सिद्धान्त कहते हैं। जिसमें नगरों और महानगरों का विकास अधिक हुआ है। बहुसंख्यक ग्रामीण आबादी की अवहेलना हुई है। ग्रामीण जनसंख्या का नगरों की ओर पलायन हुआ है। नगरों की आबादी की समस्या बड़ी है। यह नगरीय-धारणा से ग्रस्त विकास जहां गांवों के विकास पर विशेष ध्यान नहीं देना वहां नगरीय जीवन में भी गुणवता में कमी लाता है। तीसरा सिद्धान्त मानने वाले पश्चिम की तर्ज के विकास का विरोध करते हैं। वे ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक पूंजीनियोजन की सिफारिश करते हैं। यद्यपि गांधीजी के विचारों पर आधारित विकास के सिद्धान्त के अनुसरण के कहीं उदाहरण नहीं मिलते।

मार्क्सवाद के सिद्धान्तों से हटकर चीन ने माओ के सिद्धान्तों को आधार मानकर स्वास्थ्य के विकास को गति देने का प्रयास किया। चीन में ग्रामीण एवं नगरी क्षेत्रों में इस कार्यक्रम से स्वास्थ्य विकास की गति समान रही। यह सच है कि कई विकासशील देशों में प्रति व्यक्ति आय बड़ी है लेकिन गरीबी, बेरोजगारी, असमानता और अशिक्षा की इस तीसरी दुनिया के देशों में समस्या विकट बनी चली आ रही है। इस प्रकार गत अर्द्धसदी से भी अधिक समय से विकास-प्रक्रिया के द्वारा समाज को बदलने के प्रयास निरन्तर जारी है, और इस अवधि के अनुभवों सफलताओं एवं असफलताओं ने इस और विभिन्न विचारों और सिद्धान्तों को जन्म दिया है। एक दूसरे से भिन्न विचारों ने विकसति एवं विकासशील देशों में जारी विकास प्रक्रिया को समझने में सहायता की है।

यह भी स्पष्ट हुआ कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद तीसरी दुनिया के देशों को विकास-प्रक्रिया की अच्छाइयां या कमियों का भान हुआ है। यह भी देखा गया कि विकास के सन्दर्भ में कुछ विरोधाभास भी है। विकास से जुड़ी कई समस्याऐं जैसे गरीबी, असमानता, बेरोजगारी, अशिक्षा आज भी तीसरी दुनिया सबसे बड़ी समस्याऐं है। विकास-प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन को एक यथार्थ रूप देने का लम्बा संघर्ष और चुनौती आज भी कायम है।

3.8 विकास के प्रमुख मुद्दे

सामाजिक परिवर्तन और विकास-प्रक्रिया का सिलसिला कोई नया विचार नहीं है। यह अनादिकाल से चली आ रही प्रक्रिया है। यह बात अलग है कि इसके व्यापक क्षेत्र में किस बिन्दु पर यह प्रक्रिया कब तेज हुई और कब धीमी पड़ी। आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक, शैक्षणिक आदि विभिन्न पक्ष हैं जहां ये प्रक्रिया दृश्य और अदृश्य रूप में संचालित रहती है। आमतौर से गत सदी के अन्त में आर्थिक विकास को प्रमुखता मिली है लेकिन विकास के सभी पक्ष एक दूसरे से इस प्रकार जुड़े हुए हैं कि वे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। यहां कुछ ज्वलन्त विकास मुद्दों की चर्चा

की गई है जो समाज परिवर्तन एवं विकास प्रक्रिया की गति एवं सार्थकता की स्थिति का संकेत देते हैं।

1. **गरीबी** - गरीबी समाज में एक अभिशाप है जहां व्यक्ति जीवन स्तर की न्यूनतम जरूरतों को भी पूरी नहीं कर पाता। न्यूनतम जरूरतों में जीवन के लिए आवश्यक भोजन, कपड़ा, मकान, जरूरी पोषक तत्व आदि की पूर्ति करना शामिल है। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद प्रारम्भ हुई विकास यात्रा के लगभग चार दशक बाद 1990 में विश्व विकास प्रतिवेदन इस दिशा में भारतीय संदर्भ की ओर संकेत किया गया है। इसमें यह अन्दाज लगाया गया कि 1990 में दुनिया के विकासशील देशों में एक बिलियन लोगे से भी अधिक लोग गरीबी का जीवन जीते हैं। दुनिया के गरीबों की आधी आबादी दक्षिण एशिया के देशों में रहती है। दक्षिण एशिया की पूरी गरीब आबादी का अधिक से अधिक हिस्सा भारत में बसता है। इसका अर्थ यह हुआ कि चार दशक से भी अधिक समय के विकास प्रयत्नों के बावजूद विकासशील देशों की कुल आबादी की 25 प्रतिशत गरीब जनता भारत में रहती है। इन गरीब में से अधिक जनसंख्या गांवों में है। बाकी गरीब पर्यावरणीय दुर्दशा के बीच जीवनयापन करते हैं। इस गरीबी की सर्वाधिक मा महिलाओं और बच्चों पर पड़ती है।

गरीबों के घर में पुरुष की बजाय महिला के कन्धों पर अधिक पड़ता है। वे बहुत कम शिक्षित या साक्षर हैं तथा कठिन श्रम के बदले उन्हें कम पारिश्रमिक या मजदूरी मिलती है। बच्चों में भी लड़कियों की स्थिति बदतर है। पोषक तत्वों या स्वास्थ्य की सुविधाओं का तो हाल ही बेहाल है। गरीबों या गरीबी रेख से नीचे जीवन यापन करने वालों में शिक्षा या दीर्घजीवन की कम तो एक आम बात है।

2. **असमानता** - यहां असमानता से तात्पर्य है - जीवन स्तर में असमानताओं से। बहुधा असमानता का अर्थ आय के बराबर वितरण नहीं होने से भी लगाया जाता है। नगरीकरण में वृद्धि के बावजूद तीसरी दुनिया के अधिकांश भागों में अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। आय में वितरण को देखा जाए तो नगरीय एवं ग्रामीण आबादी की आय में भारी अत है। ग्रामीणों की आय भी नगरीय आबादी से आय में बहुत पीछे है।

एक महत्वपूर्ण मुद्दा असमानता का यह भी है कि समृद्ध लोगों की आय में वृद्धि की दर गरीबों की आय में बढ़ोतरी की दर से कहीं ज्यादा तेज है। इस प्रकार अमीर और गरीब के बीच की खाई पटने के बजाय अधिक चौड़ी होती जा रही है। यह आय की असमानता, विकास के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा ह।

3. **बेरोजगारी** - कम विकसित या विकासशील देशों की एक बड़ी समस्या है - बेरोजगारी। इसके दो पक्ष हैं - एक तो किसी परिवार में लोगों के पास कोई रोजगार न होना और दूसरा लोगों के पास क्षमता के अनुरूप काम न होना अर्थात् उनके कमाने की क्षमता का पूरा उपयोग न होना। इससे परिवारों की आय उनके बेहतर जीवन-स्तर को बनाए रखने के स्तर की नही हो पाती। परिणामस्वरूप तीसरी दुनिया के देशों की स्थितियां बेहतर नहीं हो पाती। इस कम आय या जरूरत से कम आमद का असर लोगों की उत्पादन क्षमता या उत्पादकता पर पड़ता है। जो रोजगार में हैं, उनकी उत्पादकता भी कम रहती है।

किसी भी देश की युवाशक्ति में कार्यक्षमता एवं उत्पादकता की भारी सम्भावनाऐं होती हैं जिनका ठीक उपयोग हो तो व केवल परिवारों का जीवन स्तर ऊंचा होगा बल्कि राष्ट्रीय उत्पादकता और विकास में भी वृद्धि होगी। लेकिन यह खेदजनक है कि तीसरी दुनिया के देशों में बेरोजगारी की समस्या सर्वाधिक युवाओं की है और 15 से 24 वर्ष की आयु के शिक्षित युवकों में यह बेरोजगार और अधिक है। साथ ही नगरीय एवं ग्रामीण आबादी का एक बहुत विशाल हिस्सा पूरी तरह अपनी क्षमता के अनुरूप रोजगार मे नहीं है अर्थात् उनकी क्षमता का उपयोग अधूरा होता है। इसलिए गरीबों के बड़े कारणों में बेरोजगारी या पूर्ण क्षमता के अनुरूप रोजगार उपलब्ध न होने को माना गया है। इस प्रकार विकास के अध्ययन में बेरोजगारी का मुद्दा केन्द्र स्थान पर है।

4. **साक्षरता** - साक्षरता और क्रिया के अभाव का भी विकास प्राक्रया पर असर पड़ता है। इससे व्यक्ति की उत्पादकता के स्तर में कमी होती है। उसे अपना क्षमता के पूर्ण उपयोग के मार्ग की जानकारी नहीं हो पाती और तीसरी दुनिया के लोगों के उच्च जीवन स्तर की ओर गतिमान होने भी असाक्षरता आड़े आती है। शिक्षा के द्वारा उत्पादकता को गतिशील बनाना और उसमें सुधार करना सम्भव नहीं होता बल्कि यह तो जीवन को बेहतर बनाने के लिए एक मौलिक जरूरत है। शिक्षा में प्रगति करना मुख्यत: अपने आप में एक बड़ा लक्ष्य है। दरअसल, साक्षरता और शिक्षा-सम्पूर्ण विकास में महत्वपूर्ण योग देने वाले बड़े कारक हैं। प्रारम्भिक शिक्षा के विकास ने ही कई देशों में उत्पादकता में दो-तीन गुणा वृद्धि का संकेत दिया है। महिलाओं की शिक्षा से शिशु-मृत्युदर में भारी कमी और आयु में वृद्धि के संकेत भी मिले हैं।

इस मुद्दे को महत्वपूर्ण मानते हुए तीसरी दुनिया के कुछ देशों ने तीसरी दुनिया के पिछड़ेपन का एक महत्वपूर्ण कारण स्कूली एवं उच्च शिक्षा का बहुत ही निम्न स्तर होना माना जाता है। गरीबी देशों के ग्रामीण जीवन की हालत तो साक्षरता और शिक्षा के प्रसार की दृष्टि से और भी अधिक बदतर है। लड़कियों की शिक्षा की तो भारी दुर्दशा है। इन देशों के हालात ये हैं कि जो स्कूलों में भर्ती भी होते हैं, उनमें चार साल की शिक्षा के बाद 40 प्रतिशत बच्चे स्कूल छोड़ देते है। 1991 के आकड़ों के अनुसार तीसरी दुनिया में एक बिलियन वयस्कों के असाक्षरता के शिकार होने का अनुमान लगाया गया था।

इस प्रकार विकास प्रक्रिया के द्वारा सामाजिक परिवर्तन को गति देने या समाजिक परिवर्तन के साथ विकास को गतिमान करने के मार्ग की बाधाओं की चर्चा के साथ यह कहना भी उचित होगा कि अनेक ऐसी समस्याऐं है जिनका निदान पूरी विकास प्रक्रिया की तह में काम कर सकती है। विकास प्रक्रिया की सफलता का सीधा मतलब है - आम आदमी के जीवन स्तर में वृद्धि होना। साथ ही विकास का अर्थ - संस्थागत सामाजिक ढांचे में परिवर्तन होना है। यह परिवर्तन आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित होता है।

3.9 विकास के मापदण्ड

यह तय है कि किसी भी देश में गरीबी में कमी, असमानता में कमी, बेरोजगारी में कमी और शिक्षा में वृद्धि को देखकर विकास की गति, प्रक्रिया या उसके प्रभाव का कुछ अन्दाज लगाना मुमकिन है। लेकिन आमतौर से तीसरी दुनिया में विकास के स्तर को मापने के लिए प्रतिव्यक्ति

आय को प्रमुख माना गया है। लेकिन इस मापदंड की अपनी कमजोरियां भी हैं। इसलिए कई लोगों के रुझान में इसे मापदंड के रूप में अपनाने में कमी आई और विभिन्न विद्वानों एवं शोधकर्ताओं ने विकास की तहत लेने के लिए अन्य मापदंड खोजने के विकल्प अपनाए।

कुछ लोगों ने भौतिक स्तर पर जीवन की गुणवत्ता के इंडेक्स (फीजिकल क्यालिटी ऑफ लाईफ - पी.क्यू.एल.आई.)को अपनाना। कुछ ने विकास की विशेषताओं को लेकर उसे परखा। लेकिन विकास प्रक्रिया एक उलझनों भरा प्रश्न है, इसलिए इसका मापदंड सरल नहीं है। लेकिन हर तरीके की अपनी खूबियां होती हैं और हर रास्ते से विकास-प्रक्रिया की गति को नापने के कोई न कोई सूत्र तो मिलते ही है।

दरअसल विकास प्रक्रिया को समझने या इसके विश्लेषण के लिए जो भी विभिन्न विचार सामने आए हैं उन्हें दो भागों में बांटा गया है - एक विचार को अंग्रेजी में यूनिलियर कहा गया है। इसमें मैनस्ट्रीम, काउन्टर रिवोल्यूशन, स्ट्रक्चरलिस्ट एवं आर्थोडोक्स मार्कसिस्ट ये चार सिद्धान्त प्रमुखत: शामिल है। ये पश्चिमी विकास की तर्ज के विकास को आदर्श मानते हैं। दूसरी ओर मार्क्स एवं पोपूलिस्ट विचार है जो नॉन-यूनिलियर विचारधारा के अंग है। बहरहाल इन विभिन्न विचारधाओं की पृष्ठभूमि हमें विकसित एवं विकासशील देशों के विकास-अनुभवों एवं विकास प्रक्रियाओं को समझने में मददगार सिद्ध हुए है।

3.10 सारांश

प्रस्तुत इकाई से यह स्पष्ट है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की अर्द्धसदी की तीसरी दुनिया की विकास प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तनों ने उसे काफी अनुभव प्रदान किये हैं दरअसल विकास प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन एक दूसरे के पूरक हैं। विकास प्रक्रिया को गतिमय बनाने एवं समाज को परिवर्तित कर उसे एक बेहतर दिशा प्रदान करने के मार्ग में अनेक बाधाऐं है और समस्याऐं हैं। उनका निदान करने का अर्थ है - प्रक्रिया और परिवर्तन को तेज करना। ये समस्याऐं प्रमुखत: गरीबी, बेरोजगारी, असमानता और उामाक्षरता हैं।

इसलिए विश्लेषकों एवं विकास जनसंचार की अवधारणा के अनुसार किसी भी देश को गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी जैसी समस्याओं से उबारकर उसे गतिशील आर्थिक विकास की दिशा देना अधिक समानता और सामाजिक न्याय उपलब्ध करना अनिवार्य है।

3.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. विकास प्रक्रिया से आप क्या समझते हैं? इसे गतिशील बनाने में विकासात्मक जनसंचार की भूमिका को रेखांकित कीजिए।
2. क्या सामाजिक परिवर्तन और विकास प्रक्रिया एक दूसरे के पूरक हैं? यदि हां, तो स्पष्ट कीजिए।
3. भारतीय सन्दर्भ में विकास की प्राथमिकताओं का विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए। साथ ही अपने मत की पुष्टि के लिए कुछ उदाहरण दीजिए।
4. विकास प्रक्रिया की विभिन्न अवधारणाओं के बारे में अपने विचार प्रकट कीजिए।
5. विकास प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन की द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की रूपरेखा का वर्णन कीजिए।

6. तीसरी दुनिया की विकासात्मक प्राथमिकताओं का उल्लेख कीजिए।
7. विकास के प्रमुख मुद्दे क्या हैं? विस्तार से समझाइये।
8. विकास के मुख्य मापदंड क्या हैं? विस्तार से रेखांकित कीजिए।
9. विकास प्रक्रिया को बल देने के लिए शिक्षा और साक्षरता को आप क्यों जरूरी मानते है? भारत के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

3.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. Jan R. Halcemulder, Fay A.C. De Jorge and P.P.Singh, Principles & functions of Mass Communication (1998), Anmol Publications, New Delhi.
2. Sharma S.L. (1988), Changing Conceptions of Development An Analysical search for a missing Dimension, Vol. 1 1988
3. Seventh Five year Plan Document, Planning Commission, Govt. of India.
4. Lerner, Daniel (1971), Towards a theory of modernisation, University of Ilinois Press, Urbane.
5. Srinivas R. Mellcota & it Leslie Steeves, Communication for Development in the third world, Sage Publications, New Delhi.

इकाई 4 तीसरी दुनिया में विकासात्मक संचार : प्रकरण अध्ययन

(Development Communication in Third World : Case Study)

इकाई की रुपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 प्रकरण अध्ययन

4.2.1 सफाई इंडोनेशिया : सफाई विकास कार्यक्रम

4.2.1.1 सफाईकर्मियों का स्ट्रीट थियेटर

4.2.1.2 पत्रकारों के लिए कार्यक्रम

4.2.1.3 राजनैतिक संवाद

4.2.1.4 टेलीविजन पर राष्ट्रीय कार्यक्रम

4.3 विकासात्मक संचार का प्रभाव

4.4 भारतीय अनुभव - साइट

4.5 विकासात्मक संचार के प्रभाव एवं कार्य

4.5.1 संचार का प्रभाव

4.5.2 संचार का कार्य

4.6 विकासात्मक संचार का महत्व

4.7 विकासात्मक संचार और भारतीय शोध अध्ययन

4.8 विकासात्मक संचार का भविष्य

4.9 सारांश

4.10 निबंधात्मक प्रश्न

4.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.0 उद्देश्य

'तीसरी दुनिया में विकासात्मक संचार : एक प्रकरण अध्ययन' इस पाठ्य पुस्तिका की चतुर्थ इकाई है। इससे पूर्व की इकाई में आप विकासात्मक जनसंचार के विभिन्न पहलुओं का व्यापक रूप से अध्ययन कर चुके हैं।

- इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप स्पष्ट कर सकेंगे कि विकास की सम्पूर्ण प्रक्रिया में विकासात्मक संचार की भूमिका क्या है?
- आप यह भी बता सकेंगे कि विकास के लिए अनुकूल वातावरण का सृजन करने में संचार की कितनी उपयोगिता है??

- आप यह भी विश्लेषण करने में सक्षम होगे कि विभिन्न प्रकरण अध्ययनों के परिणाम आज तक कितने सफल हुए?
- इकाई के अध्ययन से विगत वर्षो में विकास योजनाओं में संचार की महत्ता को समझने के बाद किस प्रकार संचार व्यूह रचनाऐं तैयार की गई? आप यह उल्लेख भी कर सकेंगे?
- प्रकरण - अध्ययन आपके इस अनुभव को पुष्ट करेगा कि विकास संचार की विभिन्न योजनाओं को गति देने में क्या भूमिका रही?
- विकास प्रक्रिया और सामाजिक परिवर्तन को दिशा देने के सन्दर्भ में आप संचार व्यूह रचना करने में सक्षम होंगे।

4.1 प्रस्तावना

भारत या अन्य तीसरी दुनिया के देशों के सामने विकास के बेहतर परिणाम प्राप्त करने का कार्य ही नहीं है बल्कि आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर संस्थागत परिवर्तनों के द्वारा उन्हें इस प्रकार पुनर्नियोजित करने का दायित्व भी है ताकि वे विस्तृत रूप से लक्ष्यों तक ले जाने में योग दे सकें। इसके लिए विकास संरचना को गतिशील बनाने हेतु विकास संचार को एक आधार माना गया है। यह आधार जब तक निरन्तरता के साथ विकास प्रयत्नों को बल नहीं देगा, विकास की मंजिलें तय करना सम्भव नहीं होगा। समझ को बदलने का अर्थ है - लोगों को बदलना, जनचेतना पैदा करना। जब तक लोगों में किसी भी विकास कार्य के परिणामों से उनके स्वयं के जीवन स्तर में वृद्धि का भाव नहीं जागेंगे वे उस कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी नहीं निभायेंगे। इसलिए जो आधारभूत तत्व है - वह किसी भी विकास कार्यक्रम से आम आदमी को जोड़ना है और यहां विकास संचार की भूमिका शुरू होती है।

उदाहरण के लिए भारत में परिवार कल्याण को ही लीजिए। यह सर्वविदित है कि सम्पूर्ण विकास कार्यक्रमों की सफलता स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण से सम्बद्ध है। यह भी सर्वविदित है कि संचार के विविध माध्यमों एवं पद्धतियों का इस कार्यक्रम को सफल बनाने के उपयोग किया जा रहा है। लोगों को छोटे परिवार के सम्बन्ध में शिक्षित करने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने का काम भारत में काफी समय से जारी है। लोगों को स्वास्थ्य के विभिन्न पक्षों की जानकारी दिए जाने से स्वास्थ्य के सन्दर्भ में भी सुधार हुआ है।

4.2 प्रकरण अध्ययन

यह एक अलग प्रश्न है कि इन कार्यक्रमों का संचार के माध्यम से अपेक्षित लाभ प्राप्त नहीं किया जा सका। इसके अनेक कारण हो सकते हैं। वित्तीय स्रोतों की कमी, देश की विविधतापूर्ण संस्कृति एवं परम्परागत सोच के कारण परिवर्तन को स्वीकार करने में हिचक आदि। यह तय है की सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचागत सामाजिक परिवेश में परिवर्तन करने के लिए संचार की समुचित व्यूह रचना होनी चाहिए। विभिन्न प्रकरण अध्ययनों से इस इकाई में यह स्पष्ट अनुभव हो सकेगा कि किन परिस्थितियों में विकास संचार की व्यूह रचना कैसी होनी चाहिए।

4.2.1 इन्डोनेशिया : सफाई विकास कार्यक्रम

तीसरी दुनिया के देशों में संचार को विकास की व्यूह-रचना में एक महत्वपूर्ण तत्व माना गया है। यूनेस्को में विकास परियोजनाओं के लिए संचार की व्यूह रचना के लिए योजना के स्तर पर आवश्यक कदम उठाने सम्बन्धी विभिन्न मुद्दों को स्पष्ट किया है। तीसरी दुनिया के देशों में विभिन्न विकास कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने की प्रक्रिया में विकासात्मक संचार की भूमिका के कई पहलू उभरकर सामने आये हैं।

इस सन्दर्भ में इंडोनेशिया में 'सफाई विकास कार्यक्रम' (स्केवेंजर डेवलपमेन्ट प्रोग्राम)को एक प्रकरण अध्ययन की दिशा में महत्वपूर्ण माना गया है। इसका कारण यह है कि इस कार्यक्रम से यह स्पष्टत: सिद्ध होता है कि सावधानी के साथ यदि किसी विकास कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए संचार-व्यूह रचना की जाए तो ऐसा विकास कार्यक्रम अधिक सफल होता है। विकासात्मक संचार द्वारा विकास में योग देने तथा मनुष्य एवं समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है। यह अध्ययन-प्रकरण भारतीय स्थितियों के लिए अधिक प्रासंगिक है।

कई विकासशील देशों में यह स्थिति एक आम बात है कि नदियों का जलप्रवाह या नहरों का प्रवाह प्लास्टिक की थैलियों और गन्दगी के ढेरों से अवरुद्ध कर दिया जाता है। गलियों और मोहल्लों में गन्दगी के ढेर लग जाते हैं किसी भी खाली जगह या पार्क को कचरे के ढेरों से भर दिया जाता है।

इण्डोनेशिया के बड़े शहरों का भी यही हाल रहा है। जहां जगह-जगह गन्दगी के ढेरों या कचरे को जलाने से वे शहर जल और वायु प्रदूषण के शिकार हो गये। कुछ लोगों के समूह ने इस खतरे का एहसास किया और सफाई की अनिवार्यता अनुभव की। इस समस्या को पर्यावरणीय चेतना के बजाय विकास के दृष्टिकोण से देखा गया। यह देखा गया कि कचरे का अधिकांश भाग जो उपयोग में आ सकता है, उसे बर्बाद करने के बजाय पुन: उपयोग योग्य बनाया जाये अर्थात् रिसाईकिल किया जाए। इससे दो फायदे होंगे - एक तो विकास के मार्ग के अवरोध हटेंगे तथा जो बर्बाद हो रहा है, वह उपयोगी बनेगा। विकास की लागत में कमी आयेगी और कुछ चीजें उपयोगिता की सृजित होगी।

लेकिन सफाईकर्ताओं की समस्या यह थी कि वे कानून एवं समाज की दृष्टि में असुरक्षित थे। वे सताये जाने, आर्थिक- निर्भरता एवं शोषण के शिकार थे और बिचौलियों की गिरफ्त में थे। स्थानीय स्तर पर किसी निर्णय, ऋण, शिक्षा, जनसेवा आदि से वंचित थे। विभिन्न संचार माध्यमों में उनकी भूमिका को कभी मान्यता नहीं मिली थी। कुछ लोगों ने सफाईकर्ताओं की जरूरतों और उनके योगदान को समझा। 'सफाई विकास कार्यक्रम' एक विदेश संस्था एवं इंडोनेशिया के गृह विभाग के वित्तीय सहयोग से चलाया गया। 1991 में यह कार्यक्रम जकार्ता, बांडुंग एवं सुराबया नामक नगरों में स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से क्रियान्यित किया जाने लगा।

विभिन्न संचार माध्यमों का उपयोग करते हुए इन संस्थाओं ने सफाईकर्ताओं के कल्याण, उनकी सामाजिक एवं सम्प्रेषण क्षमता बढ़ाने, वेस्ट का प्रबंधन कूरने के लिए उनकी चेतना जागृत करने, रिसाईकलिंग एवं उनकी स्थितियों को सुधारने की एक संचार व्यूह रचना तैयार की। इसके अन्तर्गत राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्तरों पर प्रभाव डालकर परिवर्तन लाने की योजना

बनाई गई। इस बात का प्रयत्न भी किया गया कि इनका कानूनी दर्जा, सामाजिक दर्जा एवं सार्वजनिक छवि को उन्नत किया जाये ताकि इनकी उत्पादकता बड़े। वे बर्बाद समझे जाने वाले कचरे में से कुछ उत्पाद तैयार कर उनका मूल्य उत्पादन में जोड़ सके, उनकी सौदा करने की शक्ति बड़े। स्थानीय निर्णयों में भागीदारी बड़े तथा 'अरबन इन्टीग्रेटेड रिसोर्स रिकवरी सिस्टम' तैयार करने में कोई प्रौद्योगिकी तैयार की जा सके। साथ ही जनता को पर्यावरण के बारे में भी शिक्षित किया जा सके।

इस प्रकार संचार के द्वारा विकास या परिवर्तन की जो व्यूह रचना तैयार की गई उसका लक्ष्य सफाईकर्ताओं के बारे में या उनके लिए न होकर, 'उनके साथ और उनके द्वारा' रखा गया। परिवर्तन-प्रक्रिया सफाईकर्मियों की आबादी से शुरू किए जाने की जरूरत समझी गई। इसके लिए उनका आत्मविश्वास प्रबल करना और उनकी सम्मान प्राप्त करने एवं अपने स्रोत बढ़ाने की योग्यता में इजाफा करना अनिवार्य समझा गया। साथ ही नगरीय आबादी को उनकी कठिनाइयों, जीवनस्तर एवं समाज में उनके योगदान का एहसास करना भी आवश्यक माना गया। इसलिए विकास संचार की एक योजना तैयार की गई। इसके अन्तर्गत कुछ विशेष संचार माध्यम चुने गए।

4.2.1.1 सफाईकर्मियों का स्ट्रीट थियेटर

जब प्रमुख तकनीक और अवधारणा स्पष्ट कर ली गई और स्थानीय समस्याओं को स्थानीय परिवेश में प्रस्तुत करने का कार्य नुक्कड़ में प्रस्तुत करने का कार्य नुक्कड़ नाटकों के द्वारा शुरू हुआ तो अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक क्षेत्र से उनकी जिन्दगी का जुड़ाव होने लगा। सफाईकर्मी एक खामोशी की संस्कृति को जीते थे - समाज से बिलकुल अलग वे जानते थे कि जहां पूरा सामाजिक तन्त्र उनके खिलाफ है, वहां खामोशी एक रास्ता है। लेकिन जब उन्होंने अपने जीवन की दुर्दशा को नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया तो यह उनका समाज से सीधे सम्प्रेषण या संचार की एक कोशिश थी। इसमें स्थानीय स्वयंसेवी संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस दिशा में प्रयत्न आगे जारी रहे और समाज और उनके बीच की खाई कम होने लगी। लोगों की चेतना में वृद्धि हुई।

4.2.1.2 पत्रकारों के लिए कार्यक्रम

संचार की व्यूह रचना का दूसरा कदम उठाने के लिए इन्डोनेशिया के विभिन्न क्षेत्रों से पत्रकारों एवं रेडियो प्रतिनिधियों को एक दिवसीय कार्यशाला में आमंत्रित किया गया। इसमें सफाईकर्मियों के जीवन में कठोर तथ्य प्रस्तुत किये गये कचरे के ढेरों की समस्या, वेस्ट की प्रोसेसिंग, सफाईकर्मियों की अपनी सहाकारी संस्थाओं एवं विद्यालयों आदि की चर्चा की गई। इस प्रकार पत्रकारों और सफाईकर्मियों के बीच एक संवाद कायम हुआ, चर्चाऐं हुई और पत्रकारों के अनुभव बढ़े। इसके बाद समाज में सफाईकर्मियों की भूमिका एवं पर्यावरणीय योगदान पर देश में आलेख समाचार प्रत्रों में प्रकाशित हुए। रेडिया पर वार्ताएं प्रासारित हुई।

4.2.1.3 राजनैतिक संवाद

संगोष्ठियों, कार्यक्रमों आदि के द्वारा राजनीतिज्ञों, अधिकारियों, व्यवसाइयों, दानदाताओं आदि के साथ संवाद कायम करने के प्रयास हुए। इनमें सफाईकर्मियों के बेहतर आर्थिक एवं सामाजिक दर्जे के प्रश्नों पर भी चर्चाऐं हुई।

4.2.1.4 टेलीविजन पर राष्ट्रीय कार्यक्रम

राष्ट्रीय-स्तर पर 13 किश्तों का एक कार्यक्रम तैयार करके प्रसारित किया गया। इनमें सफाईकर्मियों की स्थितियों, उनका समाज के आर्थिक एवं पारिस्थितिकीय जीवन में योगदान आदि को रेखांकित किया गया। जिन स्वयंसेवी संगठनों ने नाटक कार्यक्रमों का शिक्षण दिया उन्होंने ही वह कार्यक्रम तैयार किया। सफाई कर्मियों को स्क्रिप्ट लिखने, निर्देशन एवं अभिनय में शामिल किया गया। इससे कार्यक्रम यथार्थ बना। इससे सफाईकर्मियों की सांस्कृतिक कुशलता बढ़ी। यह चेतना भी आई कि वेस्ट सामग्री को पुन: उपयोगी बनाने या रिसाईकिल करने तथा स्वच्छ पर्यावरण में सफाईकर्मियों की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है।

4.3 विकासात्मक संचार का प्रभाव

इस प्रकार समेकित संचार योजना के कई बेहतर परिणाम सामने आए। सफाईकर्मियों को अपने काम के महत्व का एहसास हुआ। इस उपेक्षित वर्ग की पहुंच स्वयंसेवी संगठनों के सहयोग से संचार कर्मियों या विभिन्न माध्यमों तक हो गई। साथ ही निर्णय लेने वाली आर्थिक एवं सामाजिक संस्थाओं तक भी इनकी आवाज पहुंची। उन्हे अपने समुदाय के बाहर मान्यता मिली। उनमें आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बढ़ा।

दरअसल अब सफाईकर्मी मानसिक अपंग और उपेक्षित नहीं रहे। अखबारों में भी नियमित समाचार आने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि इन्डोनेशिया का 'स्केवेंजर डेवलपमेन्ट प्रोग्राम' गतिशील बन गया। और सफाई एवं सफाईकर्मियों की समस्या के निदान का मार्ग प्रशस्त हो गया। एक अनुकूल विकासात्मक माहौल की रचना होने लगी। अब सफाईकर्मी एक असक्रिय वर्ग नहीं रहा। एक शान्ति सम्पन्न एवं ऐसा वर्ग बन गया जिसे उत्प्रेरित करना सम्भव था। इसमें 'मीडिया डिलीवरी सिस्टम' या नियोजित संचार की अहम भूमिका रही।

4.4 भारतीय अनुभव - साइट

भारत का जनसंख्या का विकास के लिए उपयोग का सबसे बड़ा अनुभव सेटेलाईट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेन्ट (साईट)1975 -76 था। यह एक साल की योजना थी और इसका लक्ष्य 2330 गांवों को छ: समूहों में विभाजित करके विशेष विकास कार्यो का सैटेलाईट द्वारा संचार करना था। इसके तहत छ : राज्यों - आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, राजस्थान और गुजरात के 20 जिलों के इन गांवों का चयन किया गया। कार्यक्रम में ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा-सुधार, अध्यापकों को प्रशिक्षण, कृषि में सुधार, स्वास्थ्य, सफाई, पोषक आहार सम्बन्धी जानकारी, परिवार कल्याण और सम्बन्धी जानकारी और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने के लक्ष्य रखे गये।

कार्यक्रमों का सैटेलाईट टेलीविजन के द्वारा प्रसारण किया गया। कार्यक्रम की परियोजना पूरी होने पर उसका मूल्यांकन किया गया। संचार की शक्ति और उपयोगिता को परखा गया।

परिणाम यह निकला कि टेलीविजन कार्यक्रमों के द्वारा जो विकासात्मक संदेश दिये गये, उनसे ग्रामीण क्षेत्रों में एक जागृति आई। उनकी समझ बढ़ी।

'साईट' एक बहुत बड़ा प्रौद्योगिक दृष्टि से आधुनिक प्रयोग था। विभिन्न मुद्दों पर लोगों को जागृत करके विकास की ओर उन्मुख करना था। भारत- अमेरिका का संचार की उपयोगिता को मापने का यह एक सबसे बड़ा प्रयास था। इस संचार परियोजना के द्वारा विकास योजनाओं सम्बन्धी अनेक जानकारियां एवं समाचार उन क्षेत्रों तक तुरन्त प्रसारित किये गए अन्यथा जो प्रौद्योगिकीय बाधाओं के कारण इन जानकारियों से वंचित रहते।

हम विकासात्मक संचार की विभिन्न परिभाषाओं की चर्चा कर चुके हैं। पिछली इकाइयों में संचार और विकासात्मक जनसंचार या विकासात्मक संचार के बीच भेद करते हुए यह भी बताया जा चुका है कि विकासात्मक जनसंचार एक कला भी है और मानवीय विज्ञान भी। इसके द्वारा विकास योजनाओं को सार्थक और सम्मान बनाने के लिए एक अनुकूल वातावरण की सृष्टि की जाती है। इस प्रकार भारतीय अनुभव ने भी इस तथ्य को पुष्ट किया है कि विकास के मार्ग में प्रबन्धकीय-व्यूह रचना का एक अति महत्वपूर्ण तत्व है - विकासात्मक संचार।

इस प्रकार व्यवहार के स्तर पर विकासात्मक संचार के दर्शन को देखें तो ज्ञात होगा कि यह संचार का तरीका एक उद्देश्यपूर्ण तरीका है। यह सकारात्मक है और कामनाओं या सिद्धान्तों की अपेक्षा यथार्थ या वास्तविक आधार को समझकर बनाया गया है। यह व्यवहारवादी एवं प्रयोगवादी है। यह स्पष्ट कर चुके हैं कि किसी भी विकास योजना का एक निश्चित उद्देश्य होता है। संचार उससे सम्बन्धित सार्वजनिक फायदों या विशेष लाभों एवं जीवनस्तर पर पड़ने वाले प्रभावों की सूचनाऐं देता है। एक जागृति एवं समझ का वातावरण बनाता है।

इन्डोनेशिया एवं भारत की दो विकास योजनाओं के सन्दर्भ में विकासात्मक संचार के सुनियोजित उपयोग के परिणाम भी हम देख चुके हैं। इन्डोनेशिया में सफाईकर्मियों ने अपनी उपस्थिति को दर्ज किया। भारत में सेटैलाईट टेलीविजन ने भी अपना असर दिखाया।

4.5 विकासात्मक संचार के प्रभाव एवं कार्य

विकासात्मक संचार कोई एकाएक उपजी अवधारणा नहीं है। इसका एक इतिहास है जो समय और स्थान के अनुरूप निरन्तरता के साथ स्वाभाविक रूप में उभरा हैं और विकसित हुआ है। इसके प्रभाव एवं उपयोगिता ने ही इसे गति दी है। विकासात्मक संचार का प्रभाव व्यापक होता है। सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय एवं आध्यात्मिक स्तर पर यह अपने प्रभाव का विस्तार करता है। यद्यपि संचार की शक्ति व्यापक और इसकी पैठ गहरी है और इसने समाज परिवर्तन में गहरा योग दिया है। लेकिन संचार के नकारात्मक पहलू भी हैं। जितना उपयोगी है संचार, उतना ही घातक भी। पीत पत्रकारिता, यौन की विकृत भावना से प्रेरित फिल्मस, झूठा प्रचार आदि कई नकारात्मक पहलू भी हैं। लेकिन विकासात्मक संचार का मात्र सकारात्मक लक्ष्य होता है। सामाजिक जीवन में बदलाव आर्थिक विकास आदि की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4.5.1 संचार का प्रभाव

प्रभाव के स्तर पर यह एक उत्प्रेरक का काम करता है। किसी भी विषय पर लोगों में एकमत कायम करने और उन्हें क्रियाशील बनाने का इसका मूल उद्देश्य होता है। गत कुछ दशकों से विकासात्मक संचार के प्रभाव का मूल्यांकन करने एवं अध्ययन करने वाले संचार विशेषज्ञों की राय है कि विकासात्मक संचार का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव मनुष्य के व्यवहार और उसके सोच पर पड़ता है। व्यवहार एवं सोच में निर्दिष्ट दिशा की ओर परिवर्तन लाना ही इसके कारगर प्रभाव का प्रमाण होता है।

दरअसल, संचार एवं सामाजिक प्रक्रिया है और विकासात्मक संचार, विकास एवं सामाजिक जीवन के बदलाव की प्रक्रिया है। जीवन परिवर्तनशील है। समय के साथ संचार प्रौद्योगिकी एवं वैज्ञानिक अनुसंधानों से समाज में निरन्तर बदलाव की प्रक्रिया चलती आई है। आधुनिक जीवन, से तात्पर्य समय के साथ आए परिवर्तनों से जुड़ना है। संचार की भूमिका व्यक्ति को बदली हुई आधुनिक दुनिया से सम्बन्धों करना या जोड़ना है। इसमें वे ही मौलिक तत्व काम करते हैं। संचार के लिए सूचना सा संदेश की सुनियोजित संरचना करना, उचित स्रोत से निकले संदेश को प्रसारित करने के लिए अनुकूल माध्यम को चुनना और इस प्रक्रिया के द्वारा गन्तव्य तक पहुंचने और प्रभाव की सृष्टि करने के मार्ग की बाधाओं को दूर करना आदि प्रमुख बाते हैं। प्रभाव को जानना और मूल्यांकन करना भी जरूरी है ताकि अनुभव के आधार पर यह प्रक्रिया पुष्ट होती रहे।

वास्तव में मानव मस्तिष्क और समाज दोनों मुद्दे जटिल और पेचीदा मुद्दे हैं। अत: मानव मस्तिष्क और व्यवहार, उसकी धारणाओं और विश्वासों, स्तर और परम्पराओं को समझने के साथ-साथ सामाजिक प्रणाली को समझना और यथार्थ की बुनियाद पर संचार की संरचना करना अनिवार्य होता है। जब संचार या विकासात्मक संचार के प्रभावों को देखा गया तो यह ज्ञात हुआ कि तीसरी दुनिया के देशों में संचार के प्रभाव की गति धीमी पाई गई। विकासात्मक संचार कहीं शून्य में क्रियाशील नहीं होते। किन्हीं सामाजिक राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में विकासात्मक संचार के क्रियान्वयन की योजना बनाई जाती है। अत: समाज का ढांचा और उसके अपने मूल्य आदि कई कारक संचार के प्रभाव के तीव्र या धीमे, कम या अधिक प्रभाव के लिए जिम्मेदार होते हैं।

विकासात्मक संचार या संचार की दुनिया में एक क्रान्तिकारी दौर आया है इलेक्ट्रोनिक माध्यमों, कम्प्यूटर, इन्टरनेट आदि ऐसे नये माध्यमों और सूचना प्रौद्योगिकी की क्रान्ति ने जहां संचार को सबल बनाया है वहां भौगोलिक सीमाओं को तोड़कर दुनिया के सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन में भी एक बड़ा परिवर्तन कर दिया है। ऐसे में संचार की भूमिका और दायित्व बड़ा है लेकिन उसका मूल कार्य नहीं है, भले ही विस्तार लिए हुआ हो। व्यक्ति के ज्ञान, प्रवृत्तियों और व्यवहार को अपेक्षित परिवर्तन लाने के लिए बदलना ही संचार का कार्य है।

4.5.2 संचार का कार्य

सभ्यता का पूरा इतिहास सन्देशों के प्रसार और दुख व सुख विभिन्न माध्यमों से आपस में बांटने का इतिहास रहा है। संचार ही वह शक्ति है जो लोगों को एक दूसरे के करीब लाती है। अधिकांशत संचार के नियन्त्रण का बिन्दु स्त्रोत होता है। संचार तभी प्रभावपूर्ण बनता है जबकि

जिस रूप में उसकी स्त्रोत से संरचना की है उसी रूप में वह अर्थपूर्ण ना से प्राप्तकर्ता तक पहुंच जाये।

परम्परागत लोक माध्यम, शिक्षण एवं मनोरंजन प्रभावी साधन रहे। इसका कारण स्त्रोत एवं श्रोता या दर्शक के बीच एक समान स्तर एवं समझ का होना था। संचार के अति आधुनिकतम माध्यमों की व्यापक शक्ति ने भी इसे स्वीकार किया है। गत दशकों में संचार के विकास एवं इसकी शक्ति का विकास योजनाओं को सफल बनाने में उपयोग करते समय परम्परागत खूबियों को आधुनिक माध्यमों में ढालकर विकासात्मक संचार को सबल बनाने की चेष्टाएं की गई है । संचार के कार्यो का क्षेत्र व्यापक है लेकिन विकासात्मक संचार का दायरा एक निश्चित लक्ष्य को लेकर चलना है। संचार के प्रमुख कार्य हैं - 1 सूचना देना, 2 शिक्षित करना और 3 मनोरंजन प्रदान करना।

1. सूचना देना - विकासात्मक संचार को सबसे महत्वपूर्ण काम सूचना देना है। समाचार पत्र हों, रेडियो या टेलीविजन हो या कोई और माध्यम। आमतौर पर लोगों की नजर पर्यावरणीय परिवर्तनों, प्रवृत्तियों एवं विकास के बारे में ज्ञान प्राप्त करने पर टिकी रहती है। वे कब, कहां, क्यों और कैसे विभिन्न घटनाऐं घटती हैं या उनसे सम्बन्धित परिवर्तन होते हैं या ऐसा कुछ होता है जो उनके जीवन को प्रभावित करता है को जानने की जिज्ञासा रखते हैं। सूचनाऐं एक प्रकार से ज्ञान का विटामीन है जो लोगों को ऊर्जा देती हैं। विकास, चाहे जिस क्षेत्र में हो, उसका परोक्ष या अपरोक्ष प्रभाव मनुष्य जीवन पर पड़ता है। इसलिए लोग विकासात्मक संचार से ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त करने को उत्सुक रहते हैं। संचार एक खुराक है और विकासात्मक संचार भूख है। जनता प्रासंगिक सूचनाओं और विचारों को जानने के लिए सदैव तत्पर रहती है।

2. शिक्षित करना - समाज को शिक्षित करना विकासात्मक संचार का प्राण है। तीसरी दुनिया के देशों में विकास की गति धीमी होने का एक कारण विकास कार्यक्रमों के बारे में जनता के बड़े भाग का अनजान रहना है। विकासात्मक संचार ही उन्हें इन कार्यक्रमों की जानकारी एवं शिक्षा देकर जोड़ता है। लोगों को यथार्थ से परिचित करवाना और उनकी दिलचस्पी विकास कार्यो की ओर ले जाना तब तक सम्भव नहीं होता जब तक वे न केवल सूचित ही हों बल्कि शिक्षित भी हों। लोग उस समाज को समझें जिसमें वे रहते हैं। वे समस्याओं और प्राथमिकताओं को जानें और भावी परिवर्तनों के लिए स्वयं को तैयार करें। ये कार्य संचार के द्वारा ही सम्पन्न हों सकते हैं। संचार के द्वारा एक ही ऐसा माहौल बनाए जाने का प्रयास होता है जहां लोग अपने विकास का ज्योतिष पढ़ सकें।

3. मनोरंजन प्रदान करना - संचार कोई आकड़ों या शुष्क सूचनाओं का जाल नहीं केवल विकास की बात करना विकासात्मक संचार नहीं है। यह लोक मनोरंजन एवं सहज ढंग से व्यक्ति के व्यवहार और प्रवृत्तियों का सही दिशा प्रदान करने का प्रयास होता है। यह न मात्र सूचना है न मात्र शिक्षा है और न केवल मनोरंजन। विकासात्मक संचार इनका मिश्रण है जो परिवर्तन की ओर संकेत करता है। विकासात्मक संचार का एक लक्ष्य होता है । उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए जनभागीदारी को प्रेरित करना होता है।

यघपि प्रसंग विकास से हटकर है लेकिन विकासात्मक संचार के कार्यो और प्रभाव को समझने के लिए भारतीय सन्दर्भो में उपयुक्त है। महात्मा गांधी को जनसंचार की दृष्टि से एक सशक्त व्यक्तित्व माना जाता है। उनका एक ही लक्ष्य था भारत को स्वतन्त्र कयना और इसके लिए देश की जनता की सक्रिय भागीदारी पहली जरूरत थी। गांधींजी के संचार के अपने माध्यम थे। उन्होंने देश में संचार के द्वारा जागृति पैदा की। लोगों को सक्रिय बनाकर आजादी के संघर्ष की ओर उन्मुख किया और अंग्रेज भारत छोड़ने को विवश हो गये।

आज भी भारत के सामने आतंकवाद, साम्प्रदायिकता क्षेत्रीयता एवं कट्टरता जैसी भयानक समस्याऐं खड़ी हैं। ऐसे भारत की एकता और शक्ति को गति देने में संचार की भूमिका है जिसे और सुदृढ़ करना आवश्यक है। इसी प्रकार विकास एक बड़ा और सतत् जारी रखा जाने वाला मुद्दा है। विकासात्मक संचार में वह क्षमता है जो जनता की विकास प्रक्रिया में भागीदारी को बढ़ाकर एक सुनियोजित सामाजिक परिवर्तन को दिशा दे सके।

विकासात्मक संचार के प्रभाव एवं कार्यो के सन्दर्भ में कहा गया है कि आर्थिक विकास को ही लेकर चलें तो इसमें एक संगठन की संरचना और पूंजी नियोजन की जरूरत नहीं होती बल्कि किसी भी आर्थिक कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए एक अभियान चलाना भी जरूरी माना गया है। यह अभियान किसी आर्थिक समस्या की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने एवं यह बताने का अभियान होता है कि यदि यह व्यक्ति अपना योग और सहयोग दे तो न केवल वह स्वयं लाभान्यित होगा बल्कि देश के विकास में भी वह एक अप्रध्यक्ष भूमिका निभायेगा। इस प्रकार विकासात्मक संचार एक अहम भूमिका निभाता है। वह एक अभियान है जो निश्चित लक्ष्य तक ले जाता है।

किसी भी प्रकार के आर्थिक या सामाजिक विकास में विकासात्मक संचार प्रक्रिया की मौलिक रूप में तीन भूमिकाऐं होती हैं - 1 विकासात्मक संचार के द्वारा लोगों में यह विचार और भाव जागृत किया जाता है कि परिवर्तन एक अहम जरूरत है। सूचनाओं के द्वारा यह कार्य किया जाता है। क्या परिवर्तन हो सकते है? क्या-क्या निकाला है? किस कार्य को सम्पन्न करने से क्या लाभ है? 2 दूसरा महत्वपूर्ण काम यह है कि किसी भी विकास कार्यक्रम से उत्पन्न परिवर्तनों को लोग स्वीकार करें । इसके लिए लोगों को प्रेरित करना होता है। 3 जब लोग किसी परिवर्तन को स्वीकार कर लेते हैं तो यह तीसरी और सबसे बड़ी जिम्मेदारी विकासात्मक संचार की होती है कि लोगों में परिवर्तन स्वीकार करने के बाद उसके क्रियान्ययन की कुशलता पैदा हो। विकासात्मक संचार के प्रभाव और कार्यो की सफलता का मापदंड किसी भी विकास कार्यक्रम की सफलता है।

4.6 विकासात्मक संचार का महत्व

संचार को समस्त सामाजिक प्रक्रियाओं का आधार माना गया है। समाज चाहे आदिवासी समाज हो या आधुनिक। संचार की प्रौद्योगिकीय क्रान्ति ने समाज में ढांचागत एवं अन्य परिवर्तन किये हैं। दुनिया सिमटी नजर आती है और संस्कृतियों के सदियों के फासले घटने लगे हैं। इस परिवर्तन से लोगों का सोच बदला है। उनकी दृष्टि और नजरिया बदला है। विकसित एवं तीसरी दुनिया के विकासशील देशों के समाजों के लोगों की प्रवृत्तियों एवं व्यवहार को विकासात्मक संचार प्रयत्नों ने वास्तव में बदल डाला है। लोग प्रगतिशील होने लगे है और सक्रिय रूप में पश्चिम और पूर्व के देशों में राष्ट्रीय में योग देने -लगे हैं। किसी भी समाज के सदस्यों में

सूचना का वितरण बहुत सीमा तक परिवर्तन के लिए जनमत की रचना करता है। आधुनिकीकरण एवं राष्ट्रीय विकास में आम भागीदारी बढ़ती है। दरअसल अब विकासात्मक संचार की महत्वपूर्ण भूमिका को सभी स्वीकार करने लगे हैं। यह विकासात्मक संचार का ही चमत्कार है कि लोग विकास की ऊँचाइयां छूने को तत्पर होने लगे हैं।

विकासात्मक संचार को अब परिवर्तन का कारक या एजेन्ट माना जाने लगा है। विकासात्मक संचार ज्ञान के स्थानान्तरण के लिए जरूरी जमीन तैयार करता है। प्रौद्योगिकी एवं अनुभवों को धरातल देता है। परिवर्तन एवं विकास की जड़ों को मजबूत करता है। विकासात्मक संचार के अन्तर्गत विकास पर नजर रखी जाती है और उसकी गति को दर्ज किया जाता है। इस प्रक्रिया में विकास को गतिमान बनाने के निरन्तर प्रयास किए जाते हैं।

4.7 विकासात्मक संचार और भारतीय शोध अध्ययन

स्वतन्त्रता के बाद भारत की स्थिति कृषि, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा आदि विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों में बहुत दयनीय थी। अंग्रेजी के शासनकाल में शोषित और बेहाल था - भारत और बटवारे की त्रासदी ने इसे और अधिक कमजोर कर दिया था। इसलिए भारत के सामने किसी एक क्षेत्र में नहीं बल्कि हर क्षेत्र में विकास करने की चुनौतियां थी। पंचवर्षीय योजनाऐं बनी। प्राथमिकताएं तय हुई और देश के नव-निर्माण का एक अभियान चला।

1964 में विकास कार्यों के सन्दर्भ में एक सर्वेक्षण हुआ। इसका लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में चल रही विभिन्न विकास कार्यक्रमों के बारे में जनचेतना का अन्दाज लगाना था। इस सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि अधिकांश लोगों को सरकार द्वारा चलाये जा रहे एक या दो विकास कार्यक्रमों की जानकारी थी। कुछ लोगों को इन कार्यक्रमों के बारे में अधूरा ज्ञान था। लेकिन बहुसंख्यक लोग ऐसे थे जो विकास कार्यक्रमों को सरकारी कार्यक्रम मानते थे। लक्ष्मण राव 1944 ने दो भारतीय गांवों के बारे में अध्ययन किया है। ये दोनों गांव दक्षिण भारत में थे। ये एक दूसरे से भिन्न थे। एक गांव में उद्योग लगने की प्रक्रिया चल रही थी और दूसरा गांव कृषि अर्थव्यवस्था की पुरानी स्थिति में ही था। इन दोनों गांवों में आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विकास में संचार की भूमिका का अध्ययन किया गया। साथ ही आर्थिक, सामाजिक एवं सामुदायिक विकास पर संचार के प्रभाव का भी अध्ययन किया गया।

उस समय विकासात्मक संचारु की विकास में भूमिका के बारे में बहुत अधिक परिकल्पना नहीं थी। फिर भी अब अनुभव सामने आये कि संचार से व्यक्ति की अपना जीवनयापन करने के वैकल्पिक मार्ग अपनाने में सहायता मिलती है। उसकी परिवार की आर्थिक दशा को बेहतर बनाने में भी सहायता प्राप्त होती है। संचार से साक्षरता को भी बढ़ावा मिलता है। परम्परागत सोच और ज्ञान बदलता है। सरकारी विकास कार्यक्रमों के बारे में सूचनाऐं मिलती हैं।

कुछ लोगों ने ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, स्वास्थ्य, साक्षरता एवं परिवार कल्याण संबंधी व्यवहार एवं आदतों के बार में अध्ययन किया। ज्ञात हुआ कि रेडियो फार्म कार्यक्रमों का ग्रामीण सोच पर गहरा असर हुआ। विकास कार्यक्रमों के लगभग दो दशक बाद कुछ गांवों में एक अध्ययन और किया गया। इस अध्ययन में राजनीति, जाति, धर्म आदि के बारे में लोगों की धारणाओं एवं संचार के प्रभाव को देखना था। यह नतीजा सामने आया कि पढ़े-लिखे ग्रामीण संचार के बारे में जागृत थे। वे इसके प्रभाव को भी उपयोगी मानते थे। लेकिन अधिकांश अनपढ़

लोगों को इस बारे में कोई ज्ञान नहीं था। नगरों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में सूचनाओं की पहुंच बहुत ही कम पाई गई और लोगों के विचार सभी मुद्दों पर एक परम्परागत सोच में ढले हुए थे।

लेकिन परिवर्तन की प्रक्रिया अनेक कारकों पर निर्भर करती है। भारतीय आजादी और विकास के सन्दर्भ में भारतीय प्रयासों ने लगभग अर्द्धसदी का सफर तय किया है और विकास कार्यक्रमों की कमियों, सफलता और असफलता को समझा और परखा है। संचार प्रौद्योगिकी की क्रान्ति, संचार के क्षेत्र में विकास ने इसे पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली बनाया है। भारतीय अनुभव ने भी संचार और विकास को गतिशील बनाने समाज को सम्पूर्ण रूप से बदलने की प्रक्रिया में विकासात्मक संचार के प्रभाव इसके कार्यो एवं महत्व को अंगीकार किया है। भारत ही नहीं बल्कि तीसरी दुनिया के देशों में जहां विकास की मात्रा में मंजिले अभी भी दूर है विकासात्मक संचार को सम्पूर्ण विकास प्रक्रिया में एक अति उपयोगी तत्व के रूप में अपनाया है।

यघपि 1958 में भारत में विकास प्रयत्न अपनी आरम्भिक अवस्था में थे और बहुत सी कमियों के बावजूद कार्यक्रम लागू किए गए थे। लेकिन उस समय कोलम्बिया विश्वविद्यालय में विकासात्मक संचार की अवधारणा को लेकर एक बड़ी शोध परियोजना पर काम शुरू हुआ। लर्नर नामक संचार विशेषज्ञ ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किये और वे कई नए निष्कर्षो पर पहुँचे। उन्होंने कहा कि शहरीकरण के कई नुकसान हैं लेकिन इससे लोगों में साक्षरता और समझ बढ़ती है तथा वे विभिन्न संचार माध्यमों के बारे में अवगत होने लगते हैं। साक्षरता से आर्थिक अवसरों एवं विकास का मार्ग व्यापक रूप धारण करता है। लोगों की राजनीति में भागीदारी बढ़ती है।

उन्होंने यह भी नतीजा निकाला कि संचार लोगों के समक्ष नए विचार और नए विकास प्रस्तुत करता है जिससे आम लोगों की क्षमता में वृद्धि एवं सक्रियता आती है जो अन्तत : विकास को प्रोत्साहन देती है । उनका मत है कि यह समाज के विकास में भागीदारी, संचार पर निर्भर है। क्योंकि जहां जनता में साक्षरता है, दूसरों में उधार लिए अनुभवों का लाभ उठाने के लिए उनमें उत्साह और लगन है तो वह समाज आगे बढ़ेगा। इस प्रकार विकास में द्वारा संचार से परिवर्तन की प्रक्रिया ऊर्जावान बनती है।

रोजर्स नामक संचार विशेषज्ञ ने इसके बाद अमेरिका के अलावा तीसरी दुनिया के देशों में संचार की भूमिका पर शोध एवं अध्ययन किया। उसने नवीनीकरण की बात कही जहां एक व्यक्ति को नया विचार मिलने पर वह उसे अनुभूत करता है। उसने निष्कर्ष निकाला कि जब व्यक्ति जीवन में नवीनीकरण को अंगीकार करने लगे तो इस प्रक्रिया से नवीनीकरण पूरे समाज का अंग बन जाता है। जब समाज के अधिकांश लोग नए विचारों को ग्रहण करके उसी के अनुरूप कार्य करने लगते हैं तो वह विचार समाज का अपना विचार बन जाता है। पाई नामक विशेषज्ञ ने राजनैतिक आधुनिकीकरण के बारे में अध्ययन करके इस पर अपने विचार रखे। इनके बाद विल्बर स्क्रेम ने विकासात्मक संचार की अवधारणा को आगे बढाया। उसने कहा कि संचार लोगों को तेजी से अपनी जरूरतों को समझने एवं उनके समक्ष उपस्थित अवसरों का लाभ उठाने की दिशा मे तत्पर करता है। इससे वे विकास से जुड़ते है और नई दिशाओं की ओर सहज रूप में बढ़ते हैं। स्क्रेम तो विकासात्मक संचार और अर्थव्यवस्था को ही राष्ट्रीय विकास के सबसे बड़े मुद्दे मानता है। संचार लोगों के व्यवहार और प्रवृत्तियों को बदलता है तथा विकास के लिए उपयुक्त मार्ग प्रशस्त करता है।

इसके बाद गत कुछ दशकों में निरन्तर कई गोष्ठियां, कार्यशालाऐ शोध एवं चर्चाऐं विकासात्मक संचार के महत्व एवं प्रभाव के बारे में आयोजित होती रही हैं। आखिर यह बात विश्वस्तर पर स्वीकार कर ली गई है और अनुभव किया गया है कि विकासात्मक संचार एक नए सूचना युग, नये आर्थिक परिवेश और विकास प्रक्रिया को गतिमय रखने वाले युग की संरचना करने में समर्थ है। इससे समाज को सबल बनाने में जनभागीदारी बढ़ती है। जनमत बनता है। आखिर समाज का कल्याण और विकास ही तो आदमी का कल्याण और विकास है। विकास और संस्कृति को नए आयाम देने की भूमिका की उपगोगिता एवं महत्व अब किसी विवाद में नहीं है। अनेक अनुभवों एवं अध्ययनों में विकास को ऊर्जावान एवं सक्षम बनाने के लिए इसकी अहमियत को अंगीकार किया है।

4.8 विकासात्मक संचार का भविष्य

विकासात्मक संचार किसके लिए और क्यों? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका निश्चयात्मक उत्तर नीति-निर्धारकों एवं विकासात्मक संचार की व्यूह रचना करने वालों को तीसरी दुनिया के देशों सहित भारत में देना है। कई गोष्ठियों, सभाओं एवं अवसरों पर जोर देकर विकासात्मक संचार के महत्व को तो माना गया है लेकिन इसके क्रियान्वयन के स्तर पर अधिकांश तीसरी दुनिया के देशों में अधिक जोर नहीं दिया गया है। यथार्थ के स्तर पर विकासात्मक संचार पीछे है।

भारत को देखें तो यह एक निराशाजनक तथ्य है कि संचार सेवाऐं केन्द्रित हैं और इनका जनतंत्रीकरण सीमित है। यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि विश्वभर में विकास को गतिमान करने में विकासात्मक संचार की भूमिका और प्रभाव को स्वीकार किये जाने के बावजूद तीसरी दुनिया के देशों में विकास प्रणाली से विकासात्मक संचार समेकित (इन्टीग्रेटेड)नहीं है। यह बात विकासशील देश महसूस मात्र करते हैं। कई प्रस्ताव पारित होते हैं। गोष्ठियाँ होती हैं। कार्यशील दल बनते है, सिफारिशें भी की जाती है कि विकासात्मक संचार का विकास कार्यक्रमों के बारे में लोगों को शिक्षित करने, विकास को विस्तार देने एवं वांछित विकास लक्ष्य प्राप्त करने में उपयोग हो। लेकिन सिद्धान्त को स्वीकार करना एक बात है और उसे व्यवहार में ढालना और क्रियान्यित करना दूसरी बात है। इन दो बातों के बीच आज भी बड़ा फासला है।

नगरीय आबादी में कुछ विशेष दर्जा प्राप्त किए हुए कुछ लोग हैं। कुछ लोग पश्चिमी जीवन शैली पर आसक्त हैं उसके पिछलग्गू हैं। इनके लिए संचार की संरचना होती है जबकि यथार्थ में संचार का दायरा विस्तृत करने, इसका जनतान्त्रिकरण करके उन लोगों तक पहुँचाने की जरूरत है जो वंचित हैं - विकास की धारा से, जो गरीब हैं, अशिक्षित हैं और पिछड़ेपन के शिकार हैं। दरअसल संचार प्रौद्योगिकी की क्रान्ति के बाद एक नया परिदृश्य उभरा है। संचार मात्र मनोरंजन की वस्तु बन गया है और धन कमाने की मशीन हो गया है। सामाजिक विकास और समाज का उत्थान एवं विकास गौण हो गए हैं। भारतीय आकाश में इलेक्ट्रोनिक मीडिया की धूम मच गई है और सरकारी माध्यम भी उनमें प्रतिस्पर्धा करके अपना अस्तित्व कायम रखने में संलग्न है। व्यावसायिक विज्ञापनों की चमक-दमक और अधिक लाभ कमाने की होड़ मची हुई है। 'साईट' या ऐसे ही टेलीविजन कार्यक्रम जो विकासात्मक संचार की अवधारणा से चले या रेडियो की विकासात्मक संचार में प्रारम्भिक किन्तु अत्यन्त सशक्त भूमिका आदि अब पृष्ठभूमि में चले

गये हैं। रेडियो एक सम्मानीय संचार साधन के रूप में आज भी महत्वपूर्ण पहचान रखता है, लेकिन उसकी स्थिति संतोषजनक नहीं है। मुद्रित माध्यम (समाचारपत्र पत्रिकाएं)भी व्यवसायीकरण की दौड में शामिल हो गये हैं। विदेशी मीडिया धीरे- धीरे अपना व्यापक जाल बिछाता जा रहा है। वास्तव में विकासात्मक संचार एक साधन है, टूल या औजार है। यह एक प्रौद्योगिकी एवं तकनीक है। इसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करने की भारी सम्भावनाऐ एवं क्षमता है। यह संस्थागत, प्रौद्योगिकीय विशेषज्ञता, स्रोतों, राष्ट्रीय एकता रख विकास को सबल बनाने में सहयोगी की भूमिका निभाने में सक्षम है। जनता के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के प्रयासों को गति देने में समर्थ है। भारत जैसे भाषाई, क्षेत्रीय, सांस्कृतिक, भौगोलिक, रस्मों-रिवाजों, परम्पराओं आदि की विविधता वाले देश को एकता के सूत्रों में बांधे रखने एवं सुदृढ़ बनाने में भी विकासात्मक संचार अपनी अहम भूमिका निभा सकता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने संचार की शक्ति को पहचाना और भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में इसका उपयोग किया। भारतीय आजादी के लिए मर मिटने वाले महान नेता सबसे बड़े संचारकर्ता थे। उन्होंने समय के अनुरूप संचार की व्यूह रचना की।

आज स्थितियां बदल गई हैं और विकास एवं राष्ट्रीय एकता महत्वपूर्ण प्रश्न हैं? लेकिन नई सूचना प्रौद्योगिकी की क्रान्ति ने आज के नेतृत्व को आजादी के संघर्ष के समय को संचार साधनों से कई गुणा शक्तिशाली साधन सौंप दिये है। इसके बावजूद भारत में संचार की गति धीमी है। पूरी क्षमता का उपयोग नहीं है। हालांकि कहीं-कहीं सरकार के प्रयत्न जरूर हैं। आज भी विकासात्मक संचार का दायरा व्यापक बनाने, जनतंत्रीकरण करने एवं इसको स्थानीय स्तर पर अधिक सुदृढ़ बनाने की जरूरत है।

यदि पंचवर्षीय योजनाओं के मसौदों को देखें तो विकास कार्यक्रमों को विकासात्मक संचार का सुदृढ़ आधार प्रदान करने की बात और भावना इसमें निश्चात्मक रूप में दोहराई गई है । सातवीं पंचवर्षीय योजना में भी सरकार ने अपनी मंशा को दोहराया है। संचार से सम्बन्धित योजना का सबसे बड़ा जोर लोगों की चेतना के स्तर को बढ़ाना, उनके सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन को समृद्ध करना और उन्हें बेहतर जा से जागरूक नागरिक बनाना है। संचार, विकास, कार्यक्रमों की प्रगति को आगे ले जाने में सहायक हो और लोगों के प्रति संवेदनशील हो, उन्हें देश-विदेश के महत्वपूर्ण घटनाक्रमों की जानकारी दे। मनोरंजन के कार्यक्रमों के अलावा युवाओं, महिलाओं, बच्चों एवं कमजोर वर्गो के विकास के लिए खास कार्यक्रम बनाये जाए। इसके अलावा संचार का यह कार्य भी होगा कि यह एक शिक्षा के प्रसार का माध्यम बने। विभिन्न वर्गो के लोगों के बीच जो सूचना सम्बन्धी फासला है उसे कम करने का प्रयास करेगा। यह योजना मसविदा विकास के सम्बबंधित संचार के लक्ष्यों का खुलासा करता है। यह तो सच है कि भारत सरकार ने विकासात्मक संचार की उपयोगिता, क्षमता और लोगों को एकजुट रखने एवं विघटन की सभी गतिविधियों को प्रोत्साहन देने में भी उसकी भूमिका को स्वीकार किया है। लेकिन क्रियान्ययन के स्तर पर बहुत कुछ करना अभी शेष है। विकासात्मक संचार के मार्ग में बाधाऐं है लेकिन इसकी उपयोगिता एवं प्रभाव को देखते हुए आज नहीं तो कल इसकी महत्ता और अधिक बढेगी।

4.9 सारांश

संचार की सम्पूर्ण प्रक्रिया में विकासात्मक संचार प्रकरण अध्ययन से यह स्पष्ट है कि तीसरी दुनिया के देशों में विकास अनुभवों से कई सबक लिए गये हैं। विकासात्मक संचार के महत्व प्रभाव कार्यो एवं क्षमता को स्वीकार भी किया गया है और यह माना गया है कि विकासात्मक संचार लोगों की परिवर्तन की जरूरतों के बारे में उन्हें सूचित करने क्या परिवर्तन हो रहे है यह बताने जीवन को बेहतर बनाने वाले विकल्पों नये विचारों और उन्हें अपनाने आदि के प्रति सचेत करता है और उन्हें विकास के लाभों के प्रति प्रोत्साहित कर उनकी भागीदारी को विकास की ओर मोड़ने में मदद करता है। विकासात्मक संचार आम आदमी की जरूरत है। यह एक प्रभावपूर्ण उत्प्रेरक है? विकास और आधुनिकीकरण का पर्याय है। यह सब जानते हैं कि विकास के लक्ष्य पाये बिना जनभागीदारी सम्भव नही और इस भागीदार का आधार विकासात्मक संचार है जो उत्प्रेरक है।

विकासात्मक संचार जीवन को बेहतर बनाने ऊंचा उठाने परिवर्तन लाने की इच्छा जगाने इसके लिए क्रियाशील होने और लोगों को इस दिशा में बढने का भाव जगाने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए विकासात्मक संचार को जनकल्याण से एक मिशन माना गया है । यह विकास प्रक्रिया की गहराई में झांकने के लिए एक दृष्टि देता है। आज भी इसमें भारी है और तीसरी दुनिया के लिए संचार एक बेहतर भविष्य को अपने भीतर समेटे हुए है।

4.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. इन्डोनेशिया में विकासात्मक संचार का अनुभव क्या रहा? विश्लेषण कीजिए।
2. भारत में 'साइट ' कार्यक्रम के बारे में विस्तार से समझाइए?
3. 'विकासात्मक संचार की विकास प्रक्रिया में अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। इसे रेखांकित कीजिए।
4. विकास के लिए विकासात्मक संचार की भूमिका को इतना महत्वपूर्ण क्यों माना गया है? व्याख्या कीजिए।
5. विकासात्मक संचार के बारे में भारतीय सन्दर्भ में हुए शोध अध्ययनों का विवरण दीजिए।
6. विकासात्मक संचार और संचार में क्या भेद है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
7. विकासात्मक संचार की तीसरी दुनिया के देशों में क्या भूमिका हो सकती है? विस्तार से उत्तर दीजिए।
8. विकासात्मक संचार के भविष्य के बारे में एक आलोचनात्मक लेख लिखिए।

4.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. Dr Baldevraj Gupta (1997): Mass communication and Development, Vishwavidyalaya Prakashan, Varanasi.

2. Jan. R. Hakamuher, Fay Ac De Jonge and P.P Singh (1998): Principles and functions of Mass Communication: Anmol Publications Pvt Ltd., New Delhi.
3. Kuspuswamy, B (1976), communication and social Development in India: Sterling Publishers, New Delhi.
4. Binod C. Agrawal, Slite Social Evalution: Result, Experiences and Implications, SAC, Ahmedabad, 1981.

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों की सूची

	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि
1.	स्नातक उपाधि प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
2.	भोजन एवं पोषण में सर्टिफिकेट	6 माह
3.	कम्प्यूटर ज्ञान एवं प्रशिक्षण का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
4.	सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटिंग	6 माह
5.	पंचायती राज प्रोजेक्ट में प्रमाण-पत्र	6 माह
6.	संस्कृति एवं पर्यटन में प्रमाण-पत्र	6 माह
7.	महिलाओं में वैद्यानिक बोध में प्रमाण-पत्र	6 माह
8.	राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति में प्रमाण-पत्र	6 माह
9.	बी.ए.एफ./बी.सी.एफ. (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम)	1 वर्ष
10.	एम.ए.(अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, हिन्दी)	2 वर्ष
11.	एम.बी.ए.	3 वर्ष
12.	पी.जी.डी.एच.आर.एम.	1 वर्ष
13.	पी.जी.डी.एफ.एम.	1 वर्ष
14.	पी.जी.डी.एम.एम.	1 वर्ष
15.	पी.जी.डी.एल.एल.	1 वर्ष
16.	टी.एच.एम.	1 वर्ष
17.	डी.एन.एच.ई.	1 वर्ष
18.	डी.सी.ओ.	1 वर्ष
19.	डी.एल.एस.	1 वर्ष
20.	डी.सी.सी.टी.	18 माह
21.	बी.जे.(एम.सी.)	1 वर्ष
22.	एम.जे.(एम.सी.)	2 वर्ष
23.	बी.लिब.	1 वर्ष
24.	पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	1 वर्ष
25.	बी.एड.	2 वर्ष
26.	पी.एच.डी.	3 वर्ष
27.	पी.जी.डी.ई.एस.डी.	1 वर्ष